यात्रा नव्वाणु करिये रैवतगिरि

गिरनार के पाँच मुख्य चैत्यवंदन

१. तलेटी में आदिनाथ जिनालय का प्रथम चैत्यवंदन

२. जयतलेटी का दुसरा चैत्यवंदन

४. मुख्य जिनालय के पीछे आदिनाथ भगवान का चौथा चैत्यवंदन

३. मूलनायक नेमिनाथ दादा का तीसरा चैत्यवंदन

५. अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान का पाँचवा चैत्यवंदन

सहसावन के रास्ते से ऊपर चढ़ते समय तलेटी में आदिनाथ जिनालय, जयतलेटी का चैत्यवंदन करके, दीक्षा कल्याणक की देहरी, केवलज्ञान कल्याणक की देहरी तथा समवसरण मंदिर ऐसे तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक का तीन चैत्यवंदन करना....

॥ बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नमः ॥

यात्रा नव्वाणु करिये रैवतगिरि

● संकलन ●

शासनप्रभावक युगप्रधान आचार्यसम
प.पू.पं. **श्री चन्द्रशेखरविजयजी महाराज साहेब** के शिष्य
प.पू.आ. **श्री धर्मरक्षितसूरीश्वरजी महाराज साहेब** के शिष्य
प.पू.आ. **श्री हेमवल्लभसूरीश्वरजी महाराज साहेब**

● प्रकाशक ●

गिरनार महातीर्थविकास समिति
C/o. गौरवशाली गिरनारदर्शन धर्मशाला,
शिवनिकेतन के पास, मीनराज स्कुल के सामने, रुपायतन रोड,
भवनाथ तलेटी, जूनागढ़ - 362001.
फोन : 0285-2657099/199, मो. : 9409685999
E-mail : girnarbhakti@gmail.com
Web : www.girnarbhakti.com • www.girnarmahatirth.org
www.girnarjaintirth.com • www.girnardarshan.com

• प्राप्ति स्थान •

गौरवशाली गिरनारदर्शन धर्मशाला
रुपायतन रोड, मीनराज स्कुल के सामने, भवनाथ तलेटी, जूनागढ़-362001.
फोन : 0285-2657099/199, मो. : 9409685999

श्री आदिनाथ जैन मंदिर, चिकपेट, बेंगलोर, फोन : 079-22873678

विक्रम गुरुजी
C/o. श्री संभवनाथ जैन मंदिर, वी.वी. पुरम, बेंगलोर,
मो. : 9986985995

अशोकभाई (कोल्हापुर)
C/o. भाग्यलक्ष्मी मेटल्स, 563, सी. वार्ड, आजाद गल्ली,
कोल्हापुर - 416002, मो. : 9158771108.

समकित ग्रुप - खुशालभाई
जवाहर नगर, गोरेगांव (मुंबई) मो. : 9821327388, 9820121195.

भगीरथ इलेक्ट्रोनीक्स
25-27, बी-जादव चेम्बर्स, सेल्स इन्डीया के पीछे, आश्रम रोड,
अहमदाबाद, फोन : 079-27546238.
मो. : 9825088991 (भगीरथभाई)

वर्धमान संस्कारधाम
भवानी कृपा बिल्डींग, 1ला माला, गिरगाम चर्च रोड, चर्नी रोड,
ओपेरा हाउस, मुंबई - 400 004. फोन : 022-23680974

-: सौजन्य :-

|| श्री बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नमः ||
|| सिद्धांत महोदधि परम पूज्य आचार्य
श्री प्रेमसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ||

सूरिप्रेम स्वर्गारोहण अर्धशताब्दी त्याग-ब्रह्म वर्ष

के तत्त्वावधान में करीब 600 आराधकों के साथ
बालब्रह्मचारी **श्री नेमिनाथ भगवान** समेत अनंत तीर्थंकरों के
दीक्षा, केवलज्ञान एवं **मोक्ष कल्याणक** से पावन बनी हुई

**श्री गिरनार महातीर्थ की पुण्यभूमि में
ग्रीष्मकालीन श्री सहसावन की अभूतपूर्व ९९ यात्रा
के आयोजक (APRIL-MAY 2018)**

श्री समस्त महाराष्ट्र-कर्णाटक जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ एवं श्री गिरनार भक्ति परिवार

• नव्वाणु शुभारंभ •	• नव्वाणु माला •	• नव्वाणु पूर्णाहुति •
वैशाख सुद ३,	प्र. ज्येष्ठ सुद १३,	प्र. ज्येष्ठ वद ६,
दि. **18.4.2018**	दि. **27.5.2018**	दि. **5.6.2018**

SAHASAVAN

The Heart of Girnar

प्र स्ता व ना

श्री चतुर्विध संघ के शुभ आशीर्वाद से प.पू.आ.देव **धर्मरक्षितसूरीश्वरजी म.सा.** एवं प.पू.आ.देव **हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.** के तपोमय संकल्प और प्रयत्नों से गिरनार तीर्थ की महिमा की जानकारी समस्त भारत के संघों में धीरे-धीरे फैल रही है। पूज्यश्री की प्रेरणा से हमारे श्री महाराष्ट्र एवं कर्णाटक के कई शहरों में **''गिरनार की भावयात्रा''** हुई।

इस शुभ कार्य की शुरुआत कोल्हापुर में हुई एवं आगे बढ़ते हुए पेठवडगांव, बेलगाम, निपाणी, इस्लामपूर, अहमदनगर, आकोला, दावणगेरे, चित्रदुर्गा, बारामती, बेंगलोर में चिकपेट, वि.वि.पुरम्, चामराजपेट, इटा सोसाइटी, केन्टोनमेन्ट, अक्कीपेट, राजाजीनगर, जयनगर एवं मैसुर, टुमकुर, अरसीकेरे, गोकाक, हावेरी, राणीबेन्नूर, बिजापुर,

सातारा, हुबली, कोलार, के.जी.एफ., कराड, पूणे, जलगांव, बल्लारी, नागपुर आदि श्री संघों में भावयात्राओं का आयोजन हुआ एवं **वि.सं. 2074 की ग्रीष्मकालीन 99** का सामुहिक रुप से आयोजन करने का निर्णय श्री समस्त महाराष्ट्र-कर्णाटक श्वे. मू.पू. संघ के तत्त्वावधान में लिया गया।

गिरनार तीर्थ की यशोगाथा चारों दिशाओं में फैले इस हेतु पिछले **9** वर्ष में कई चातुर्मास, नवपद की ओलीजी, नव्वाणु का आयोजन सामुहिक रुप से ही किया गया था।

99 लाभार्थीओं की ओर से आयोजित **2018** की ग्रीष्मकालिन **99** की आमंत्रण पत्रिका स्वरुप इस पुस्तक **''यात्रा नव्वाणु करिए रैवतगिरि''** का प्रकाशन किया जा रहा हैं।

इस पुस्तक में गिरनार की संपूर्ण यात्राविधि, **99** यात्रा विधि, तीर्थ का इतिहास, गिरनार एवं नेमिनाथ भगवान के प्राचीन एवं नूतन स्तवन एवं **24** भगवान के स्तवन, चैत्यवंदन, थोय आदि का समावेश

किया गया हैं।

यह पुस्तक सभी भक्तों के लिये लाभकारी बने यही शुभ भावना के साथ इस पुस्तक का प्रकाशन करते हुए हम अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। **जय गिरनार ! जय नेमिनाथ !**

• विनित •

श्री समस्त महाराष्ट्र- कर्णाटक श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ एवम् श्री गिरनार भक्ति परिवार

श्री समस्त महाराष्ट्र- कर्णाटक श्वे. मू. पू. जैन संघ के अन्तर्गत कोल्हापुर, बेंगलोर, पेठवडगांव, बेलगाम, निपाणी, इस्लामपूर, शिराला, ताकारी, अहमदनगर, आकोला, दावणगेरे, चित्रदुर्गा, बारामती, मैसुर, टुमकुर, अरसीकेरे, गोकाक, हावेरी, राणीबेन्नूर, बिजापूर, सातारा, हुबली, कोलार, के.जी.एफ., कराड, पूणे, जलगांव, बल्लारी, नागपूर आदि श्री संघ।

• दिव्याशिषदाता •

प.पू.आ.भ. **भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा.**

प.पू.आ.भ. **हिमांशुसूरीश्वरजी म.सा.**

प.पू.पं. **चन्द्रशेखरविजयजी म.सा.**

• शुभाशिष •

सुविशाल गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.

श्रीमद् विजय जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.

• मंगल मुहूर्त प्रदाता •

प.पू. उपाध्याय **विमलसेनविजयजी म.सा.**

• पावन निश्रा •

युगप्रधान आचार्यसम प.पू. पंन्यास प्रवर

चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के सुशिष्य

प.पू.आ.देव **धर्मरक्षितसूरीश्वरजी म.सा.**

प.पू.आ.देव **हेमवल्लभसूरीश्वरजी म.सा.** एवं

प.पू. मुनिराज **दिव्यपद्मविजयजी म.सा.** आदिठाणा एवम्

रामसूरि (डहेलावाला) समुदाय के वर्तमान गच्छाधिपति

प.पू.आ.भ. **श्रीमद् विजय अभयदेवसूरीश्वरजी म.सा.** की

आज्ञानुवर्तिनी प.पू.सा. **श्री शीलपूर्णाश्रीजी म.सा.**

की सुशिष्या प.पू.सा. **श्री शासनरक्षिताश्रीजी म.सा.** आदिठाणा

श्री सहसावन कल्याणक भूमि (गिरनार) की ग्रीष्मकालीन नव्वाणु यात्रा के लाभार्थीयों की नामावली

❖ मुख्य लाभार्थी ❖

- श्रीमती विजयाबेन सौभागचंदजी सावडिया, नागपुर-कुठियाना
- श्रीमती रजनीबेन रश्मिभाई जयंतिलाल कंपाणी, मुंबई-मांगरोल (सौराष्ट्र)

❖ कोल्हापुर ❖

- श्रीमती लक्ष्मीबाई शिवलालजी साकलचंदजी रामसीणा, सिलदर
- शा. शांतिलालजी वीरचंदजी रामसीणा, पुनावा
- श्रीमती जरावीबाई वरदीचंदजी हंसाजी खिंवेसरा, थुर
- शा. तेजमलजी ताराजी निम्बजीया, मोहब्बतनगर
- श्रीमती धनीबाई गेमराजजी खुमाजी कटारिया, मोहब्बतनगर
- श्रीमती झुमरबेन रमेशकुमारजी राठौड, कालंद्री
- शा. ललितकुमारजी थानमलजी गुंदेशा, थुर

- श्रीमती कमलाबाई मोटमलजी गुंदेशा, थुर
- शा. छोगालालजी भुभाजी दरलेशा, मांडोलीनगर
- स्व. श्रीमती ललितादेवी जवाहरलालजी गांधी, खानपुर
- शा. अचलचंदजी हेमचंदजी परमार, कालंद्री
- शा. पोपटलालजी भबुतमलजी दरलेशा, कुंदनपुर
- शा. जीवराजजी साकलचंदजी राठौड, मोहब्बतनगर
- शा. सुभाषजी छोगालालजी निम्बजीया, मोहब्बतनगर
- शा. पुनमचंदजी मगाजी साकरिया, थुर
- संघवी श्रीमती शांतिबाई चंदनमलजी रायगांधी, चांदुर
- शा. धनराजजी साकलचंदजी बामणीया, चांदुर
- मातुश्री सुनंदाबेन अंबालालजी राठौड, वलदरा
- श्रीमती लीलाबाई रिखबचंदजी संघवी अंबा चौहान, बावली
- भक्ति ग्रुप

❖ पेठवडगाँव ❖

- शा. देवीचंदजी अमरचंदजी राठौड, फूंगणी
- शा. सुरेशकुमारजी देवीचंदजी राठौड, फूंगणी
- शा. शांतिलालजी अमरचंदजी राठौड, फूंगणी

कराड

- श्रीमती जीवीबाई छगनलालजी ताराचंदजी छाजेड, आहोर
- तिलेसरा मुथा घेवरचंदजी चंपालालजी परिवार, आहोर
- श्रीमती कमलाबेन मणीलालजी साकरिया, थुर
- शा. सुभाष वाडीलाल शाह कमलवाडी परिवार

पुणे

- शा. प्रकाशजी पुखराजजी ओसवाल धुमावत, पोसालिया
- शा. प्रविणभाई त्र्यम्बकभाई मेहता
- शा. आयुषकुमार कांतिलालजी जैन, सिलदर
- श्रीमती लिलाबेन लालचंदजी निम्बजीया, कालंद्री
- मातुश्री संघवी मदनबेन सोनराजजी कटारिया, (घी वाला) धाणसा
- श्रीमती धापुबाई चुन्नीलालजी वीरचंदजी गुंदेशा
- शा. विलासजी ओंकारमलजी साकरिया, मेरमांडवाडा
- श्रीमती कन्हैयाबाई बाबुलालजी जेठमलजी पोरवाल
- प.पू. मु.राजरक्षित वि. म.सा की प्रेरणा से भाविकभाई शाह
- शा. नलिनभाई जीवतलाल प्रतापसी दलाल परिवार
- संघवी प्रकाशजी रिखबचंदजी नानेशा, मोहब्बतनगर
- शा. कन्हैयालाल मुकनदास बोगावत, भिगवान

- शा. दिनेशकुमारजी इंदरचंदजी गांधी, सिरोही
- श्रीमती चंद्रिकाबेन हरकचंदजी गांगर
- श्रीमती विजयाबेन जयंतिलालजी कोठारी, शिवगंज
- श्रीमती अंजनाबेन सुरेशजी बामणिया, सिलदर
- श्रीमती निर्मलादेवी प्रमोदजी ललवाणी
- संघवी श्रीमती टीपूबाई रत्नाजी राठौड़

मुंबई

- कंपाणी परिवार (९ नाम)
- अर्हम् भक्ति परिवार
- साधर्मिक भाई
- शा. रिखबचंदजी गणेशमलजी भंडारी, थलवाड
- श्रीमती भारतीबेन सुरेशचंदजी सामझीवोहरा, चेम्बूर
- एल.बी.सी. गोल्ड , भायखला
- श्रीमती हंसाबेन महेन्द्रभाई दोशी, वाशी
- मे. टिटबिट मसाला परिवार, वाशी
- श्रीमती निर्मलाबेन प्रमोदजी ललवाणी, कोसेलाव
- श्रीमती शांताबेन शंबूलालजी वोहरा, घाटकोपर
- श्रीमती शांतिदेवी त्रिलोकचंदजी हुक्माणी

जलगाँव

- स्व. श्रीमती शांताबाई फुलचंदजी सुराणा, मोहब्बतनगर
- शा. धनपतजी कुंवरजी मोमैया, कच्छ बारोही
- श्रीमती ताराबाई शिवराजजी चोरडिया परिवार, (तरुण, प्रवीण), वकोट
- श्रीमती कस्तुरीबेन दुर्लभजी शाह परिवार
- शा. लकीचंदजी लालचंदजी मुथा, धुलिया
- शा. भागचंदजी कुंदनमलजी वेदमुथा, रेवतडा
- स्व. श्रीमती जडावीबाई केशरीमलजी रामसीणा, सियाणा
- श्रीमती सुमतिलाल सुरेन्द्रकुमार टाटिया परिवार, धुलिया
- शा. दिलीपभाई चंदुभाई शाह खामगाँव वाले (हस्ते. नयणाबेन)
- मातुश्री विजयाबेन शांतिलालजी लोडाया, सायरा (कच्छ)

नागपुर

- श्री उत्कर्ष सखी मंडल
- शा. अमृतलालजी मनसुखलालजी शाह (हस्ते राजेन्द्रभाई), ओड (गुज.)
- श्रीमती कंचनदेवी ताराचंदजी बैदमुथा परिवार, फलोदी
- श्रीमती भानुबेन धीरजलालजी सेठ परिवार
- श्रीमती प्रवीणाबेन अशोकभाई भायाणी, ह. खुश्बु भायाणी
- पार्श्व विनयकुमार जीतमलजी सिंघी, बालाघाट

❖ अहमदनगर ❖

- श्री पाबल ग्रुप, अहमदनगर
- शा. शंकरलालजी शेषमलजी वेदमुथा, रेवतडा
- शा. चंपालालजी विजयकुमारजी मुथा, (ओडनावाला), पिपाड
- श्रीमती मंगलाबेन कांतिलालजी बलदोता, मुलगाँव (पाली)
- श्रीमती जयश्रीबेन दीपचंद रतिलाल गांधी, मोहनपुर
- शा. सवासाहेबजी राजेन्द्रकुमारजी बीडवाले
- शा. अशोकलाल अतुल अभय पारेख
- शा. जयंतिलाल मोटमलजी ओस्तवाल, शिरुर
- शा. संदेशजी लोढा

❖ मिरज-सांगली ❖

- शा. सूर्यकांतजी हिरालालजी शाह, पन्थवाडा
- श्रीमती जयाबेन वसंतलाल शाह, जामनगर
- श्रीमती तुलसीदेवी मिश्रीमलजी बाफणा, सायला

❖ महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र ❖

- श्रीमती कामाक्षीबाई रिखबचंदजी निम्बजीया, सोलापुर-कालंद्री
- शा. चुन्नीलालजी गुलबाजी पालेशा, कासेगाँव
- शा. रसिकलालजी मणिलालजी शाह, ताकारी-दांगरवा

- शा. अतुलजी चंद्रकांतजी पारेख, शिराला
- श्रीमती प्रभावती रामजी मोटा परिवार, बारामती कच्छ-भुजपुर
- शा. पुखराजजी भगवानजी, कल्याण-आहोर
- शा. हिम्मतमलजी ताराचंदजी ओसवाल, खोपोली-रामसीण
- संघवी इंदरचंदजी प्रेमराज रायसोणी, हिंगोली
- शा. मोतिलालजी जेठमलजी निम्बजीया, सातारा-कालंद्री
- शा. हुकमचंदजी राजमलजी विनायकिया, खिडकिया-खंडप (म.प्र)
- श्रीमती रंभाबेन गोपालजी शाह, हैदराबाद, धुलिया-मांडवी

❖ आंध्र प्रदेश ❖

- श्रीमती प्रभादेवी जयंतिलालजी रतनपुरा वोरा, गुंटूर-मोदरान
- मातुश्री ओटीबाई वालचंदजी खुमाजी पोरवाल, पीठापुरम-बागरा
- श्रीमती भाग्यवंतीदेवी सुरेशकुमारजी कबदी, विजयवाडा-सायला
- शा. ओकचंदजी जोमतराजजी खडगांधी, नरसापुर-मडगाँव
- शा. पारसमलजी छगनराजजी तलावत, नरसापुर-आहोर

❖ बेंगलोर-चिकपेट ❖

- श्रीमती अमियाबाई दीपचंदजी पालगोता चौहान, उम्मेदाबाद (गोल)
- शा. प्रकाशचंदजी बाबुलालजी राठौड, तवाव
- शा. गौतमचंदजी शेषमलजी सोलंकी, नोवी

- शा. नेमकुमारजी कुंदनमलजी गादिया, आहोर
- शा. नरेन्द्रकुमारजी शंकरलालजी ओस्तवाल, जोधपुर
- संघवी अशोककुमारजी जसराजजी, तवरी
- शा. फुटरमलजी मन्नाजी निंबजीया, खिवांदी
- श्रीमती भागवंतीदेवी भंवरलालजी बिलोचा, पालडी जोड
- शा. कांतिलालजी कुंदनमलजी गांधीमुथा, उम्मेदाबाद (गोल)
- शा. रमेशकुमारजी मोहनलालजी कटारिया, धामली
- संघवी मांगीलालजी भरतमलजी वेदमुथा, रेवतडा
- शा. हिराचंदजी जवानमलजी, शिवगंज
- संघवी श्रीमती जंबुदेवी बाबुलालजी बंदामुथा, गढ़सिवाणा
- श्रीमती मयणाबाई प्रकाशचंदजी चुत्तर, पिपलियाकलां
- श्रीमती मीनादेवी नरेन्द्रजी ओस्तवाल, जोधपुर
- श्रीमती शांतिबाई इंदरमलजी नागौत्रा सोलंकी, सियाणा
- शा. पारसमलजी भबुतमलजी दत्तानिया राठौड, कलापुरा
- शा. जुगराजजी प्रकाशचंदजी लुंकड
- श्रीमती इंद्राबेन रंजितकुमारजी बागोतरा परमार चौहान, हरजी

❖ बेंगलोर-वी.वी पुरम ❖

- श्रीमती कमलाबाई गुलाबचंदजी दांतेवाडिया, आहोर
- श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी बागरेचा, आहोर
- श्रीमती हंजाबाई सुमेरमलजी नागोरी, आहोर

- श्रीमती शांतिदेवी तेजराजजी नागोरी, आहोर
- संघवी श्रीमती सारकीबाई वगतावरमलजी कुहाड, आहोर
- संघवी शा ललितकुमारजी जीतमलजी दांतेवाडिया (जे.के.), मांडवला
- श्रीमती कमलाबाई लक्ष्मीचंदजी जिरावला परमार, पाबुजी देवली
- संघवी श्रीमती सुआबाई मुनीलालजी कंकुचौपडा, आहोर
- शा. चंपालालजी ओटमलजी छत्रियवोरा, सुराणा
- शा. पारसमलजी मिश्रीमलजी कंकुचौपडा, आहोर
- शा. विमलचंदजी सुमेरमलजी दांतेवाडिया, आहोर
- श्रीमती गवरीबाई भंवरलालजी बालर, अमरसर
- शा. दिनेशकुमारजी राजमलजी मेहता, भीनमाल
- शा. श्रेणिककुमारजी मदनलालजी सालेचा, आहोर
- श्रीमती शांतिबाई गुलाबचंदजी मलेचावोरा, खिवांदी
- श्रीमती सारकीदेवी पुखराजजी सुजाणी, उम्मेदाबाद (गोल)
- शा. दिनेशकुमारजी उगमराजजी मेहता, भीनमाल
- शा. घीसुलालजी वीरचंदजी खांटेड, खिवांदी
- शा. हिराचंदजी पारसमलजी सुजाणी, उम्मेदाबाद (गोल)
- श्रीमती मंजुलादेवी खोलचंदजी बाफणा, मोकलसर
- संघवी मेघराजजी सुगालचंदजी लुंकड, आहोर
- श्रीमती सुमतिदेवी शांतिदेवी निर्मलादेवी
- श्रीमती सुमतिदेवी घेवरचंदजी लुणिया, उम्मेदाबाद (गोल)

- श्रीमती बदामीबाई फुलचंदजी गादिया, आहोर
- शा. दिनेशकुमारजी पुखराजजी गादिया, आहोर
- शा. सुभाषकुमारजी मिश्रीमलजी सवाणी, धाणसा
- तलावत श्रीमती चंदनदेवी बाबुलालजी, उम्मेदाबाद (गोल)
- शा. भेरुलालजी अमृतलालजी सेठ, जालोर
- श्रीमती सुआबाई लालचंदजी भंडारी, सायला
- श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नि स्व.चंपालालजी लुणिया, उम्मेदाबाद (गोल)
- श्रीमती सुखीबाई उकचंदजी सुजाणी, उम्मेदाबाद (गोल)
- शा. सुरेशकुमारजी सरदारमलजी मुथा, मांडवला
- शा. रमेशकुमारजी फैंसीदेवी संघवी, आलासण
- शा. अशोककुमारजी यशपालजी नाहर, देवली आउवा
- श्रीमती सुआदेवी दलीचंदजी बंदामुथा, एलाणा
- शा. राजेन्द्रकुमारजी मिश्रीमलजी सवाणी, धाणसा
- शा. साधर्मिक भाई

❖ चामराजपेट, बैंगलोर ❖

- शा. चंपालालजी पुखराजजी पालगोता, सुराणा
- साधर्मिक बेन
- शा. जयंतिलालजी तनुजाजी मेहता, खिमेल

- शा. चंपालालजी छगनराजजी संघवी, अमरसर
- शा. सुरेशकुमारजी उत्तमचंदजी वाणीगोता, अमरसर
- श्रीमती लीलाबाई सुमेरमलजी पालगोता चौहान, एलाणा
- श्रीमती दीपाबेन शांतीलालजी सोमावत, सिरीयारी

❖ इटा सोसायटी, बैंगलोर ❖

- मे. डोलफिन केमिकल इंडिया, शिवगंज
- श्रीमती चंपीबाई अंबालालजी बालदा, बरलुट
- श्रीमती फेंसीबाई सुरजमलजी जैन, तखतगढ
- साधर्मिकभाई, सोनीगरा परिवार
- श्रीमती मोहिनीबाई चंपालालजी बंदामुथा, उम्मेदाबाद (गोल)

❖ बेंगलोर- केंटोन्मेंट ❖

- शा. मोहनलालजी राजेशजी बोहरा, बिलावास
- शा. किशनलालजी राकेशजी भरतजी गुलेच्छा, बिलावास
- शा. दिनेशकुमारजी श्रेणिकजी कोठारी, खिमेल
- श्रीमती अमरावबाई संपतराजजी गुलेच्छा, बिलावास
- शा. हिराचंदजी बिलियाबाई बोहरा, पाली
- श्रीमती चंद्रलता जवाहरमलजी लुणावत, पिपाड

❖ राजाजीनगर, बैंगलोर ❖

- श्रीमती प्रतिभाबेन भरतभाई शाह पू. मोक्षवल्लभ वि.म.सा. के सांसारिक परिवार
- श्रीमती कुसुमबेन कांतिलालजी शाह मेवावाला
- श्रीमती सौभाग्यवंतीबाई शुभराजजी सिंघवी, सोजत सिटि
- श्रीमती मधुबेन छोटालालजी शाह, थरा
- शा. मांगीलालजी लक्ष्मीचंदजी लुणिया, बिलावास

❖ जयनगर, बैंगलोर ❖

- श्रीमती निर्मलाबाई नरपतचंदजी मेहता, जालोर
- श्रीमती रेखा सुनिलजी खोना, सुजापुर
- विद्युत पॉवर सिसट्म, मेंगलवा
- शा. चंदनमल बाबुलालजी कर्णावट, जालोर
- शा. धर्मीचंदजी नरेन्द्रजी सुरेन्द्रजी भंडारी, निम्बज
- शा. प्रकाशकुमारजी अमीचंदजी, बावली

❖ बेलगाम-निपाणी ❖

- स्व.श्रीमती तीजोबाई जुहारमलजी मेहता, बाली
- शा. भंवरलालजी हंजारीमलजी विनायकिया, आहोर

- शा. रुपचंदजी सरेमलजी चौहान, तखतगढ़
- श्रीमती हुलासीबाई पन्नालालजी चंदुलालजी खोडा, तखतगढ़
- श्री चंद्रप्रभुस्वामी ५२ जिनालय मंदिर ट्रस्ट, निपाणी
- संघवी संजीवजी कुमारपालजी शाह, निपाणी

चित्रदुर्गा

- संघवी श्रीमती बदामीबाई अमीचंदजी सरेमलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, आलासण
- संघवी अमीचंदजी हिराचंदजी गोल गौत्र परिवार, जावाल
- शा. शंकरलालजी भीमाजी अंदोणी, सुराणा
- शा. सुरेशकुमारजी तिलोकचंदजी कांकरिया, चौराउ
- श्रीमती फूलीबाई पुखराजजी राठौड, कलापुरा
- श्रीमती मोहिनीदेवी जसवंतराजजी पटियात, धाणसा
- श्रीमती शांतिदेवी जीवराजजी बाफणा, थरवाड
- सी. टी. फुट प्रॉडक्ट्स, सुराना
- शा. प्रदीपकुमारजी हंजारीमलजी धार परमार, वराडा
- शा. बाबुलालजी हुकमीचंदजी रतनपुरा चौहान, बरलुट
- शा. चंपालालजी विजयकुमारजी बागरेचा, चल्लकेरे-गढ़सिवाणा

दावणगेरे

- श्रीमती आशाबेन अजितकुमारजी खिंवेसरा, सिरोही
- शा. महेन्द्रकुमारजी फुलचंदजी, बावली
- संघवी वीरचंदजी असलाजी, वेलांगरी
- शा. प्रकाशचंदजी हिराचंदजी गुंदेशा, रामसीण
- शा. रमणलालजी मियाचंदजी बागरेचा, तवरी
- शा. केसरीमलजी हिराचंदजी गुंदेशा, रामासीण
- शा. मोहनलालजी ओटमलजी निड्जिया, कालंद्री
- कल्याणमित्र, पाडीव
- शा. पारसमलजी मांगीलालजी काश्यप तुर परिवार, सियाणा
- श्रीमती पंकुबाई अचलचंदजी परमार, कालंद्री
- साधर्मिक भाई
- शा. पन्नालालजी रविन्द्रकुमारजी मेरी, पाडीव
- शा. धनराजजी भबुतमलजी चौहान, खिवांदी
- श्रीमती पिस्ताबाई चंपालालजी खिचा, देवली
- शा. रुपचंदजी रतनचंदजी सेहलोत, बूसी

मैसुर

- श्रीमती करुणादेवी अशोककुमारजी दांतेवाडिया, आहोर
- श्रीमती सोवनवाई सुखराजजी हरण, नरता

- शा. जसराजजी बादरमलजी एंड कंपनी (प्रकाशजी), मोकलसर
- शा. राजेन्द्रकुमारजी अमृतलालजी लालचंदजी मंडोत, आहोर
- श्रीमती दयाबाई स्व. भंवरलालजी नरसाजी, दादाल
- महावीर होसीयरी ताराचंदजी
- श्रीमती सोहनबाई हस्तीमलजी भंडारी, जालोर
- श्रीमती सुखीबाई रामलालजी पालरेचा, मुडतरासिली

❖ टुमुकुर ❖

- वर्धमान पूजा ज्वेलर्स, मांडाणी
- श्रीमती फेंसीबाई कांतिलालजी साकरिया, चांदराई
- स्व. सुंदरबाई जवेरचंदजी, बावली

❖ रानीबेन्नुर ❖

- शा. पन्नालालजी वालचंदजी संघवी, आइपुरा-जालोर
- शा. नेमिचंदजी सुनिलकुमारजी चिराग जीरावला, गढ़सिवाणा

❖ कोलार ❖

- मे. अंबिका इंडस्ट्रीज, सायला
- शा. मिठालालजी कुंदनमलजी छत्रगोता, सायला
- शा. विजयराजजी कुंदनमलजी छत्रगोता, सायला

- शा. चंपालालजी कुंदनमलजी छत्रगोता, सायला
- शा. रमेशकुमारजी कुंदनमलजी छत्रगोता, सायला
- शा. अशोककुमार कुंदनमलजी छत्रगोता, सायला
- शा. जयंतिलालजी हस्तीमलजी छत्रगोता, सायला
- शा. कमलराजजी रतनलालजी भलेचंदजी वेदमुथा, रेवतडा

❖ के.जी.एफ ❖

- शा. जवाहरलाल मनसुखलाल किरिटकुमार मेहता, भुवड-कच्छ
- शा. प्राणलाल दिलीपकुमार अनिलकुमार मेहता, अंजार
- शा. फुलचंदजी दिनेशकुमारजी तलेडा, बगडीनगर
- शा. जयचंदजी राजेशकुमारजी कोटेचा, सोजत
- शा. गुलाबचंदजी रोशनकुमारजी गांधी, मुडतरासिली
- शा. कुमारपालजी संपतकुमारजी सतीशकुमारजी बाफणा, नागौर
- शा. लीलाचंदजी हंजारीमलजी साकरिया, बंगारपेठ-मडिया
- श्रीमती चंचलबाई स्व. शा भंवरलालजी, बांटिया एंड संस, ऐंडरसनपेट-आउवा देवली

❖ बिजापुर ❖

- शा. राजमलजी गेबीरामजी संकलेचा, समदडी
- शा. वी जी पारेख एंड कंपनी, समदडी

- श्री विजयपुर सम्मेतशिखर हस्तिनापुर तीर्थ यात्रा संघ, विजयपुर
- हीर सेना
- श्राविका बहन

हुबली

- श्रीमती हंजाबेन प्रकाशराजजी वखियातरा, आमलारी
- शा. जयंतिलालजी वस्तीमलजी कंकु चौपडा परिवार, सायला
- शा. माणिकचंदजी हिराचंदजी धुमावत, पोसालिया
- साधर्मिकभाई
- शा. अशोककुमार जेठमलजी संकलेचा, गढ़सिवाणा

बेल्लारी

- श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर
- संघवी मुथा चुन्नीलालजी हिराचंदजी दांतेवाडिया, चेन्नई-आहोर
- संघवी मुथा कानराजजी सुरजमलजी दांतेवाडिया, आहोर
- शा. अमीचंदजी प्रविणचंदजी पोमाणी बागरेचा,गढ सिवाणा
- एस. सी. बागरेचा एंड कं, गढ़सिवाणा
- स्व.शा. रामचंद्रजी चुन्नीलालजी गुर्जर, हरजी
- संघवी शा. धर्मीचंदजी वीरचंदजी लौब, जावाल

यात्रा करने से पहले यह खास पढ़िए

जगमां तीरथ दो वडां, शत्रुंजय गिरनार,
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार.

क्या आप इस गिरनार महातीर्थ की यात्रा करने आए हो ?

क्या आप गिरनार महातीर्थ की महिमा जानते हो ? नहीं ?

तो आओ इस गिरनार महातीर्थ की अपरंपार महिमा की झलक देखें....

१. इस पावनभूमि की बहती वायु में अनंत तीर्थंकरों की दीक्षा अवसर के वैराग्य की सुवास फैली हुई है...

२. इस पावनभूमि में अनंत तीर्थंकरों के केवलज्ञान का प्रकाश फैला हुआ है...

३. यह पावनभूमि अनंत तीर्थंकरों के सिद्धि-पद की महक से महक रही है...

४. इस पावनभूमि में विश्व के प्राचीनतम श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमाजी बिराजमान है।

५. इस पावनभूमि से अनागत चौबीसी के चौबीसों चौबीस तीर्थंकर परमात्मा परमपद को प्राप्त करनेवाले हैं।

६. इस पावनभूमि की उपासना से अति चिकने गाढ निकाचित कर्म भी नाश हो जाते हैं...

७. इस पावनभूमि में विश्व की प्रत्येक वनस्पति, औषधि, जड़ीबूटी प्राप्त होती है...

८. इस पावनभूमि में रहनेवाले जानवर भी आठवें भव में सिद्धपद प्राप्त करते हैं...

९. इस पावनभूमि पर शुभ भाव से दान-शील-तप-भावधर्म की कोई भी आराधना की जाय तो शीघ्र मोक्षपद की प्राप्ति होती है...

१०. इस पावनभूमि का घर बैठकर भी शुद्धभावपूर्वक ध्यान किया जाये तो चौथे भव में मोक्ष प्राप्त होता है तो वहाँ की गयी आराधना तो कहाँ पहुँचाएगी ?

११. इस पावनभूमि पर, आकाश में उड़ते पक्षियों की परछाई भी गिरे तो उसके भवोभव के दुर्गति के चक्कर भी दूर हो जाते हैं...

१२. इस पावनभूमि में, सहसावन के मध्य में श्री नेमिनाथ परमात्मा के प्रथम और अंतिम समवसरण की रचना करोड़ों देवों के द्वारा की गयी थी...

१३. इस पावनभूमि में सहसावन में साध्वीवर्या राजीमतीश्री ने सिद्धपद को प्राप्त किया था...

- **सहसावन कल्याणभूमि की स्पर्शना-दर्शन-पूजन किए बिना आपकी गिरनार यात्रा अधुरी रहती है। पहली टूंक की यात्रा करके कल्याणकभूमि की स्पर्शना किए बिना नीचे आना, यह परमात्मा की कल्याणक-भूमि की उपेक्षा रुप महाआशातना है।**

- सहसावन में संप्रतिकालीन श्री नेमिनाथ परमात्मा सहित चौमुखजी प्रतिमाजी विशाल समवसरण मंदिर के मूलनायक हैं। वहाँ श्री नेमिनाथ परमात्मा के काल में ही निर्मित जीवित स्वामी श्री नेमिनाथ की और श्री रहनेमिजी की प्रतिमा सिद्ध अवस्था में है। गुफा में प्रभावक श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा है।

- सहसावन में श्री नेमिनाथ परमात्मा की दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणक की देहरी भी है।

- सहसावन में सहसावन तीर्थ के उद्धारक, साधिक ३००० उपवास और ११५०० आयंबिल के घोर तपस्वी प.पू.आ. हिमांशुसूरि महाराज की अंतिम संस्कार भूमि भी है।

पहली टूंक से सहसावन कल्याणकभूमि की यात्रा किस तरह करनी ?

श्री गिरनार की पहली टूंक (३८३९ सोपान) से २८० सोपान चढ़कर गौमुखी गंगा के मंदिर के पहले बायीं तरफ मुड़कर थोड़ा चलने पर सेवादास का आश्रम आता है। वहाँ से १३०० सोपान उतरने पर विशाल सहसावन समवसरण मंदिर आता है। वहाँ से १०० सोपान उतरने पर केवलज्ञान और दीक्षाकल्याणक की देहरी आती है। पुनः ५० सोपान चढ़कर तलेटी के रास्ते पर ३२०० सोपान उतरकर आधा किलोमीटर चलने पर तलेटी की धर्मशाला आती है।

तलेटी से सहसावन जाने का दूसरा रास्ता

जय तलेटी, आदिनाथ मंदिर में चैत्यवंदन तथा श्री नेमिनाथ भगवान की चरणपादुका के मंदिर में दर्शन करके २५ कदम पीछे चलकर दायीं तरफ दिगंबर धर्मशाला के पास से निकलकर आधा किलोमीटर चलने पर ३२५० आसान सोपान चढ़कर सहसावन पहुँच सकते हैं। वहाँ दीक्षाकल्याणक - केवलज्ञानकल्याणक एवं समवसरण मंदिर में दर्शन-पूजन-

चैत्यवंदन करके वहाँ से १२०० सोपान चढ़कर ३०० सोपान की चढ़-उतर करने के बाद २८० सोपान उतरने पर श्री नेमिनाथ परमात्मा की पहली टूंक के मंदिर में पहुँच सकते हैं। इस रास्ते में भय का कोई कारण ही नहीं रहता।

यात्राक्रम

- सबसे पहले गिरनार महातीर्थ की तलेटी में आदिनाथ दादा के जिनालय में चैत्यवंदन करना।
- जय तलेटी पर श्री नेमिनाथ परमात्मा आदि प्रभुजी की चरण पादुका की देहरी में चैत्यवंदन करना।
- गिरनार के पांचवें सोपान पर नेमिनाथ प्रभु की चरण-पादुका एवं अंबिकादेवी की मूर्ति-वाली देरी में दर्शन करना।
- गिरनार की पहली टूंक की तरफ ३८३९ सोपान चढ़ते समय इस पवित्रभूमि की आशातना न हो उस तरह मन को पवित्र रखने के लिए टेपरेकोर्डर, मोबाईल और रास्ते में मस्ती मजाक न करके परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए तीर्थंकर की कल्याणक भूमि की स्पर्शना करने की शुभ भावना के साथ चढ़ना।

- यात्रा के दौरान नीचे दृष्टि रखकर धीरे-धीरे जयणापूर्वक जीवदया का पालन करना चाहिए।
- यात्रा के दौरान किसी का मन कलुषित न हो और मर्यादा का पालन हो, वैसे वस्त्र पहनकर यात्रा करनी चाहिए।
- यात्रा के दौरान किसी के साथ कषाय न हो और कठोर वाक्य न बोला जाये, इसके लिए मौनपूर्वक शांति से यात्रा करने का आग्रह रखे।
- पहली टूंक पर पहुंचकर श्री नेमिनाथ परमात्मा के दर्शन करके, स्नान करके तैयार होना। यदि पक्षाल में थोड़ा समय हो तो अंदर के तीन मंदिर (१) मेरकवसी (२) सगरामसोनी और (३) कुमारपाल के मंदिर के दर्शन-पूजन करना। बाद में मूलनायक की पूजा करके बाहर के मंदिरों में दर्शन-पूजन करने जाना। यदि सामान लेकर बाहर के मंदिरों में पूजा करने जाओ तो चौमुखजी मंदिर और रहनेमिजी मंदिर की पूजा करके सीधे सहसावन कल्याणकभूमि की तरफ जा सकते हैं।

• अनुक्रमणिका •

क्र.	विवरण	पेज क्र.
१.	श्री नेमिनाथ जिन स्तुति	१
२.	उपकारकारी नेमिवरने	४
३.	गिरनार महिमा	७
४.	सहसावन ९९ यात्रा विधि	१२
५.	गिरनार महातीर्थ यात्रा का पहला चैत्यवंदन	१६
६.	गिरनार महातीर्थ यात्रा का दुसरा चैत्यवंदन	१९
७.	गिरनारमंडन नेमिनाथ दादा के दर्शन-स्तुति	२६
८.	गिरनार अभिषेक स्तुति	३०
९.	गिरनार महातीर्थ का तीसरा चैत्यवंदन	३४
१०.	गिरनार महातीर्थ के खमासमण के दोहे	३७
११.	गिरनार महातीर्थ आराधना का काउस्सग्ग एवं भावना	३९
१२.	गिरनार महातीर्थ यात्रा का चौथा चैत्यवंदन	४३
१३.	गिरनार महातीर्थ यात्रा का पाँचवां चैत्यवंदन	४६

• अनुक्रमणिका •

क्र.	विवरण	पेज क्र.
१४.	सहसावन कल्याणकभूमि की महिमा एवं चैत्यवंदन	४९
१५.	आ. हिमांशुसूरि म.सा. की अंतिम संस्कारभूमि, उनके जीवन की झलक एवं मोक्षकल्याणकभूमि के दर्शन	६०
१६.	प्रभु के कल्याणक की बातें, दीक्षा केवल कल्याणक	६७
१७.	नेमिनाथ दीक्षाकल्याणक का चैत्यवंदन एवं भावना	७५
१८.	नेमिनाथ केवलज्ञानकल्याणक का चैत्यवंदन एवं भावना	८५
१९.	चैत्यवंदन विधि विभाग	१००
२०.	नेमिनाथ जिन चैत्यवंदन	१०९
२१.	नेमिनाथ जिन स्तवन	११०
२२.	नेमिनाथ थोय	११७
२३.	गिरनार नेमि भक्तिगीत	१२२
२४.	गिरनार महातीर्थ के १०८ नाम के साथ दोहे	१५४
२५.	गिरनार महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि	१७३

• अनुक्रमणिका •

क्र.	विवरण	पेज क्र.
२६.	श्री शत्रुंजय महातीर्थ का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१७५
२७.	श्री आदिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१७७
२८.	श्री अजितनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१७८
२९.	श्री संभवनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८०
३०.	श्री अभिनंदनस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८२
३१.	श्री सुमतिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८३
३२.	श्री पद्मप्रभ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८५
३३.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८७
३४.	श्री चंद्रप्रभस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१८९
३५.	श्री सुविधिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१९१
३६.	श्री शीतलनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१९३
३७.	श्री श्रेयांसनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१९५
३८.	श्री वासुपूज्यस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१९७

• अनुक्रमणिका •

क्र.	विवरण	पेज क्र.
३९.	श्री विमलनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	१९९
४०.	श्री अनंतनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०१
४१.	श्री धर्मनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०२
४२.	श्री शांतिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०४
४३.	श्री कुंथुनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०५
४४.	श्री अरनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०८
४५.	श्री मल्लिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२०९
४६.	श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१०
४७.	श्री नमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१२
४८.	श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१३
४९.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१५
५०.	श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१६
५१.	श्री सीमंधरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन, स्तवन, थोय	२१८
५२.	अमावस के दिन स्पर्शना	२२०

नेमिजिन स्तुति

(१) जे प्रभु तणा संस्मरणथी, संताप सवि मनना टळे,
जे प्रभु तणा दर्शन थकी, दुःख दुरित दर्द दूरे टळे,
जे प्रभु तणा वंदन थकी, विरमे विषयने वासना,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना.

(२) रमणीय राजुल जेवी नारी त्यजी दीधी पळवारमां,
रमणीनुं रुपविरुप लाग्युं, पशु तणा पोकारमां,
राजीमतीनुं शु थशे, क्षण मात्र नवि करी कल्पना...
गिरनार...

(३) तोरण सुधी आवीने पण, पाछा वळ्या जीव प्रेमथी,
निर्दोष पशुओनी कतल, जोवाय केम प्रभु नेमथी,
अंतर बने करुणा भीनुं, बस आटली मुज प्रार्थना
गिरनार...

(४) जे भोगना काळे अनुपम, योगने साधी गया,
वनिताना संगम काळमां, विरति शुं प्रीत बांधी गया,
महासत्त्वशाळी शिरोमणी, प्रभु सत्त्वनी करुं याचना...
गिरनार...

(५) रैवतगिरिना शिखर पर, प्रभु मुकुट मणी सम ओपतां
मनोहारिणी मुद्राथी भविमां, बोधिना बीज ओपता,
हैयुं छे हर्षविभोर आजे, हवे न रही कोई झंखना...
गिरनार...

(६) उत्तंगगिरि गिरनार नजरे दूरथी देखाय ज्यां,
उभराय आनंद रोमे रोमे नयन बे छलकाय त्यां,
मळशे हवे दर्शन प्रभुना, श्वासे श्वासे भावना...
गिरनार...

श्री नेमिनाथ जिन स्तुति

गिरनारगिरि पावन कर्यो महिमा अने गरिमा वडे !
भोरोलने भासित कर्युं प्रभुता अने प्रतिभा वडे !
मुज हृदयने सद्भाव ने सद्गुण वडे शणगारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

महाशंख फूंकी शत्रुओनी शक्तिओ सौ संहरी,
रणभूमि पर श्रीकृष्णना महासैन्यनी रक्षा करी,
बस आ रीते हे नाथ ! आंतरशत्रु मुज संहारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

श्रीकृष्णनी पटराणीओ लोभाववा तमने मथी,
त्यारेय अंतरमां तमारा कामज्वर आव्यो नथी !
हे कामविजयी ! नाथ ! मारो कामरोग निवारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

राजीमती भूली गई ते स्नेह संभार्यो तमे !
राजीमतीनो वणकहो आत्मा प्रभु ! तार्यो तमे !
हुं रोज संभारुं, मने क्यारेक तो संभारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

पोकार पशुओनो सुणी सहुने तमे प्रभु ! उद्धार्या
दीक्षा लई केवल वरी बहुने तमे प्रभु ! उद्धार्या
मारी विनवणी छे हवे मुजने प्रभु ! उद्धारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

स्वामी ! तमे सेवकजनो तार्या बहु तेथी कहुं,
आ दुःखमय संसारमां रझळी रह्यो छुं नाथ !
हुं विनति करुं छुं, करगरुं छुं, नाथ ! मुजने तारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

श्यामल छबि प्रशमार्द्र नयनो रुप आ रळियामणुं !
मुखडुं मनोहर आकृति रमणीय स्मित सोहामणुं !
आ सर्व अंतिम समयमां मुज नयनमां अवतारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

हे नाथ ! तृष्णा अग्निए जनमोजनम बाळ्यो मने,
नेहाळ नयनोमां डूबाडी प्रभु ! तमे ठार्यो मने !
छे झंखना बस एक के मुजने भवोभव ठारजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

तमने प्रभु ! पामी पळे पळ परमशाता अनुभवुं !
हे नाथ ! तमने छोडीने बीजे नथी मारे जवुं !
मारे जवुं छे 'मोक्ष'मां मुज मार्गने अजवाळजो !
हे नेमिनाथ ! जिनेन्द्र ! मारी प्रार्थना स्वीकारजो !

उपकारकारी नेमिवरने...

मळवुं छे तुजने नाथजी, जेम ज्योतने ज्योति मळे,
भळवुं छे मुजने तुज महीं, जेम बिंदु सिंधुमां भळे,
विलंब ना करशो प्रभुजी, तडपी रह्यो छुं तुम विना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (१)

प्रति रोममां, प्रति श्वासमां, प्रति पलकमां, प्रभु तुं ज छे,
आ सृष्टिमां करुं दृष्टि ज्यां, ते दृश्यमां प्रभु तुं ज छे,
प्रति अणु अने परमाणुमां, संभळाय सूर तुज नामना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (२)

संस्मरणो ज्यां ताजा करुं, रोमांचथी मन माहरुं,
दिन-रात-सांज-सवारमां, बस स्मरण करतुं ताहरुं,
हती गाढ तुज-मुज लागणी, निर्मोही बनी विसरायना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (३)

उपसर्गो मारा जीवनमां, अनुकूल के प्रतिकूल हो,
आशिष देजो डगमगुना, फुल के भले शूल हो,
मुज वेलडी सम आतमानो, तुम थकी उद्धार छे,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (४)

मुज जीवननी संध्या ढळे, त्यारे स्मरणमां आवजो,
समभाव मारो टकावीने, नवकार याद करावजो,
हवे मृत्युनो पण भय नथी, तुम नामनो जयकार छे,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (५)

गिरनार तारा दर्शथी, हुं भव्य छुं समजाय छे,
मने मुक्ति मळशे निकटमां, विश्वास एवो थाय छे,

रैवतगिरि तुज नाम छे, मम जन्म-मरण निवारजे,
गिरनार वंदी विनवुं, मुज आतमाने तारजे... (६)

गीत : (राग : बेना रे सासरीये जाता...)

चालो रे... सौ चालो,
चालो रे.. गिरनार जइए आतम निर्मल थाय,
भवोभवना पापो दूरे पलाय (२)
जे कोई जाय फेरा टली जाय,
भवोभवना पापो दूरे पलाय
पापी अधम अहीं जे कोइ आवे,
दुर्गति दूर हटावे (२)
त्रस थावर जे गिरिने फरशे,
दुष्कर्मोने खपावे (२) चालो रे...
ए गिरनारनो महिमा मोटो,
कहेता नावे पार.... भवोभव

स्तुति

देवांगनाने देवताओ, जेनी सेवना झंखता,
मली तीर्थकल्पो वली, जेना गुणला गावता;

जिनो अनंता जे भूमिए, परमपदने पामता,
ए गिरनारने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो... (२)

गत चोवीसीमां जे भूमिए, सिद्धिवधू जिन दस वर्या,
ने आवती चोवीसी मांहे, सौ जिनो शास्त्रे कह्या;
ए गिरनारना गुण घणा पण अंशथी शब्दे वण्या,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधा दूरे जता.... (२)

गिरनार महिमा

- यह गिरनार भी शत्रुंजय महातीर्थ की तरह प्रायः शाश्वत है ! पाँचवें आरे के अंत में जब शत्रुंजय गिरि की ऊँचाई घटकर सात हाथ की होगी, तब इस गिरनारगिरि की ऊँचाई तो ४०० हाथ की रहेगी।
- यह गिरनार अर्थात् रैवतगिरि ! यह शत्रुंजय का पाँचवां शिखर होने से पाँचवां ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान दिलानेवाला है !
- गिरनार अनंत अरिहंतों की भूमि है !
- गिरनार पर अनंत तीर्थंकर आए हैं और मोक्षपद को

प्राप्त किया है ! अन्य अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान और मोक्षकल्याणक पूर्व की चोवीसी में हुए हैं, हो रहे हैं तथा भविष्य में होनेवाले हैं !

- यह गिरनार अवसर्पिणी के पहले आरे में २६ योजन, दूसरे आरे में २० योजन, तीसरे आरे में १६ योजन, चौथे आरे में १० योजन, पाँचवे आरे में २ योजन और छट्ठे आरे में १०० धनुष अर्थात् ४०० हाथ की ऊँचाई का रहेगा ।
- स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यों में सुर असुर और राजा गिरनार के आकार की रोज पूजा करते हैं ।
- यह गिरनार महातीर्थ पृथ्वी का तिलक समान है !
- यह गिरनार महातीर्थ महापुण्य की राशि है !
- गिरनार पर आनेवाले पापी ऐसे प्राणी भी पुण्यवान् बन जाते हैं ।
- जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से लोहा सोना बनता है उस प्रकार गिरनार के स्पर्श से प्राणी चिन्मय स्वरुपी बन जाते हैं ।

- गिरनार की भक्ति करनेवालों को इस भव में और परभव में दरिद्रता नहीं आती ।
- गिरनार महातीर्थ में निवास करनेवाले तिर्यंचों (जानवर) को भी आठ भव के अंदर सिद्धिपद प्राप्त होता है ।
- गिरनार महातीर्थ में हर एक शिखर के ऊपर जल, स्थल और आकाश में घूमनेवाले जो जीव होते हैं, वे सब तीन भव में मोक्ष प्राप्त करते हैं ।
- गिरनार महातीर्थ पर वृक्ष, पाषाण, पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय और अग्निकाय के जीव हैं वे व्यक्त चेतनावाले नहीं होते हुए भी इस तीर्थ के प्रभाव से कुछ काल में मोक्ष प्राप्त करनेवाले होते हैं ।
- यह तो आत्मा का कल्याण करनेवाली प्रायः शाश्वत ऐसी कल्याणक भूमि है !

भूतकाल में प्रायः कोई चौबीसी ऐसी नहीं गयी होगी कि जब यहाँ कोई परमात्मा का कल्याणक न हो !

वर्तमान चोवीसी में भी यहाँ नेमिप्रभु के दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष ये तीन कल्याणक हुए हैं, अनागत चोवीसी में भी चौबीसों तीर्थंकर परमात्मा के मोक्ष तथा अंतिम दो प्रभु

के दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक भी होनेवाले हैं ! और गत चौबीसी में आठ तीर्थंकर के दीक्षा-केवलज्ञान-मोक्षकल्याणक हुए थे एवं दो तीर्थंकरों के सिर्फ मोक्षकल्याणक हुए थे।

परमात्मा के एक कल्याणक के अवसर पर चौदह राजलोक में प्रकाश और नरक के जीवों को सुखशाता का अनुभव होता है... देवलोक में इन्द्रमहाराजा का सिंहासन भी कंपायमान होता है... **तो महाप्रभावक ऐसे कल्याणक की घटना जिस पावनभूमि पर हुई हो, उस भूमि के महत्त्व की तो क्या बात करनी ? इस आत्मा पर अनादिकाल से छाया हुआ मिथ्यात्व का अंधकार, इन महाप्रभावक भूमिओ के स्पर्शन-दर्शन-वंदन-पूजनादि करने से दूर होते ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है... जीव को बोधिबीज की प्राप्ति होते ही वह शीघ्रातीशीघ्र आत्मविकास करके शिवपद प्राप्त करता है ! हम भी इस पावनभूमि पर आज भी रहे हुए प्रभु के कल्याणक अवसर के अणु-परमाणुओं की अनुभूति का आस्वादन करे !**

वस्तुपाल चरित्र में तो शत्रुंजय महातीर्थ और गिरनार महातीर्थ को वंदन करने में समान फल कहा गया है !

यह गिरिराज भी अत्यंत पवित्र होने से संभवित हो तो यह यात्रा नंगे पाँव करनी...

इस तीर्थभूमि की आशातना न हो इसलिए मन को पवित्र रखने के साथ टेपरेकोर्डर, मोबाइल आदि न रखकर इस पावनभूमि में बहते कुदरत के संगीत की सुरावली का श्रवण करना है...

मार्ग में हँसी-मजाक न करके अनंत तीर्थंकर परमात्मा की कल्याणकभूमि की स्पर्शना के स्पंदनों का आनंद लेते हुए प्रभु के नाम का **''ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः''** अथवा **''नमो अरिहंताणं''** पद का जाप करते हुए ऊपर चढ़ना है...

यात्रा के दौरान जीवदया का पालन करते-करते जयणापूर्वक नीची दृष्टि रखकर चढ़ना है...

कल्याणकभूमि सहसावन तीर्थ (गिरनार) की ९९ यात्रा कैसे करेंगे ?

पांच चैत्यवंदन :

१. तलेटी में आदिनाथ मंदिर में (पेज नं. 16)
२. जय तलेटी में नेमिनाथ आदि पांच प्रभुजी की चरण पादुका के सन्मुख (पेज नं. 19)
३. सहसावन में दीक्षा कल्याणक भूमि की देरी के सन्मुख (पेज नं. 75)
४. सहसावन में केवलज्ञान कल्याणकभूमि की देरी के सन्मुख (पेज नं. 85)
५. सहसावन में समवसरण मंदिर के मूलनायक के सन्मुख अथवा हिमांशूसूरि दादा की देरी के वहाँ से दर्शन होते पाँचवी टुंक के सामने (पेज नं. 61)

कल्याणकभूमि सहसावन की ९९ यात्रा की समझ :

१. तलेटी से 3250 सीढ़ी चढ़ने पर सहसावन आता है।
२. सहसावन तक के पांच चैत्यवंदन पूर्ण करके पहली टूंक अथवा वापस तलेटी पहोंचते है तो पहली यात्रा पूर्ण होती है।
३. अगर आप पहली टूंक गये हो तो वहाँ मूलनायक नेमिनाथ दादा का चैत्यवंदन एवं मुख्य मंदिर के पीछे आदिनाथ

भगवान का चैत्यवंदन यह दो चैत्यवंदन करके वापस सहसावन में तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक अथवा जय तलेटी पहुंचते हो तो दूसरी यात्रा पूर्ण होती है।

४. अगर आप दुसरी यात्रा करके पहले टूंक गये हो, तो वहाँ मूलनायक एवं आदिनाथ भगवान का चैत्यवंदन करके वापस सहसावन के तीन चैत्यवंदन करके पहली टूंक अथवा जयतलेटी पहोंचते हो तो तीसरी यात्रा पूर्ण होती है।

क्रमशः इस तरह 108 बार कल्याणकभूमि सहसावन तीर्थ की स्पर्शना करने से कल्याणकभूमि की 99 यात्रा गिनी जाती है।

● नित्य आराधना :

१. सुबह, शाम दोनों टाईम प्रतिक्रमण।

२. जिनपूजा तथा कम से कम एक बार दादा का देववंदन।

३. कम से कम एकासणा का पच्चक्खाण।

४. भूमि संथारा।

५. हर एक यात्रा में मूलनायक की 3 प्रदक्षिणा।

६. ''उज्जिंत सेलसिहरे दीक्खा नाणं निस्सिहीआ जस्स, तम् धम्म चक्कवट्टीं अरिट्ठनेमिं नमंसामि'' अथवा

''ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः'' की 20 नवकारवाली।

७. गिरनार महातीर्थ के 9 खमासमणां।

८. ''श्री रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं...'' 9 लोगस्स का काउस्सग्ग करना।

- 99 यात्रा दरम्यान 1 बार मूलनायक दादा की 108 प्रदक्षिणा / 108 खमासमणां / 108 लोगस्स का काउस्सग्ग / पूरे गिरनार गिरिवर की प्रदक्षिणा (लगभग 28 कि.मी.)
- 9 बार पहली टूंक के चौदह मंदिर का दर्शन / पूजा तथा एक बार देववंदन करना।
- दीक्षा कल्याणक तथा केवलज्ञान कल्याणक की देरी की 108 प्रदक्षिणा / 108 खमासमणा / 108 लोगस्स का काउस्सग्ग करना।
- 1 बार चौविहार छट्ठ करके सात यात्रा। जय तलेटी से कम से कम 2 यात्रा करना।
- यात्रा दरम्यान एक बार गजपदकुंड के जल से स्नान करके परमात्मा की पूजा करना।
- एक बार दादा का स्नात्र पढ़ना।
- एक बार गिरिपूजन करना।

गीत : (राग : पूजो गिरिराजने रे.....)

वंदो गिरनारने रे... पूजो गिरनारने रे...
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता नावे पार... रे...वंदो
अवसर्पिणीना छ आरे रे, विधविध नाम धरे... वंदो...

पहले आरे में कैलासगिरि, दूसरे आरे में उज्जयंतगिरि,
तीसरे आरे में रैवतगिरि, चौथे आरे में स्वर्णगिरि,
पाँचवें आरे में गिरनारगिरि और छट्ठे आरे में नंदभद्रगिरि
नाम से प्रसिद्ध है यह गिरनार !.....

गिरनार महातीर्थ यात्रा का पहला चैत्यवंदन

गढ़ गिरनार की गोद में गिरनार तरफ जाते हुए दायीं तरफ शेठ देवचंद लक्ष्मीचंद की पेढ़ी के संकुल में देखो युगादिदेव श्री ऋषभदेव (आदिनाथ) भगवान का जिनालय है।

इस जिनालय के गंभारे में मूलनायक आदिनाथ भगवान की २३ ईंच की प्रतिमा सहित आस-पास में श्वेत वर्ण के श्री अजितनाथ भगवान और श्री शांतिनाथ भगवान बिराजमान हैं। रंगमंडप के गोखले में श्री नेमिनाथ भगवान तथा श्री पार्श्वनाथ भगवान बिराजमान हैं। कोलीमंडप के गोखले में आदिनाथ भगवान के शासन के अधिष्ठायक देव गोमुखयक्ष की तथा अधिष्ठायिका चक्रेश्वरीदेवी की जेसलमेर के पीले पाषाण की प्रतिमा आमने-सामने बिराजमान हैं।

चलो ! इस जिनालय के दर्शन करके हम गिरनार महातीर्थ यात्रा का पहला चैत्यवंदन करते हैं....

स्तुति

अवसर्पिणीमां सौ प्रथम, अरिहंत पदे जे शोभता,
तीर्थतणी रचना करी, युगलाधर्म निवारता;
अज्ञानीना तिमिर टाली, ज्ञानज्योत जलावता,
ए आदिनाथने वंदता, पापो बधा दूरे जता... (२)

चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरु, विनितानो राय,
नाभिराया कुलमंडणो, मरुदेवा माय (१)

पाँचशे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल (२)

वृषभलंछन जिन वृषधरुए, उत्तम गुणमणिखाण,
तस पदपद्मसेवन थकी, लहीए अविचल ठाण (३)

स्तवन

माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मूरति,
मारुं मन लोभाणुं जी, मारुं दिल लोभाणुजी... माता...(१)

करुणा नागर करुणा सागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाऊले कांई, धनुष पांचसे मान... माता...(२)

त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजनगामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार... माता... (३)

ऊर्वशी रुडी अपच्छराने, रामा छे मनरंग,
पाये नेउर रणझणे कांइ, करती नाटारंभ... माता... (४)

तू ही ब्रह्मा तू ही विधाता, तू जगतारणहार,
तुज सरिखो नहि देव जगतमां, अरवडीया आधार..माता...(५)

तू ही भ्राता, तू ही त्राता, तू ही जगतनो देव,
सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव... माता...(६)

श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद,
कीर्ति करे माणेकमुनि ताहरी, टालो भवभयफंद... माता...(७)

थोय

शत्रुंजय मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काल,
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणु वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार

गिरनार महातीर्थ यात्रा का दुसरा चैत्यवंदन

सहसावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धारक, तपस्वी सम्राट प.पू. हिमांशुसूरीश्वरजी महाराज साहब की प्रेरणा से आज शत्रुंजय महातीर्थ की 'जय तलेटी' सदृश एक **''जय तलेटी''** निर्माण हुई है, जिसमें गिरनार की प्रथम टूंक के जिनालयों में मूलनायक के रुप में बिराजमान विविध प्रभुजी में से पाँच प्रभुजी की चरणपादुकायुक्त पाँच अलग-अलग देहरियों का निर्माण किया गया है।

मुख्य देहरी में नेमिनाथ परमात्मा तथा अन्य देहरियों में पार्श्वनाथ भगवान, संभवनाथ भगवान, अभिनंदन स्वामी तथा चन्द्रप्रभस्वामी की स्व-स्व वर्ण की चरणपादुका बिराजमान की गई है।

इस ''जय तलेटी'' में गिरनार गिरिवर के सन्मुख खड़े रहकर इस यात्रा का दूसरा चैत्यवंदन करें...

स्तुति

जे प्रभु तणा संस्मरणथी, संताप सवि मनना टले
जे प्रभु तणा दर्शन थकी, दुःख दुरित दर्द दूरे टले
जे प्रभु तणा वंदन थकी, विरमे विषयने वासना
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीशमां, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय (१)

दश धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार,
शंखलंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार (२)

शौरीपुरी नयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान,
जिनउत्तम पद पद्मने, नमता अविचल ठाम (३)

स्तवन

(राग : सिद्धाचलनो वासी... विमलाचलनो वासी...)

रैवतगिरिनो डुंगर व्हालो लागे मोरा राजिंदा,
उज्झयंतगिरिनो डुंगर व्हालो लागे मोरा राजिंदा... (१)

इण रे डुंगरीए जिन अनंता सिध्या (२)
व्रत-केवल-वली पाया मोरा राजिंदा... (२)

गत चोवीसी सागरजिन काले (२)
पडिमा इन्द्र भरावे मोरा राजिंदा... (३)

श्यामवर्ण नेमिवर सोहे (२)
मुखडुं देखी मन मोहे मोरा राजिंदा... (४)

पहेली टूंके चउद चैत्य सोहे (२)
दरिसण निरमल होवे मोरा राजिंदा... (५)

सहसावने नेमि दिक्खा नाण होवे (२)
गढ पंचम मुक्ति पावे मोरा राजिंदा... (६)

इण आलंबन कृष्ण जिनपद पामे,
थाशे अममजिन नामे मोरा राजिंदा... (७)

हेमवल्लभ वदे गिरि नित ध्यावो,
भव चोथे शिवपावो मोरा राजिंदा.... (८)

थोय

श्री नेमिजिन प्रणमी, सवि दुःख टालु,
सविजिन वंदी, अघ संचित गालु;
जिनआगमथी, जगमांहे अजवालु,
देवी अंबाई, करे रखवालु

इस जयतलेटी के रंगमंडप में देखो ! गिरनार मंडन नेमिप्रभु के शासन के अधिष्ठायक देव गोमेधयक्ष तथा अधिष्ठायिका अंबिकादेवी की प्रतिमाजी भी देहरी में बिराजमान

है, उन्हें प्रणाम !

इस तरफ की देहरी में खरतरगच्छीय आचार्य जिनदत्तसूरिजी आदि तथा पू. प्रेमचंदजी महाराज की चरण पादुका बिराजमान है उन्हें ''मत्थएण वंदामि.''

चलो ! अब इस संकुल के बाहर निकलकर ''जय जय श्री नेमिनाथ'' ''जय जय श्री नेमिनाथ'' के जयघोष के साथ हम गिरनार महातीर्थ के इस प्रवेश द्वार में कदम बढ़ायें...

जिस पवित्रतम भूमि से बालब्रह्मचारी श्री नेमिप्रभु सहित अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान और मोक्षकल्याणक हुए हैं, उस गिरिवर के प्रत्येक कदम पर कहा जाता है कि...

दुहा : एकेकुं पगलुं चढे, स्वर्णगिरिनुं जेह;
हेम वदे भवोभव तणां, पातिक थाये छेह.

चलो ! हम भी इन अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणकों के संस्मरण के रुप में ''नमो अरिहंताणं'' पद के जाप के साथ गिरिवर आरोहण करें...

मुख्य द्वार में प्रवेश करके लगभग १५-२० कदम चलकर दायीं तरफ यह पोलीस चौकी पूर्ण होते ही देखो ! सोपान शुरु हुए ! एक-एक सोपान पर

''नमो अरिहंताणं'' ''नमो अरिहंताणं'' ''नमो अरिहंताणं'' ''नमो अरिहंताणं'' ''नमो अरिहंताणं''

अरे ! पाँच सोपान पूर्ण होते ही दायीं तरफ यह देखो श्वेतवर्ण के मार्बल के पाषाण की देहरी में प्रभु की चरण पादुका बिराजमान है। हाँ ! यह देखो नेमिनाथ भगवान की पीतवर्ण के पाषाण से निर्मित चरणपादुका !

नमो जिणाणं !

चलो ! दो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर नमन करके स्तुति करके छोटा चैत्यवंदन करें...

स्तुति

रैवतगिरिना शिखर पर, प्रभु मुकुट मणी सम ओपता,
मनोहारिणी मुद्राथी भविमां, बोधिना बीज रोपता,
हैयुं छे हर्ष विभोर आजे, हवे न रही कोई झंखना,
गिरनारमंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना...

तीन खमासमण देकर अरिहंत चेइआणं सूत्र बोलकर एक नवकार का काउस्सग्ग करके...

थोय

गिरनारे गीरुओ, वहालो नेमि जिणंद,
अष्टापद उपर, पूजी धरो आनंद;
सिद्धांतनी रचना, गणधर करे अनेक,
दीवाली दिवसे, द्यो अंबा विवेक.

प्रभुजी की चरणपादुका के इस पबासण में नीचे सन्मुख मुखवाली तीर्थाधिष्ठायिका यह अंबिका देवी है। इन्हें हम दो हाथ जोड़कर प्रणाम करके प्रार्थना करें कि....

''हे माँ ! अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणकों से पवित्रतम बनी इस तीर्थभूमि के स्पंदन से हमारा यह स्पर्शन-

दर्शन-वंदन-पूजन आत्मोत्थानकारी बने ! और हमारी यह यात्रा निर्विघ्नतया पूर्ण करने में हमारे साथ रहना ! हमें सहाय करना !''

गिरनार मंडन नेमिनाथ दादा के दर्शन

• स्तुति •

जे प्रभु तणा संस्मरणथी, संताप सवि मनना टले,
जे प्रभु तणा दर्शन थकी, दुःख दुरित दर्द दूरे टले,
जे प्रभु तणा वंदन थकी, विरमे विषयने वासना,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना.... (२)

अंजनसरिखा पण निरंजन, राग द्वेष विनाशथी,
छो श्याम पण जीवन तमारुं, शोभे शुभ प्रकाशथी,
केवो विरोधाभास, तारा स्वरुपनी शी कल्पना,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना... (२)

निष्काम निर्मल निर्विकारी, नेमिनाथ नमुं सदा,
चाहुं हुं उज्ज्वल जीवनमां, लागे कलंक नहीं कदा,
अविकारता रहो दृष्टिमां, बस आटली मुज प्रार्थना,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना... (२)

हे नाथ तृष्णा अग्निए, जनमोजनम बाल्यो मने,
स्नेहाल नयनोमां डूबाडी, प्रभु तमे ठार्यो मने,
छे झंखना बस एक के, मुजने भवोभव ठारजो,
गिरनार मंडण नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना... (२)

प्रति रोममां, प्रति श्वासमां, प्रति पलकमां प्रभु तुं ज छे,
आ सृष्टिमां करुं दृष्टि ज्यां, ते दृश्यमां प्रभु तुं ज छे,
प्रति अणु अने परमाणुमां, संभलाय सूर तुज नामना,
उपकारकारी नेमिवरने, भावथी करुं वंदना... (२)

जो भी पुण्यात्मा आनंदविभोर बनकर प्रभु नेमिनाथ भगवान की अभिषेक धारा को आँख में अश्रुधारा के साथ निहारते हैं, वे विपुल प्रमाण में कर्मनिर्जरा करके शीघ्रतया शाश्वतपद के सद्भागी बनते हैं !

चलो ! हम भी इस अभिषेक को निहारें...

स्तुति

भक्तिभर्या सुधर्मइन्द्र, जाणी अवसर जन्मनो,
सविदेवदेवी साथमां, उत्सव करे महापुण्यनो;
मेरुशिखर पर आपनो, अभिषेक जे छे गुणकरो,
प्रभु ! भव्य आपनो जन्म उत्सव, आज अहींया अवतरो...
प्रभु ! भव्य आपनो जन्म उत्सव, नयन मन पावन करो...

जे जन्म समये मेरुगिरिनी स्वर्ण रंगी टोच पर,
लइ जइ तमोने देवने दानव गणो भावे सभर,
क्रोडोकनक कलशो वडे करता महा अभिषेकने,
त्यारे तमोने जेमणे जोया हशे ते धन्य छे...
आजे तमने जेमणे जोया छे ते पण धन्य छे...

छप्पन दिक्कुमरी तणी सेवा सुभावे पामता,
देवेन्द्र कर संपुट महीधारी जगत हरखावता,
मेरुशिखर सिंहासने जे नाथ जगना शोभता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं...
मारा प्रभु नेमिनाथने पंचांग भावे हुं नमुं...

गीत : (राग : आँख मारी उघडे त्यां...)

आँख मारी उघडे त्यां नेमिनाथ देखुं,
मंदिरीयामां बेठां मारा नेमिनाथ देखुं;
नेमिनाथ देखुं तो मन हरखातुं,
धन्य धन्य जीवन मारुं, कृपा एनी लेखुं...

न्हवण करीने मारा कर्मो पखालु,
चंदन विलेपी मनने शीतल बनावुं,
केशर चढावी मारा पापोने बालु,
धन्य धन्य जीवन मारुं, कृपा एनी लेखुं...

गिरनार अभिषेक स्तुति

गिरनार पर प्रभु नेमना, अभिषेकनो पावन समय,
प्रभु नेमिनाथ जिनालये, वातावरण शुभभावमय,
ते परम पावन दृश्य मारा, नेत्रने निर्मल करो,
नेमिनाथनी अभिषेक धारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

श्यामल प्रभुना मस्तके, नीरखु हुं क्षीरधारा धवल,
रोमांच अनुपम अनुभवुं, गद्‌गद् हृदय लोचन सजल,
प्रत्येक आत्मप्रदेशे नेमि, प्रीतने निश्चल करो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

अभिषेकना सुप्रभावथी, विघ्नो तणो थाओ विलय,
सर्वत्र आ संसारमां, शासन तणो थाओ विजय,
सुख शांति पामे जीव सहु, करुणा सुवासित दिलकरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

अभिषेकना सुप्रभावथी, भवतापनुं थाओ शमन,
उर केरी उखर भूमि पर, सम्यक्त्वनुं थाओ वपन;
मिथ्यात्व मोह कुवासना, कुमतितणो सवि मल हरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

अभिषेकना सुप्रभावथी, गिरनारनो जय विश्वमां,
महिमा महागिरिराजनो, व्यापी रहो आ विश्वमां,
आ तीर्थना आलंबने, भवि जीव शिव मंजिल वरो,
नेमिनाथनी अभिषेकधारा, विश्वनुं मंगल करो... (२)

ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः
(तीन बार सामूहिक बोलना)

सोने की छड़ी ! रुपे की मशाल ! जरीयन का जामा !
मोतीयन की माला ! आजु से बाजु से निगाह रखो !
जीवदया प्रतिपालक ! देवाधिदेव ! त्रण भुवनना नाथ !
वीतराग वत्सल ! ज्योति स्वरुपी ! बावीसमा तीर्थंकर !
श्री नेमिनाथ दादा नो जलाभिषेक शरु थई रह्यो छे !!!
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः
जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,
जलपूजा फल मुज होजो, मांगु एम प्रभु पास,

ॐ ह्रीँ श्री परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा !

यह देखो जलाभिषेक का प्रारंभ होते ही खंजरी, करताल, ढोलक, धुधरा, डफली, घंटनाद, शंखनादादि वाजिंत्रों से वातावरण गूंज उठा ! कोई चामर नृत्य कर रहा है ! कोई हर्ष विभोर बनकर ''जय जय श्री नेमिनाथ'' ''जय जय श्री नेमिनाथ'' के नाद से १५-२० मिनिट के लिए पूरे वातावरण को गुंजित कर रहे है !

अहो ! अहो ! अहो !

कितना दिव्य परमात्मा का अभिषेक है !

श्यामवर्ण के शिखर से जैसे चाँदी के झरने न बहते हो ! अद्‌भुत ! अवर्णनीय ! अनोखा है यह दृश्य !

यह देखो सभी की आँखों से बहती यह अश्रुधारा सभी के पापों का कैसा प्रक्षालन कर रही है !

स्तुति

प्रभु मस्तके मन मोहती, अभिषेक धारा धन्य छे !
भविपापमलने पखालनारी, नीरधारा धन्य छे !
नेमि-न्हवण नीरखी, वरसती अश्रुधारा धन्य छे !
अभिषेक उपकरण बननारा, कलशने धन्य छे !

सद्भाग्य वर उपलब्धि करता, क्षीरने पण धन्य छे !
वरक्षीर झरनारी सुमंगल, धेनुमाता धन्य छे !
झांखी करावे सुरसदननी, भक्तगणने धन्य छे !
ढोलक ने घंटारव सुमंजुल, शंखनादने धन्य छे !

गिरनार तीर्थ मल्यु मने, मुज पुण्यने पण धन्य छे !
रंगायु मनडु भावमां, प्रभुनी कृपाने धन्य छे !
भावोनी पुष्टि करावतो, गिरनार गिरिवर धन्य छे !
मुज धन्यताना मूल, नेमिनाथ दादा धन्य छे !

गिरनार महातीर्थ यात्रा का तीसरा चैत्यवंदन

अब हम हमारी इस **यात्रा का तीसरा और मुख्य ऐसा नेमिनाथ दादा का चैत्यवंदन करें...**

(इरियावही आदि करके...)

चैत्यवंदन

बावीसमां श्री नेमिनाथ, घोर ब्रह्मव्रतधारी,
शक्ति अनंती जेहनी, त्रण भुवन सुखकारी... १

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रने, वासुदेवो सर्वे
चक्रवर्तिओ नेमिने, सेवे रही अगर्व... २

कृष्णादिक भक्तो घणाए, जेनी सेवा सारे,
एवा परमेश्वर विभु, सेवंता सुख भारे... ३

स्तवन - १

(तर्ज : देशी..../तु मने भगवान)

नीरख्यो नेमि जिणंदने अरिहंताजी, राजीमती कर्यो त्याग भगवंताजी,
ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो अरिहंताजी, अनुक्रमे थया वीतराग भगवंताजी,

चामर चक्र सिंहासन अरिहंताजी, पादपीठ संयुत भगवंताजी,
छत्र चाले आकाशमां अरिहंताजी, देवदुंदुभि वर उत्त भगवंताजी,

सहसजोयण ध्वज सोहतो अरिहंताजी, प्रभु आगल चालंत भगवंताजी,
कनक कमल नव उपरे अरिहंताजी, विचरे पाय ठवंत भगवंताजी,

चार मुखे दीए देशना अरिहंताजी, त्रण गढ झाकझमाल भगवंताजी,
केश रोम श्मश्रु नखा अरिहंताजी, वाधे नहि कोई काल भगवंताजी,

कांटा पण ऊंधा होय अरिहंताजी, पंच विषय अनुकूल भगवंताजी,
षट्ऋतु समकाले फले अरिहंताजी, वायु नही प्रतिकूल भगवंताजी,

पाणी सुगंध सुर कुसुमनी अरिहंताजी, वृष्टि होय सुरसाल भगवंताजी,
पंखी दीए सुप्रदक्षिणा अरिहंताजी, वृक्ष नमे असराल भगवंताजी,

जिनउत्तम पद पद्मनी अरिहंताजी, सेवा करे सुरकोडी भगवंताजी,
चार निकायना जधन्यथी अरिहंताजी, चैत्यवृक्ष तेम जोडी भगवंताजी.

स्तवन - २

(राग : मिले मन भीतर भगवान)

नीरखी नयणा भींजाय, नीरखी नयणा भींजाय,
श्री गिरनारी नेमप्रभुने, नीरखी नयणा भींजाय,
व्हालाजीनुं मुखडु देखी, हियडे हरख न माय...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

स्वामी स्पर्शे रोमराजी, पलमां पुलकित थाय (२)
श्री जिनवरना गुणला गाता, आनंद अति उभराय...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

श्यामल वरणी देहडीने, उज्ज्वल एनी कांति (२)
अषाढ मासे घनघोर मेहे, वीज तणी ए भ्रांति...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

पदवी लही षट्जीवत्राता, आपता सौने शाता (२)
सहसावनमां साधनाए, हुआ केवलज्ञाता...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

चंदनवने सर्पनाशे, मोर तणे टहूकार (२)
श्री नेमीश्वर नाम समरता, दूर टळे विकार...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

आर्य अनार्यभूमि विहरता, जिन वचनामृत पाता (२)
श्री गिरनारनी पंचमटूंके, मुगतिपतिअे थाता...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

घेर बेठां अे गिरि ध्यावे, भवचोथे शिव जावे (२)
हेम वदे जे अे गिरि सेवे, वल्लभपदने पावे...
जिनेश्वर ! नीरखी नयणा भींजाय (२)

स्तवन - ३

(राग : जिन तेरे चरण की शरण....)

देखो माई ! अजब रुप जिनजी को... (२)
इनके आगे और सबहुं को, रुप लागे मोंहे फीको... देखो...
नयन करुणा अमृत कचोले, मुख सोहे अति निको... देखो...
कवि जसविजय कहे ए नेमजी, प्रभु त्रिभुवन टीको... देखो...

थोय

गढ गिरनारे नमुं, नेमिजिनेश्वर स्वाम,
चोवीशे जिनवर, जगतजीव विश्राम;
अमृत सम आगम, सुणीए शुभ परिणाम,
अंबिकादेवी, सारे काज तमाम.

चलो ! अब हम गिरनार महातीर्थ के खमासमण के ९ दुहे के साथ खमासमण देकर ९ लोगस्स का काउस्सग्ग करें !

रैवतगिरि समरुं सदा, सोरठ देश मोझार,
मानवभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार... १

सोरठदेशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार,
सहसावन फरश्यो नही, एनो एले गयो अवतार... २

दीक्षा-केवल सहसावने, पंचमे गढ निर्वाण,
पावनभूमिने फरशता, जनम सफल थयो जाण... ३

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार,
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार... ४

कैलास गिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत,
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत... ५

गजपद कुंडे नाहीने, मुख बांधी मुखकोश,
देव नेमिजिन पूजता, नाशे सघला दोष.... ६

एकेकु पगलु चढे, स्वर्णगिरिनुं जेह,
हेम वदे भवोभवतणां, पातिक थाये छेह... ७

उज्ज्यंत गिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद,
यदुकुलवंश उजालीयो, नमो नमो नेमिजिणंद... ८

आधि व्याधि उपाधि सौ, जाये तत्काल दूर,
भावथी नंदभद्र वंदता, पामे शिवसुख नूर... ९

(अवसर्पिणी के ६ आरे में इस तीर्थ के अनुक्रम से ६ नाम : १. कैलासगिरि २. उज्ज्यंतगिरि ३. रैवतगिरि ४. स्वर्णगिरि ५. गिरनारगिरि ६. नंदभद्रगिरि)

एक खमासमण देकर श्री रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं काउस्सग्ग करुँ ? इच्छं रैवतगिरि महातीर्थ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए ! सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामी काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि.

(९ लोगस्स का काउस्सग्ग न आए तो ३६ नवकार का काउस्सग्ग करके नमो अरिहंताणं.... बोलकर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे;
अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसंपि केवलि. ॥१॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमई च;
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे. ॥२॥

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च;
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च;
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा;
चउविसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥

कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा;
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

खमासमण देकर अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं।

हे नेमिप्रभु ! आज आपके दर्शन-वंदन-पूजन से हम पावन बनें !

प्रभु ! आपके अनंत गुणों के अनंतवें भाग के गुणों का सद्भाग्य हमें प्राप्त हो !

हे समुद्रविजय कुलचंद ! हे माता शिवादेवी नंद !
ओ निष्कारणबंधु ! ओ निष्कारण वत्सल प्रभु !
ओ त्रिभुवनवल्लभ ! ओ सविजीव पालनहार प्रभु !
आपके अमूल्य आलंबन से हमारा कल्याण हो !

- जरासंघ की जराविद्या के शिकार बने सैन्य को जरा से मुक्त करने के लिए आप स्वयं समर्थ होने के बावजूद भी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के प्रक्षालन जल के छंटकाव से सैन्य को जागृत करने की सूचना कृष्ण को देनेवाले हे नेमिप्रभु ! धन्य है आपकी निरासंशा को! धन्य है आपकी निःस्पृहता को ! प्रभु ! हममें भी इस निःस्पृहता गुण का अवतरण हो !
- जरासंघ के साथ युद्ध में तीन दिनों में खून की एक बूँद भी गिराए बिना शत्रु के सैन्य का शमन करनेवाले हे नेमिप्रभु ! धन्य है आपकी अहिंसा को ! प्रभु ! हमें भी आपके इस अहिंसा पालन गुण की प्राप्ति हो !
- यदुकुलवंश सहित अनेक आत्माओं को तारनेवाले हे नेमिप्रभु ! हममें भी सभी को तारने की तमन्नावाले

तारकता गुण का प्रगटीकरण हो !

प्रभु आपकी अमिदृष्टि से हमारी विभावदशा अंतर्धान हो ! स्वभावदशा का प्रादुर्भाव हो !

भवसमुद्र से उगारनेवाले ! तारनेवाले ! हे नेमिप्रभु ! आपके प्रभाव से अनादिकाल के भवभ्रमण की यह अंतिमयात्रा बनो !

आ भव मळीयाने परभव मळजो, सेवा तमारी भवोभव मळजो; शरणु आपनुं भवोभव मळजो, दर्शन आपना अहनिश मळजो.

इस अद्‌भुत पक्षाल की तरह इन दादा की आरती भी देखने जैसी है !

चलो ! अब हम इस तीर्थयात्रा का चौथा चैत्यवंदन इन जिनालय के पीछे आए हुए आदिनाथ भगवान के जिनालय के सन्मुख करें....

गिरनार महातीर्थ यात्रा का चौथा चैत्यवंदन

आदिनाथ का चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे,
भाव धरी जेह चढे, तेने भवपार उतारे.
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नव्वाणु ऋषभदेव, ज्यां ठवीया प्रभु पाय.
सुरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम,
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम.

स्तवन

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी जिनजी प्यारा,
आदिनाथने वंदन हमारा,
प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे अमीरस धारा,
आदिनाथने वंदन हमारा... १

प्रभुजीनुं मुखडु छे मलक मिलाकर, दिल में भक्ति की ज्योत जगाकर,
भजीले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी न आवे... जिनजी प्यारा...२

भमीने लाख चोराशी हुं आव्यो, पुण्ये दरिशन तमारा हुं पायो,
धन्य दिवस मारो, भवना फेरा टालो... जिनजी प्यारा... ३

प्रभु अमे मायाना विलासी, तमे तो मुक्तिपुरीना वासी,
कर्मबंधन कापो, मोक्ष सुख आपो... जिनजी प्यारा... ४

अरजी उरमां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तमारी,
कहे हर्ष हवे साचा स्वामी तमे, पूजन करीए अमे... जिनजी... ५

स्तुति

प्रह उठी वंदु ऋषभदेव गुणवंत;
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत;
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाले इन्द्र;
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद.

गिरनार महातीर्थ यात्रा का पाँचवां चैत्यवंदन

चलो ! अब पहले अमिझरा पार्श्वनाथ के भोंयरे में (भूखण्ड में) हम इस तीर्थयात्रा का पाँचवाँ चैत्यवंदन करें...

पार्श्वनाथ का चैत्यवंदन

जयचिंतामणी पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्टकर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी ॥१॥
प्रभु नामे आनंदकंद, सुख संपत्ति लहिए,
प्रभु नामे भवभयतणा, पातिक सवि दहिए ॥२॥
ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करी, जपीए पारस नाम,
विष अमृत थई परिणमे, लहिए अविचल ठाम ॥३॥

स्तवन

तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो, क्षण एक मुजने ना रे विसारो;
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहालो... १

लाख चोराशी भटकी प्रभुजी, आव्यो हुं तारे शरणे हो जिनजी;
दुर्गति कापो शिवसुख आपो, भक्त सेवकने निजपदे स्थापो... २

अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपालु में हाथ धर्यो छे;
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा मांहे तुं ही न्यारो... ३

पल पल समरुं नाम शंखेश्वर, समरथ तारण तुं ही जिनेश्वर;
प्राण थकी तुं अधिको वहालो, दया करी मुजने नेहे निहालो... ४

भक्तवत्सल तारुं बिरुद जाणी, केड न छोडुं एम लेजो जाणी;
चरणोनी सेवा नित नित चाहुं, घडी घडी मनमांहे हुं तो उमाहुं... ५

ज्ञानविमल तुज भक्ति प्रभावे, भवोभवना संताप समावे;
अमीय भरेली तारी मूरति निहाली, पाप अंतरना देजो पखाली... ६

स्तुति

अमीझरा पार्श्वप्रभु समरो, अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो;
जिन आगम अमृतपान करो, शासनदेवी सवि विघ्न हरो.

यह संकुल में दर्शन-चैत्यवंदन करके नीचे २. मेरकवसी की टूंक ३. सगराम सोनी की टूंक ४. कुमारपाल की टूंक के दर्शन-पूजन कर सकते हैं । फिर वापस लौटकर संकुल से बाहर निकलकर ५. मानसंग भोजराज का मंदिर ६. वस्तुपाल-तेजपाल का मंदिर ७. गुमास्ता का मंदिर ८. संप्रति महाराजा का मंदिर ९. ज्ञानवाव का मंदिर १०. चंद्रप्रभ की टूंक, गजपद कुंड ११. धरमशी हेमराज का मंदिर १२. मल्लवाला मंदिर १३. चौमुखजी मंदिर १४. रहनेमि के मंदिर में भी दर्शन-पूजन कर सकते हो । वहाँ से पांचवी टूंक मोक्षकल्याणक भूमि की भी स्पर्शना करके वापस लौटकर सहसावन दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणकभूमि की ओर जा सकते हो ।

सहसावन कल्याणकभूमि

सहसावन का मुख्य नाम **''सहस्राम्रवन''** है! उसका अर्थ सुनो ! सहस्र अर्थात् हजार, आम्र अर्थात् आम (केरी) और वन अर्थात् जंगल अर्थात् हजारों आम के वृक्षों का वन ! परन्तु कालक्रम से शब्द का अपभ्रंश होते-होते आज वह **''सहसावन''** के नाम से प्रसिद्ध है । उसमें भी अन्यधर्मी पुण्यात्मा तो उसे **''शेषावन''** कहते हैं ।

हजारों आम के घटादार वृक्षों से घिरे हुए इस स्थल की रमणीयता तन-मन को अनोखी शीतलता की अनुभूति करवाती है।

आज भी यह भूमि मोर तथा कोयल की मधुर ध्वनि से गूंज रही है।

इस पावनभूमि ने नेमिप्रभु तथा उनसे पूर्व हुए अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा अवसर के उछलते वैराग्यरस से भरे हुए अणु परमाणुओं को आज भी वातावरण में संभालकर रखा है।

इस पावनभूमि में नेमिप्रभु सहित अनंत तीर्थंकर परमात्मा के केवलज्ञान कल्याणकों का पुनित प्रकाश आज भी भव्यात्माओं के अंतर में पड़े मिथ्यातामस को दूर करके सम्यक्त्व की साधना का स्पर्श करवा रहा है।

कैवल्यलक्ष्मी की प्राप्ति होते ही करोड़ों देवताओं के द्वारा रचित समवसरण में देशना देते चोत्रीस अतिशय युक्त प्रभुजी की वाणी के शब्दों के तरंगों से होते गुंजन की आज भी अनुभूति होती है। यह सहसावन तो **''हार्ट ऑफ ध गिरनार''** है।

आत्मन् !

इतनी भव्य और दिव्यभूमि होने के बावजूद भी कई वर्षों से इस सहसावन की पावनभूमि के प्रति उपेक्षा हो रही थी। पहली टूंक से यहाँ तक आने का पगदंडी का मार्ग भी विकट था। कोई भी जैन यात्रिक इस पवित्रतम कल्याणक भूमि की स्पर्शना करने का साहस नहीं करते थे।

वर्तमान चोवीसी के २४ तीर्थंकर परमात्मा के १२० कल्याणकों में से ११७ कल्याणक पूर्व भारत में हुए हैं और मात्र तीन कल्याणक पश्चिम भारत में तथा वे भी गुजरात सौराष्ट्र में रहे इस गिरनार पर हुए हैं। कई सदियों से साधु-साध्वी के विचरण विशेषरुप से गुजरात में होने के बावजूद भी इन तीन कल्याणक भूमि की स्पर्शना से सकल श्री संघ वंचित रहा...

चलो ! इस दूसरे रंगमंडप में काष्ठ के समवसरण में बिराजमान प्राचीन चौमुखजी के दर्शन करते हुए कहें... **''नमो जिणाणं'' ''नमो जिणाणं''**

देखो ! देखो ! इस रंगमंडप में दोनों तरफ प्रभु के अठारह गणधर भगवंतों की प्रतिमाजी भी बिराजमान है, उन्हें भी नमन करते जायें !

''मत्थएण वंदामि'' ''मत्थएण वंदामि''

यह देखो ! उत्तराभिमुख रंगमंडप में आमने-सामने

हमारी दायीं तरफ गोखले में मुख्य श्यामवर्णीय श्री नेमिनाथ तथा उनके परिकर में अतीत चौबीसी में यहाँ से मोक्ष में गए हुए १० प्रभुजी हैं ! तथा बायीं तरफ के गोखले में यहाँ से मोक्ष में जानेवाले अनागत चौबीसी के प्रथम पद्मनाभ भगवान मुख्य है। उनके परिकर में बाकी के २३ भगवान हैं। वे सब पूजनीक हैं। अतीत तथा अनागत चौबीसी के यहाँ से मोक्ष में गए हुए प्रभुजी की प्रतिमायें ! सभी भगवान को **''नमो जिणाणं''** प्रभुवीर के अनन्यभक्त श्रेणिक महाराजा की आत्मा अनागत चौबीसी में श्री पद्मनाभ नामक प्रथम तीर्थंकर बनकर इसी

गिरनार से मोक्षगमन करेंगे ! उनकी यह प्रतिमा है।

समवसरण को प्रदक्षिणा देकर इस उत्तराभिमुख संप्रतिकालीन प्रभुजी सन्मुख चैत्यवंदन करें...

स्तुति

श्यामल छबी प्रशमार्द्र नयनो, रुप आ रळियामणुं,
मुखडुं मनोहर आकृति, रमणिय स्मित सोहामणु;
आ सर्व अंतिम समयमां, मुज नयनमां अवतारजो,
हे नेमिनाथ जिनेन्द्र, मारी प्रार्थना स्वीकारजो... (२)

चैत्यवंदन

गिरि गिरनार जई वसे, जैसे नेमकुमार,
कनकभूमि करी देवता, भक्ति करे मनोहार... १

एक प्रतिमा वज्रनी, एक कंचन केरी,
एक प्रतिमा रत्न, मणिमय भलेरी... २

काले सज्जन बहु मिल्याए, जेणे कीधो उद्धार,
नेमिनाथ बेठा तिहां, कंठे रयण मनोहार... ३

स्तवन

(राग : ओघो छे अणमूलो... + एक प्यार का नगमा...)

(१)

मैं आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया,
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुल आया;
कर्मों के फंद छुडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया,
जिने तोडी जगत की माया (२).... मैं आज...

रैवतगिरि मंडनराया, कल्याणक तीन सोहाया,
दीक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया;
तुम बैठे ध्यान लगाया (२)... मैं आज...

अब सुनो त्रिभुवनराया, मैं कर्मों के वश आया,
मैं चतुर्गति भटकाया, मैं दुःख अनंता पाया,
ते गिनति नाही गिनाया (२)... मैं आज...

मैं गर्भावास में आया, ऊंधे मस्तक लटकाया,
आहार अरस विरस भुगताया, एम अशुभ करम फल पाया;
इण दुःख से नाहि मुकाया (२)... मैं आज...

नरभव चिंतामणी पाया, तब चार चोर मिल आया,
मुझे चौटे में लूट खाया, अब सार करो जिनराया;
किस कारण देर लगाया... (२) मैं आज...

जिणे अंर्तगत में लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया,
दुःख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया;
फिर संसारे नहीं आया (२)... मैं आज...

मैं दूर देश से आया, प्रभु चरणे शीश नमाया,
मैं अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया;
एम वीरविजय गुणगाया (२)... मैं आज...

(२) वो काला सहसावन

वो काला सहसावनवाला (२), सुध बिसरा गया मोरी रे (२)
शिवादेवी नंदकिशोर जो (२), कर गयो रे, कर गयो रे, कर गयो
मन की चोरी रे..... सुध

कालो काजल अखियन सोहे, काले बादल में ज्युं जल होवे (२)
सुरभि सुहागन सुंदर सोहे (२), काली भयी कस्तुरी रे... सुध

काली कीकी काला तिल है, कालोदधि का काला जल है (२)
वैसी ही काली सुरत तोरी (२), मैं तो गया बलिहारी रे... सुध

कनक कसौटी पत्थर कालो, कालो कनैयो जशोदा को लालो (२)
जो काले ने राजुल तारी (२), जय जय जय गिरनारी रे... सुध

थोय

गिरनारे गिरुओ, वहालो नेमि जिणंद,
अष्टापद उपर, पूजी धरो आनंद;
सिद्धांतनी रचना, गणधर करे अनेक,
दिवाली दिवसे, द्यो अंबा विवेक

चलो ! नीचे उतरकर इस समवसरण की बायीं तरफ जायें ! यह देखो ! पू.आ. हिमांशुसूरि महाराज साहेब के पूज्यों की प्रतिकृति तथा चरण पादुका !

''मत्थएण वंदामि'' ''मत्थएण वंदामि''

यह देखो ! नीचे गुफा है ! अरे ! यह शंख गुफा देखो! गुफा में अंदर आते समय सिर पर न लगे उसका ध्यान रखना! नीचे झुककर आना ! **''नमे ते प्रभुने गमे''** ''जो झुकता है वह प्रभु को पसंद आता है'' यहाँ पर ११ ईंच के श्यामवर्णीय श्री नेमिनाथ भगवान जो अत्यंत मनमोहक हैं, उनके दर्शन करो। ''नमो जिणाणं''

इस गुफा में अनेक महात्माओं ने छट्ठ-अट्ठम-आयंबिलादि अनेकविध तपाराधना के साथ आत्मकल्याणकारी विशिष्ट जाप की आराधना की है।

चलो ! हम भी इस पावन भूमि की ऊर्जा प्राप्त करने के लिए जाप करें।

''ॐ ह्रीँ अर्हं श्री नेमिनाथाय नमः'' (३ बार)

चलो ! इस जिनालय से बाहर निकलते ही वहाँ सामने देखो ! यहाँ दर्शन-पूजन के लिए आते जैन श्वेतांबर यात्रिकों के लिए भाते की व्यवस्था रखी गयी है। अब इस संकुल से बाहर निकलकर हम नीचे उतरें...

यह १५ सोपान उतरने पर दायीं तरफ देखो !

यह है सहसावन कल्याणकभूमि तीर्थोद्धारक, तपस्वी सम्राट परम पूज्य आचार्य हिमांशुसूरीश्वरजी महाराजा की अंतिम संस्कारभूमि ! उपर दूर जो टूंक दिख रही है वह है नेमिनाथ भगवान की मोक्षकल्याणकभूमि ! याने पांचवी टूंक !

चलो यहाँ से दर्शन - चैत्यवंदन कर लेते है **''नमो जिणाणं''**

मोक्षकल्याणक भूमि का चैत्यवंदन

राजुल वर श्री नेमिनाथ, शामळियो सारो;
शंख लंछन दस धनुष देह, मनमोहन गारो. १

समुद्र विजय राय कुळतिलो, शिवादेवी सुत प्यारो;
सहस्त्र वरसनुं आउखुं, पाळी सुखकारो. २

गिरनारे मुक्ति गया ए, शौरीपुरी अवतार;
'रुपविजय' कहे वालहो, जगजीवन आधार. ३

(५) राग : सिद्धारथना रे नंदन... / वैष्णवजन तो तेने रे...

नेमि जिनेश्वर निज कारज कर्यो, छांड्यो सर्व विभावोजी;
आतम शक्ति सकळ प्रगट करी, आस्वादो निज भावोजी (१)

राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतोजी;
उत्तम संगे रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतोजी... (२)

धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते वीजाती अग्राह्योजी;
पुद्गल ग्रह वेरे कर्म कलंकता, वाधे बाधक बाह्योजी... (३)

रागी संगे रे राग दशा वधे, थाए तिणे संसारोजी;
निरागीथी रे रागनो जोडवो, लहीये भवनो पारोजी... (४)

अप्रशस्ततारे टाळी प्रशस्तता, करवा आश्रव नासेजी;
संवर वाघेरे साथे निर्जरा, आतम भाव प्रकाशेजी... (५)

नेमि प्रभु ध्याने एकत्वता, निज तत्त्वे इक तानोजी;
शुकल ध्याने रे साधी सुसिद्धता, लहिये मुक्ति निदानोजी... (६)

अगम अरुपीरे अलख अगोचरु, परमातम परमीशोजी;
देवचंद जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशोजी (७)

थोय

गढ गिरनारे नमुं, नेमिजिनेश्वर स्वाम,
चोवीशे जिनवर, जगतजीव विश्राम;
अमृत सम आगम, सुणीये शुभ परिणाम,
अंबिकादेवी, सारे काज तमाम.

यह देखो ! अंतिम संस्कारभूमि के स्थान पर पूज्यश्री की प्रतिकृति तथा चरणपादुका ! **''मत्थएण वंदामि''**

चलो ! इस समाधि-स्थान को तीन प्रदक्षिणा देकर गुरुवंदन करें.... !

इस महापुरुष के जीवन का भी स्पर्श करने जैसा है।

पूज्यश्री के जीवन में साधिक ३०५० उपवास तथा ११५०० से भी अधिक आयंबिल तप की आराधना अनेक वैविध्यपूर्वक हुई थी। जिसकी एक झलक निहारें....

३० उपवास - १ बार	१७ उपवास - २ बार	९ उपवास - ३ बार
२४ उपवास - २ बार	१६ उपवास - २ बार	८ उपवास - ८ बार
२३ उपवास - २ बार	१५ उपवास - २ बार	७ उपवास - ३ बार
२२ उपवास - २ बार	१४ उपवास - २ बार	६ उपवास - ५ बार
२१ उपवास - २ बार	१३ उपवास - २ बार	५ उपवास - ५ बार
२० उपवास - २२ बार	१२ उपवास - २ बार	४ उपवास - ६ बार
१९ उपवास - २ बार	११ उपवास - २ बार	३ उपवास - ५५ बार
१८ उपवास - २ बार	**१० उपवास - २ बार**	**२ उपवास - २१० बार**

१ उपवास - १३५० से अधिक बार

पूज्यश्री की तपाराधना पढ़कर कई जीवों के मुख से अहो... आश्चर्यं ! अहो... आश्चर्यम् के उद्‌गार सहजता से निकल पड़ते हैं... और हाँ ! ऐसे घोर तप में भी पूज्यश्री की निराशंसा और निरतिचारता तो अभी सुनने जैसी है !

- आजीवन निर्दोष भिक्षाचर्या के आग्रह के साथ विकट परिस्थिति में भी मात्र रोटी तथा पानी, कच्चे पोहे तथा पानी, मात्र खाखरा तथा पानी से भी हजारों आयंबिल

करते थे। अरे ! विहार में निर्दोष भिक्षा मिलना संभवित नहीं होता तब अट्ठाई तक का तप भी कर लेते...

- एक बार गिरनार महातीर्थ की ९९ यात्रा कर रहे थे... लगभग ५९ यात्राएं हो गयी थीं। दूसरे दिन सुबह १६ उपवास के पच्चक्खाण करके पहले १० उपवास में गिरनार की ४० यात्रायें करके ९९ यात्रा पूर्ण की और ११ वें उपवास में विहार शुरु करके सिद्धगिरि की छत्रछाया में पहुँचकर मासक्षमण पूरा किया... पारणे के दिन सिद्धगिरि की यात्रा करके दादा के दर्शन करके घेटी पाग के रास्ते से दोपहर में उतरकर लगभग साढ़े तीन बजे उनके पुत्र महाराज आ. नररत्न-सूरीश्वरजी सुबह १०.०० बजे वहोरकर लाए हुए निर्दोष मूंग के ठंडे पानी से आयंबिलपूर्वक पारणा किया... धन्य है उनके सत्व को ! धन्य है उनके मनोबल को ! सहज नतमस्तक वंदन हो जाये वैसा जिनशासन का यह आभूषण था।

पूज्यश्री...
प्रभु आज्ञा के आधीन थे...
जीवन में सादगी के सदाग्रही थे...
अनेक संघविखवाद के नाशक थे...

संघहितार्थे घोर अभिग्रह के धारक थे...

वृद्धावस्था में भी संघऋणमुक्ति के लिए जिनवाणी के उपदेशक थे...

जीवनसंध्यापर्यंत अध्ययन अध्यापन के चाहक थे...

अनेक जीवों के जीवन में आयंबिल तप के बीजारोपक थे...

कईयों के तारणहार थे...

उत्सर्गमार्ग के आचरण में उत्साही थे...

सभी पर वात्सल्य बरसानेवाले थे...

दुष्करतपकारक थे...

दृढमनोबल धारक थे... देहदमनकारक थे...

इस तरह अनेकविध गुणभंडार ऐसे पूज्यश्री के जीवन को जानना हो, पहचानना हो तो **''बींसवीं सदी की विरल विभूति''** नामक स्मृतिग्रंथ एक बार तो अवश्य पढ़ने जैसा है।

पूज्यश्री ने जीवन की अंतिम साँस गिरनार की छत्रछाया में स्थित जूनागढ़ के उपाश्रय में ली थी। पूज्यश्री ने नेमिनाथ दादा और गिरनार के साथ ऐसी एकमेकता हासिल की थी कि उनकी अंतिम भावना सहसावन में आने की थी। वह पूर्ण करने के लिए किसी चमत्कार का सर्जन हुआ। चारों

तरफ वनविस्तार तथा पहाड़ की ऊँचाई के कारण उनके पार्थिव देह का अंतिम संस्कार सहसावन में करना असंभव लग रहा था। फिर भी उनके संकल्पबल और दिव्य प्रभाव से ''न भूतो न भविष्यति'' ऐसा आश्चर्य हुआ ! पूज्यश्री के पार्थिवदेह के अंतिम संस्कार का कार्य इस भूमि पर संपन्न हुआ।

आज भी पूज्यश्री की अंतिम संस्कार की इस सहसावन की भूमि के दर्शन एवं स्पर्शन करके संकल्प करनेवाले अनेक भव्यात्माओं के तपधर्म के अंतराय टूटते हैं। अरे ! जो जहाँ हो वहाँ बैठे-बैठे भी उनका जाप अथवा नामस्मरण करता है, उसके तप के सर्व विघ्न दूर होने के अनेक दृष्टांत मिलते हैं।

लगभग ३० सोपान उतरने पर देखो ये दो रास्ते आयें। **इस गिरनार की यात्रा का हृदय (Heart) तो यह कल्याणकभूमि है ! इस भूमि के स्पर्श के बिना तो गिरनार की यात्रा अधूरी ही गिनी जाती है।** हम पहले दायीं तरफ के रास्ते में नेमिप्रभु की दीक्षा तथा केवलज्ञान कल्याणकभूमि के दर्शन-स्पर्शन और भक्ति करेंगे।

३० सोपान उतरने पर बायीं तरफ देखो ! हाल ही में गिरनार के जीर्णोद्धार अंतर्गत अत्यंत जीर्ण बनी केवलज्ञान

कल्याणक की देहरी का जीर्णोद्धार हुआ है । श्वेतवर्णीय संगेमरमर के पाषाण से नवनिर्मित उज्ज्वल यह देहरी कितनी सुंदर लग रही है ! ''नमो जिणाणं''

पहले हम यहाँ से भी नीचे अन्य १०-१५ सोपान उतरकर इस आश्रम के कमरे की बायीं तरफ आयी हुई दीक्षा कल्याणक की भूमि पर जाकर आराधना कर लें !

आत्मन् ! कल्याणक का मतलब तुम जानते हो ?

सुनो ! कल्याणक अर्थात् कल्याण करे वह कल्याणक ! हाँ ! आत्मा का कल्याण करे अर्थात् आत्मा को हितकारी, लाभकारी, सुखकारी बने उस घटना को कल्याणक कहा जाता है ।

जिनेश्वर परमात्मा संबंधी ऐसी पाँच घटनायें हैं, जो सभी जीवों के लिए कल्याणकारी हैं, वे हैं -

जिनेश्वर परमात्मा की आत्मा का च्यवन ! अर्थात् देवलोक अथवा नरकलोक का आयुष्य पूर्ण करके चारों गति के च्यवन से हमेशा के लिए छुटकारा पाना, वह है च्यवन कल्याणक !

अनादिकाल के भवभ्रमण के दौरान गर्भावास में रहकर अनंत जन्म किए, उन जन्मों की परंपरा से छुटकारा

पाना, वह है जन्म कल्याणक!

अनंत जन्म लेकर संसार के भोग सुखों की जंजाल में फँसे, उस गृहवास का हमेशा के लिए त्याग, वह है दीक्षा कल्याणक !

अनंत भवभ्रमण के दौरान ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतरायकर्म रुपी घाती कर्मों के पाश में बंधकर भवों की परंपरा बढ़ाई। उस घातीकर्मावास से सदा के लिए छुटकारा, वह है केवलज्ञान कल्याणक !

अनादिकाल के भवभ्रमण में नचानेवाले ऐसे नाम, गोत्र, वेदनीय और आयुष्यकर्मरुपी अघाती कर्मावास के बंधन से मुक्त होना, वह है मोक्ष अथवा निर्वाणकल्याणक !

आत्मन् !

प्रभु के प्रत्येक कल्याणकों की घटना का काल तो मात्र कुछ समय का ही होता है। परन्तु उन घटनाओं के घटने मात्र से अर्थात् किसी भी व्यक्ति के द्वारा कोई भी प्रयास-पुरुषार्थ या प्रयत्न के बिना मात्र तीर्थंकर परमात्मा के प्रचंड पुण्य के प्रभाव से ही इस घटना के समय जो चमत्कार होते हैं, वे खास जानने जैसे हैं।

- एक तेजस्वी द्रव्य कहाँ तक प्रकाश फैला सकता है ?

मोमबत्ती २-४ फुट ! फानस १०-१२ फुट ! जीरो बल्ब २०-२५ फुट ! २०० पॉवर का बल्ब २००-३०० फुट ! हेलोझन लाईट १५००-२००० फुट ! सोडीयम लाईट १५-२० हजार फुट ! आधुनिक एस्ट्रोनोमि (खगोलशास्त्र) की परिभाषा में एक चन्द्र लाखों प्रकाश वर्ष !

एक सूर्य करोड़ प्रकाश वर्ष !

एक तारा अरब प्रकाश वर्ष जितने अति दूर प्रदेशों से इस पृथ्वी पर प्रकाश फैलाते हैं !

आत्मन् ! इससे विशेष दूर कोई प्रकाश फैला सकता है ?

हाँ ! **जिनेश्वर परमात्मा के कोई भी एक कल्याणक के एक मात्र अंश के प्रभाव से उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्च्छालोक, इस तरह तीनों लोक में अर्थात् समग्र सृष्टि पर क्षणभर के लिए प्रकाश फैल जाता है ।**

- आत्मन् ! सैंकड़ों लोगों के साथ लड़ने की शक्ति १ योद्धा में होती है ! ऐसे १२ योद्धाओं से विशेष शक्ति १ बैल में होती है ।

१० बैल से विशेष शक्ति १ घोड़े में होती है ।

१० घोड़े से विशेष शक्ति १ पाडे में होती है ।

१० पाडे से विशेष शक्ति १ हाथी में होती है ।

५०० हाथी से विशेष शक्ति १ सिंह में होती है।

२००० सिंह से विशेष शक्ति १ अष्टापद नामक प्राणी में होती है।

१० लाख अष्टापद से विशेष शक्ति १ बलदेव में होती है।

२ बलदेव से विशेष शक्ति १ वासुदेव में होती है।

२ वासुदेव से विशेष शक्ति १ चक्रवर्ती में होती है।

१० लाख चक्रवर्ती से विशेष शक्ति १ वैमानिक इन्द्र में होती है।

आत्मन् !

ऐसे ६४-६४ इन्द्रों के सिंहासन भी जिनेश्वर परमात्मा के एक कल्याणक के मात्र एक अंश के प्रभाव से एक साथ कंपित होने लगते हैं।

आत्मन् ! अनंत इन्द्र से भी विशेष शक्ति तीर्थंकर परमात्मा की कनिष्ठ अंगुली मात्र में ही होती है। तुम्हें याद है ? कभी सुना होगा कि...

मेरुपर्वत पर जन्माभिषेक के अवसर पर प्रभु वीर को कोई तकलीफ तो नहीं होगी न ! ऐसा संशय सौधर्म इन्द्र को हुआ तब प्रभु ने अवधिज्ञान के उपयोग से इन्द्र की इस द्विधा का निवारण करने के लिए पाँव के अंगूठे से मेरुपर्वत को कंपित

किया था।

जबकि प्रभु के कल्याणक के अवसर पर तो इन इन्द्रों के सिंहासन प्रभु के पुण्य प्रभाव मात्र से कंपित होते हैं।

एक तीर्थंकर परमात्मा के एक कल्याणक के एक मात्र अंश के प्रभाव से एक साथ असंख्य जीवात्माओं की पापराशि को उखाड़कर पुण्यराशि से आत्मा का उत्थान, पुनः उत्थान और परम उत्थान करने की प्रचंड शक्ति होती है ! कल्याणक की कितनी प्रचंड शक्ति !

आत्मन् ! यदि अरिहंत प्रभु के एक मात्र कल्याणक के एक मात्र अंश की ऐसी अपरिमित शक्ति है तो संपूर्ण एक कल्याणक की शक्ति कितनी ? अनंती न !

एक प्रभु के एक कल्याणक में अनंतशक्ति है तो उनके पाँचों कल्याणकों की सामर्थ्यता कितनी ? अनंती न !

एक प्रभु के पाँचों कल्याणकों में अनंत शक्ति है तो अनंत तीर्थंकर प्रभु के अनंत कल्याणकों में कितनी सामर्थ्यता ? अनंतानंत न!

आत्मन् ! ये सभी शक्तियाँ बुद्धि से समझी नहीं जा सकती। परन्तु अनुभव में समझी जाती हैं। उसके लिए समय-साधना और सत्त्व की जरुरत है। कल्याणक दिन की

आराधना, कल्याणक भूमि की स्पर्शना, कल्याणक प्रसंग का ध्यानादि आराधना एकाग्रचित्त से, भक्तिभाव से, एकाकार होकर की जाये तो परमात्मा के साथ संबंध के नाते आत्मप्रदेशों के द्वारा परमात्मा के कल्याणकों के अणु परमाणुओं की स्पर्शना की जा सकती है। हमारी पात्रता के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। अकथ्य और अकल्पनीय आत्मानंद से जीव आनंदविभोर हो जाते हैं। आज का सायन्स भी असंख्य वर्षों तक अणु परमाणु की उपस्थिति रहती होने का साबित करता है। आज भी इन कल्याणक भूमिओं में प्रभु के कल्याणक अवसर के अणु परमाणु वातावरण में वैसे ही पड़े हैं। जरुरत है मात्र हमारी आंतरिक दृष्टि के खुलने की। हाँ! आंतरिकदृष्टि खुलते ही आत्मार्थी आत्मायें अनुभूति का आस्वादन करने में समर्थ बनती हैं।

कर्मवश यदि ऐसी विशेष अनुभूति न भी हो तो भी उन अणु परमाणुओं की स्पर्शना के प्रभाव से अगम्य आनंद की अनुभूति का आस्वादन अवश्य होगा। अनादिकालीन मिथ्यात्व की ग्रंथी के भेद से निर्मल सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी। बहुमानभाव से प्रभु के गुणों की अंशात्मक प्राप्ति होगी।

आत्मन्! भद्रबाहुस्वामी ने बृहत्कल्पभाष्य में स्पष्ट

लिखा है कि ऐसी कल्याणकभूमियों की स्पर्शनादि से सम्यक्त्व न हो उसे प्राप्त होता है और जिसे हो उसका सम्यक्त्व दृढ बनता है। सम्यक्त्व आए तो अवश्य मोक्ष होता ही है !

आत्मन्! ऐसे अनंत तीर्थंकर भगवंतों के दीक्षा-केवल-मोक्षकल्याणक से पवित्र भूमि है यह गिरनार! इसकी स्पर्शना से हम धन्य बन गए !

यह देखो ! यह आयी नेमिप्रभु की दीक्षाकल्याणक भूमि !

यहाँ नेमिप्रभु और अन्य भी अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षाकल्याणक के अवसर के वैराग्यरस से आर्द्र पवन हमारे प्रत्येक रोम को रोमांचित कर रहा है।

यह देखो ! जंगल में साधको को सुरक्षित रुप से

साधना करने के लिए इस स्थान को चारों तरफ से बंद कर दिया गया है। अंदर देखो! श्वेतवर्णीय संगेमरमर के पाषाण की यह नवनिर्मित देहरी कितनी अद्‌भुत लग रही है। देहरी में श्वेतवर्णीय आरस के पुष्पाकार पबासण पर श्यामवर्णीय प्रभु की चरणपादुका कितनी सुंदर लग रही है। ''नमो जिणाणं''

चलो ! तीन प्रदक्षिणा देते हैं।

दीक्षा कल्याणक भूमि का चैत्यवंदन

स्तुति

जे भोगना काले अनुपम योग ने साधी गया,
वनिताना संगम कालमां, विरति शुं प्रीत बांधी गया;
महासत्त्वशाली शिरोमणी, प्रभु सत्त्वनी करुं याचना,
गिरनारमंडन नेमिजिनने, भावथी करुं वंदना... (२)

चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीसमा, अपराजितथी आय;
सौरीपुरमां अवतर्या, कन्या राशि सुहाय... १

योनि वाघ विवेकीने, राक्षस गण अद्‌भुत;
रिखा चित्रा चोपन दिन, मौनवता मनपूर... २

वेतक्ष हेठे केवलीए, पंचसया छत्रीश
वाचंयमशुं शिववर्या, वीर नमे निरादिश... ३

स्तवन

(तर्ज : अेवी डुंगरे-डुंगरे ददानी देरीयों...)

द्वारापुरीनो नेम राजियो, तजी छे जेणे राजुल जेवी नार रे,
गिरनारी नेम संयम लीधो छे बाला वेशमां... १
मंडप रच्यो छे मध्यचोकमां, जोवा मलिया छे द्वारापुरीना लोक रे... २
भाभीए मेणामार्या नेमने, परणे व्हालो श्री कृष्णनो वीर रे... ३
गोखे बेसीने राजुल जोइ रह्या, क्यारे आवे जादवकुलनो दीप रे... ४
नेमजी ते तोरण आवीया, सुणी कंइ पशुनो पोकार रे... ५
सासुए नेमजीने पोंखीया, व्हालो मारो तोरण चढ़वा जाय रे... ६
नेमजीए सालाने बोलावीया, शाने करे छे पशुडा पोकार रे... ७
राते राजुल बहेन परणशे, सवारे देशुं गोरवना भोजन रे... ८
पशुए पोकार कर्यो नेमने, उगारो व्हाला राजीमती केरा कंत रे... ९
नेमजीए रथ पाछो वालीयो, जइ चढ्या गढ गिरनार रे... १०

राजुल बेनी रुवे धुसके, रुवे रुवे काइ द्वारापुरीना लोक रे... ११
वीराए बेनीने समजावीया, अवर देशु नेम सरीखो भरथार रे... १२
पीयु ते नेम एक धारीया, अवर देखु भाईने बीजा बाप रे... १३
जमणी आँखे श्रावण सरवरे, डाबी आँखे भादरवो भरपुर रे... १४
चीर भींजाय राजुल नारीना, वागे छे कांइ कंटको अपार रे... १५
नेम तीर्थंकर बावीसमां, सखीयो कहे ना मले एनी जोड रे... १६
हीरविजय गुरु हीरलो, लब्धि विजय कहे करजोड रे... १७

थोय

राजुल वरनारी, रुपथी रतिहारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी,
पशुआ उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवलसिरि सारी, पामीया घातीवारी...

आत्मन् ! चलो ! आँख बंद करके, हजारों वर्ष पूर्व हुए प्रभु के दीक्षा कल्याणक अवसर के दृश्य को मानसपट पर लाकर प्रभु के दीक्षाकल्याणक निमित्त से जाप करके प्रभु के दीक्षा के अवसर के भाव का स्पर्श करें....

''ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथ नाथाय नमः''

प्रभु ! जन्म से ही विषयों में अनासक्त होने के बावजूद

भी परिवारजनों के आग्रहवश उग्रसेन महाराजा की राजकन्या राजुल के साथ विवाह करने के लिए आपका रथ लग्न के मंडप के समीप पहुँच रहा था... उतने में ही निकट में रहे पशुओं के वाडे से पशुओं का करुण आक्रंद आपने सुना... सारथि से यह हकीकत जानी कि उनका वध करके लग्न में आए हुए मेहमानों के भोजन में इनका उपयोग किया जाएगा.....

प्रभु ! आप अतिव्यथित हुए। मेरे विवाह के निमित्त से इतने जीवों का बलिदान लिया जाएगा ?

प्रभु ! आप निर्दोष, अशरण और असहाय ऐसे इन दुःखमय और पापमय जीवों की महादारुण स्थिति सहन नहीं कर पायें।

प्रभु ! इन निर्दोष पशुओं के साथ-साथ आपने इस जगत के सर्व जीवों को अशरण ! असहाय ! दुःखमय और पापमय ! देखा और जाना ! करुणा से आर्द्र बना आपका अंतर द्रवित हो उठा !

प्रभु ! अशरण, असहाय, दुःखमय और पापमय ऐसे इन जीवों को दुःखयुक्त, पापयुक्त और जन्म-मरण के चक्करवाले इस भवसंसार से मुक्त करवाने के लिए आपको संयमग्रहण का एक ही उपाय सूझा।

प्रभु ! आपने संसार के शणगार का त्याग करके अणगार के शणगार को सजकर जीव मात्र के प्रति करुणा की भावना का सेवन करके प्रकृष्ट पुण्योपार्जन के द्वारा इन जीवों को तारने का दृढ़ संकल्प किया...

प्रभु ! दीक्षा दिन पर्यंत के शेष एक वर्षीय कर्मकाल के आपके भोगावली कर्म निर्मूल हुए... अंतःमुहूर्तकाल आत्मप्रदेशों में अनोखे आनंद का अविरत प्रवाह बहता है... नौ लोकांतिक देवों के आसन एक साथ चलायमान होते हैं... अवधिज्ञान के द्वारा प्रभु ! वे आपके शेष एक वर्षीय कर्मकाल के भोगावली कर्मों के सर्वथा क्षय से विज्ञात होते हैं... वे स्व-आचार के अनुसार शीघ्र आपके पास पहुँच जाते हैं और आपको तीर्थप्रवर्तन के लिए हाथ जोड़कर विनंती करते हैं।

प्रभु ! आपने अवधिज्ञान के माध्यम से भोगावली कर्म-चारित्रावरणीय कर्म की अवधि को जानकर मंगल स्वरुप वार्षिकदान देना प्रारंभ किया... अनेक भव्यात्माओं का द्रव्य और भाव दारिद्रय दूर किया।

वर्ष के अंत में श्रावण सुद पांचम के महामंगलकारी दिन में आप शिबिका में आरुढ़ हुए और आपका भव्यातिभव्य दीक्षा का वरघोड़ा निकला...

प्रभु ! आपके तीव्रतम वैराग्य को देखकर आपके २८ पित्राई भाई, श्री कृष्ण के ८ पुत्र, बलदेव के ७२ पुत्र, श्रीकृष्ण के ५६३ भाई, उग्रसेन राजा के ८ पुत्र, देवसेनादि १००, २१० यादव पुत्र, ८ बड़े राजा, अक्षोभकुमार, १ अक्षोभपुत्र तथा वरदत्तकुमार इस तरह एक हजार राजकुमार भी आपके साथ प्रव्रज्या के पंथ पर चलने के लिए निकल पड़े...

प्रभु ! अनंत भव्यात्माओं को संयम जीवन का दान देकर तीर्थंकरपद पर्यंत पहुँचानेवाले ऐसे गढ़ गिरनार की इस पावनतम भूमि पर आप पधारे...

शिबिका से उतरकर प्रभु ! आप यहीं इसी वृक्ष के नीचे ही रुके होंगे ?

प्रभु ! एक हजार राजकुमारों के साथ आपकी प्रव्रज्या की पावनतम प्रक्रिया का प्रारंभ इसी भूमि पर हुआ होगा ?

प्रभु ! सर्व वस्त्राभूषणों का त्याग करके वृक्ष के नीचे ही अपने ही हाथों से आपने पंचमुष्टि के द्वारा केशलूंचन किया होगा । प्रभु ! तब आपको जिन्होंने देखा होगा, वें धन्य हैं ।

''नमो सिद्धाणं'' पद से सिद्ध भगवंतों को नमस्कार करके ''करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'' ऐसे संयमसूत्र के साथ महासामायिक का उच्चारण किया होगा ।

प्रभु ! आपके उस सकल सावद्ययोग के जीवनपर्यंत के पच्चक्खाण के साथ ही अंतिम गृहवास से छुटकारा होते ही आपके सकल चारित्रावरणीय कर्म का उन्मूलन हुआ होगा ।

प्रभु ! चारित्रावरणीय कर्म का क्षय होते ही विशुद्ध, आज्ञा और मनसूचक के संपूर्ण शुद्धिकरण के प्रभाव से अनुक्रम से विशुद्ध संयमयोग, एकांतिक अनेकांतिक आज्ञायोग तथा मनःपर्यवज्ञान का मनोज्ञयोग आपको प्राप्त हुआ होगा ।

प्रभु ! उस समय मात्र केवली भगवंत तथा महायोगी पुरुषों को ही प्रत्यक्ष होता ऐसा, आपके ललाट के मध्य में मनःपर्यवज्ञान का साक्षीभूत ऐसा सूक्ष्मतर तेजस्वी बिंदु जगमगाता होगा ।

उस समय च्यवन कल्याणक और जन्मकल्याणक की तरह तीनों लोक में प्रकाश हुआ होगा । नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देवों को भी सुख का आस्वादन हुआ होगा ।

- विवाह के समय पशुओं की पुकार सुनकर करुणाग्रस्त बनकर लग्नमंडप से वापिस लौटनेवाले ! हे नेमि ! हमारे अंतर में भी जीवमात्र के प्रति मैत्री और करुणागुण का प्रादुर्भाव हो ।
- विवाह के लिए ललचानेवाली ललनाओं की चेष्टा से

अलिप्त रहनेवाले हे नेमीश्वर ! हमारे हृदय में निर्विकारता और अनासक्ति का आगमन हो।

- नौ-नौ भव की प्रीत रखकर बैठी हुई राजुल का क्षणभर में त्याग करनेवाले हे महावैरागी प्रभु ! हममें भी वैसे महासत्त्व का सिंचन हो। प्रकृष्ट वैराग्य के बीजांकुर का वपन हो।
- प्रभु ! हमारी विषय-वासना का वमन हो।

आत्मन् ! इस पावनभूमि के अजोड़ आलंबन से कई मुमुक्षु आत्माओं के संयम के अंतराय टूटे हैं।

इस भूमि के आलंबन से कई आत्माओं ने प्रभु के बताये हुए प्रव्रज्या के पंथ पर चलकर आत्मकल्याण किया है।

इस पावनभूमि पर शक्तिशाली आत्मायें, चारित्र जीवन के अंतराय तोड़ने के संकल्पपूर्वक चारित्रपद के दोहें बोलकर १०८ प्रदक्षिणा, १०८ खमासमण और चारित्र पद आराधनार्थं १०८ लोगस्स के काउस्सग्ग की आराधना करके प्रव्रज्या के पंथ पर निकल पड़े है।

चलो ! आगे बढ़ें।

यह देखो वाल्मीकी गुफा ! उसके पास रहे कच्चे मार्ग से आगे जाते हुए भरतवन, हनुमानधारा आदि स्थान आते हैं।

चलो ! हम उस तरफ न जाते हुए, जिन सोपान से आयें थे उन्हीं सोपान से ऊपर चढ़ते हैं । **देखो ! नेमिनाथ प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक की देहरी !**

आज भी इस कल्याणकारी भूमि पर नेमिप्रभु तथा अनंत तीर्थंकर परमात्माओं के केवलज्ञान कल्याणकों का पुनित प्रकाश, अनेक भव्यात्माओं के अंतर में पड़े मिथ्यातामस को दूर करके, शुद्ध सम्यक्त्व की साधना का स्पर्श करवा रहा है ।

हाल ही में निर्मित यह श्वेतवर्णीय संगेमरमर के पाषाण की देहरी कितनी उज्ज्वल दिख रही है ! यह देखो ! इसमें चरण पादुका की तीन जोड़ी हैं । उसमें नेमिप्रभु तथा जिन्हें इस सहसावन से मुक्तिपद प्राप्त हुआ है वे सिद्धात्मा रहनेमि तथा राजीमती की चरण पादुका है । ''नमो जिणाणं'' ''नमो सिद्धाणं'' ''नमो सिद्धाणं''

चलो ! यहाँ भी चैत्यवंदन करें....

केवलज्ञान कल्याणक का चैत्यवंदन

स्तुति

सहसावने वैभव त्यजी, दीक्षा ग्रहे राजुल प्रभु,
युद्ध आदरी चौपनदिने, कर्म करे ते लघु;
आसो अमासे चित्राकाले, कैवल्य पामे जगविभु,
ए गिरनारने वंदता, पापो बधा दूरे जता... (२)

चैत्यवंदन

जयवंत महंत निरंजन छो, भवनां दुःख दोहग भंजन छो;
भविनेत्र विकासन अंजन छो, प्रभु काम विकार विगंजन छो... १

जगनाथ अनाथ सनाथ करो, मम पाप अमाप समूल हरो;
अरजी उरनेमि जिणंद धरो, तुम सेवक छुं प्रभु ना विसरो... २

सुर अर्चित वांछितदायक छो, सहु संघतणा प्रभु नायक छो;
गिरनारतणा गुणगायक छो, कलहंसतणी गति लायक छो... ३

स्तवन

(राग : सिद्धारथना रे नंदन विनवुं...)

नेमि जिनेश्वर नमीए नेहशुं, ब्रह्मचारी भगवान;
पाँच लाख वरसनुं आंतरुं, श्याम वरण तनुवान... नेमि...
कारतिक वदि बारस चविया प्रभु, माता शिवादे मल्हार;
जनम्या श्रावण सुदि पांचम दिने, दशधनुकाया उदार... नेमि...
श्रावण सुदि छट्ठे दीक्षा ग्रही, आसो अमासे रे नाण;
अषाढ सुदि आठमे सिद्धि वर्या, वरस सहस आयु प्रमाण... नेमि...
हरि पटराणी शांब प्रद्युम्न वली, जिम वसुदेवनी नार;
गजसुकुमाल प्रमुख मुनिराजीया, पहोंचाड्या भवपार... नेमि...

राजीमती प्रमुख परिवारने, तार्यो करुणा रे आण;
पद्मविजय कहे निज पर मत करो, मुज तारो तो प्रमाण... नेमि...

थोय

त्रणज्ञान संयुता, मातानी कूखे हुंता,
जन्मे पुर हुंता, आवी सेवा करंता;
अनुक्रमे व्रत लहंता, पंच समिति धरंता,
महियल विचरंता, केवलश्री वरंता.

आत्मन् ! हम प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के दृश्य की कल्पना करके आँख बंद करके केवलज्ञानकल्याणक के निमित्त से जाप करें ।

ॐ ह्रीँ श्री नेमिनाथ सर्वज्ञाय नमः

हम प्रभु के केवलज्ञान अवसर के ध्यानपूर्वक उन भावों में ओतप्रोत बनकर प्रभु से प्रार्थना करें...

प्रभु ! आपने शेष घातीकर्मों का नाश करने के लिए इस सहसावन के जंगल में कई परिषहों को समताभाव से सहन करके क्षमा, प्रेम और करुणा के सैन्य के सहारे इस घातीकर्मयुद्ध में विजय हासिल करने के लिए कदम उठाया ।

प्रभु ! आप चौपनवें दिन भादरवा वद अमावस को इस

वृक्ष के नीचे आए और काउस्सग्ग ध्यान में रहकर आप क्षपकश्रेणी पर आरुढ़ हुए।

प्रभु ! आप छट्ठे प्रमत्त गुणस्थान से सातवें अप्रमत्त गुणस्थानक से आठवें अपूर्वकरण गुणस्थान पर आरोहित होकर पहले आपकी पृथक्त्व वितर्क सविचार शुक्लध्यान की धारा चलविचलता से चलती है। बाद में पृथक्त्व वितर्क प्रविचार शुक्लध्यान की धारा अचल अविचलता से चलती है !

प्रभु ! आत्मध्यान की पूर्णतम तद्गतता के प्रभाव से आपके सहस्त्रारचक्र में सूक्ष्मतम शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। ध्यान की धारा विशेष आगे बढ़ने पर ध्यान की प्रचंड अग्नि के प्रभाव से घातीकर्म की सूक्ष्मतम ग्रंथि का भेद होते ही सर्व घातीकर्म भस्म हो जाते हैं। उसी समय मोहनीयकर्म का सर्वथा नाश होते ही राग द्वेष का भी नाश होता है। वीतराग अवस्था के बाद अंतः मुहूर्त काल में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतरायकर्म की ग्रंथियों का भी भेद होता है।

प्रभु ! आपकी आत्मसृष्टि केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यात चारित्र तथा अनंतवीर्य की परमात्म सृष्टि का सर्जन करती है।

प्रभु ! आपको अनंता अनंत काल के अनंतानंत द्रव्यों

में से प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक पर्याय के ज्ञानदर्शन की समृद्धतम समृद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

प्रभु ! तुरंत ही आपके तीर्थंकर नामकर्म के विपाकोदय का प्रादुर्भाव होता है। चारमूल अतिशय, अष्ट महाप्रतिहार्य, चौतीस अतिशय और समवसरण सहित पैंतीस गुणवाली वाणी के आंतरबाह्य अलौकिक ऐश्वर्य का आविर्भाव होता है।

प्रभु ! आपके च्यवन-जन्म और दीक्षा की तरह इस केवलज्ञान कल्याणक के अवसर पर भी तीनों लोक में प्रकाश और सकल पंचेन्द्रिय जीवराशि तथा कुछ एकेन्द्रिय से चउरिन्द्रिय जीवों को सुख का एहसास हुआ। नौ नौ सुवर्ण कमल पर पादन्यासपूर्वक आप समवसरण की तरफ चलें... करोड़ों देवता आपके अनुयायी बनकर आपका अनुसरण कर रहे हैं। पूरा वर्ग, आपके प्रभाव से तीन गढ़ में से एक-एक गढ़ के दश हजार, पाँच हजार, पाँच हजार सोपान बिना कोई कष्ट से चढ़ रहे हैं।

प्रभु ! आपने समवसरण को प्रदक्षिणा, तीर्थ को नमस्कार, रत्नजडित सुवर्ण सिंहासन पर आरोहण होने के अरिहंत भगवंत के आचार का अनुकरण किया...

प्रभु ! आपकी दिव्यता के प्रभाव से ही देवों के द्वारा

आपके जैसे ही आबेहूब तीन-तीन देह तीनों-तीन दिशा में दृश्यमान होते हैं।

प्रभु ! आपने प्रथम देशना के द्वारा इस भवसागर में डूबते हम जैसे जीवों को तिरने के उपाय बताकर चतुर्विध संघ की स्थापना करके आपके शासन के अधिष्ठायक देव के रुप में गोमेध यक्ष तथा आपके शासन की अधिष्ठायिका तथा इस गिरनार महातीर्थ की अधिष्ठायिका के रुप में अंबिकादेवी की स्थापना की...

प्रभु ! वह भादरवा वद अमावस का दिव्य दिन धन्य है। आपके केवलज्ञान कल्याणक की वह पुण्य पल ! जिसने देखी वह धन्य है !

आत्मन् ! हम सब भी कितने धन्यातिधन्य बन गए हैं कि प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक की कल्याणकारी भूमि की स्पर्शना के अवसर पर, प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के भावों की संवेदना, प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर के आध्यात्मिक आंदोलन तथा तेजस्वी तारक तरंगों के स्पंदनों को हमने प्राप्त किया।

''त्यारे तमोने जेमणे जोया हशे ते धन्य छे....''

इस पंक्ति का गुंजन करते-करते चलो !

धून : प्रशांतगिरये नमो नमः, पद्मगिरये नमो नमः,
सिद्धशेखरगिरये नमो नमः, वंदन हो गिरनार ने... (२)

तूफानी कर्म के पवन को भी प्रशांत करे वह भूमि है यह गिरनार !

अनंत जिनरुपी पद्म की सुवास चारों तरफ फैली हुई है जहाँ वह भूमि है यह गिरनार !

अनंत जिन को सिद्धपद दान से गिरि शेखर बनी वह भूमि है यह गिरनार !

आत्मन् !

इस सहसावन में ही श्री कृष्ण वासुदेव के द्वारा चाँदी के, सुवर्ण के तथा रत्न के प्रतिमाजीयुक्त तीन जिनालयों का निर्माण हुआ था।

इस सहसावन में पूर्वकाल में सोने के चैत्य में मनोहर चौबीसी का निर्माण किया गया था।

इस सहसावन के पास लक्षाराम (वन) में एक गुफा में अतीत, वर्तमान और अनागत, इस तरह तीन चौबीसी के ७२ तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमाजी बिराजमान की गयी थी।

इस सहसावन में केवलज्ञान पाकर लक्षाराम (वन) में प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया था।

इस सहसावन की सिद्धभूमि में ही करोड़ों देवताओं के द्वारा अनंतजिनों के प्रथम और अंतिम समवसरण की रचना हुई थी।

ऐसे महिमावंत गिरनार की जय हो ! जय हो! जय जयकार हो !

आत्मन् ! चारों तरफ पहाड़ों की हारमाला के बीच में यह महाराजा के जैसा गिरनार नगाधिराज देखो !

आत्मन् ! इस दिखते जगत में मानव अर्थ-काम की लालसा के दुःखों से पीड़ित हैं और तिर्यंच क्षुधातृषा के दुःखों से पीड़ित हैं। नहीं दिखते ऐसे जगत में नरक के जीव नरक की तीव्र वेदनाओं से पीड़ित हैं और देव दिव्य वैभव, ऐश्वर्य की नश्वरता की कल्पना मात्र से पीड़ित हैं।

आज का विज्ञान, विकास के नाम पर सभी को विनाश की तरफ ले जा रहा है। आज का मानव विज्ञान और विज्ञान के साधनों के पीछे पागल बना है। मोबाईल, कॉम्प्युटर, इन्टरनेट आदि कई साधनों ने घर-घर में स्वजनों के साथ बंधे हुए निर्दोष और निर्मल आत्मीय संबंधों को तहस-नहस कर दिया है।

घर की स्त्री घर में भी सुरक्षित नहीं है। चारों तरफ

से दोष और दूषणों की आग फैल रही है। आज का युवावर्ग पतन के मार्ग पर दौड़ रहा है। कहाँ, कौन, कैसे बचाएगा ? यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। फिर भी, जब तक जिनेश्वर परमात्मा का शासन तथा ऐसे कल्याणकारी तीर्थों का संयोग मिला है, तब तक हमारे बचने की पूरी संभावना है।

तारक तीर्थंकर प्रभु की करुणा हम पर अविरत रुप से बह रही है।

आज भी प्रभु के कल्याणकों के भूमि प्रदेशों पर परमात्मा की आत्माओं के उस अवसर के परम पावन और पवित्र परमाणु बहुत अधिक प्रमाण में फैले हुए हैं।

आज भी प्रभु के कल्याणकों की तिथि का विशिष्ट प्रकार का प्रचंड प्रभाव प्रसारित है।

प्रभु के कल्याणकों की तरह इन कल्याणकभूमि के स्थान तथा कल्याणक दिन की तिथियों की असीम शक्तियाँ हैं। ये कल्याणक तिथि भी पर्व तिथि के समान है।

आत्मन् !

इन कल्याणक भूमियों की स्पर्शना, संवेदना तथा स्पंदना के साथ-साथ कल्याणक तिथियों की आराधना, नित्यक्रम में प्रभु के पाँच कल्याणक का ध्यान तथा

पंचकल्याणक की भावयात्रा की आराधना, आराधक ऐसे आत्माओं को प्राथमिक काल में तीर्थंकर परमात्मा का परोक्ष परिचय तथा समागम करवाती है और परंपरा से प्रभु का प्रत्यक्ष परिचय तथा समागम करवाती है। सुवर्ण कमल पर पादन्यास जैसे चौतीस अतिशयों के साथ समवसरण का दिव्यातिदिव्य दर्शन भी करवाती है।

ऐसे कल्याणकों के आलंबन से आराधक आत्माओं के, परमात्मा की आत्मा के साथ रहे हुए अंतर के अंतराय दूर हो जाते हैं और मुक्तिपर्यंत के अटूट संबंध जुड़ते हैं।

प्रभु के पंच कल्याणकों के आलंबन से शांति-समाधि-सद्गति और सिद्धिगति की साधना होती है। देवाधिदेव के प्रत्येक कल्याणक उनके दिव्यतम जीवन की दिव्यातिदिव्य प्रसंगावलि है।

कल्याणक के आलंबन से आराधना करनेवाले आराधक स्वयं परमात्मपद को प्राप्त करते हैं ! गर्भ, जन्म, अचारित्र, अज्ञान तथा सदेहावस्था के स्थान पर अगर्भ, अजन्म, अनंत चारित्र, अनंतज्ञान और अदेहावस्था स्वरुप शाश्वत स्थान को प्राप्त करते हैं।

पाँच इन्द्रियों के विषय में चकचूर बने जीवों को

विनंती करते हैं कि....

प्रभु ! कहा जाता है कि हृदय के सच्चे भाव से की गयी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! आप तो पाँच-पाँच कल्याणकों के द्वारा शाश्वत सुख के स्वामी बनें।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! आपके शासन में अनंतजीव भवसागर से पार उतरे फिर भी मैं तो संसार सागर में डूब रहा हूँ।

हे अनंत अरिहंत प्रभु ! इस संसार सागर में अर्थकाम की कामनाओं में, विषय-कषाय की वासनाओं में और राग-द्वेष की जाल में मैं अनादिकाल से फँसा हुआ हूँ।

प्रभु ! आपके प्रत्येक कल्याणक की शक्ति से मेरे खतरनाक दोष खतम हो जाओ ! निर्मूल हो जाओ ! विनाश हो जाओ !

प्रभु ! आपके पंचकल्याणकों के प्रत्येक कल्याणक की प्रत्येक शक्ति के द्वारा मेरे सर्वदोष संपूर्णतया नाश हो जाओ ! मेरी आत्मा के सर्व गुण पूर्णतया प्रकाशित हों !

हे अनंत अरिहंत परमात्मा ! इस जगत का जीवंत उद्धार करने के लिए आप अपने कल्याणकों के परमाणु,

कल्याणकों का भव्य प्रभाव और कल्याणकों की आराधना इस विश्व के विराट पथ पर फैलाते गए हो, उन परमाणुओं का स्पर्श मैं प्राप्त करुँ, ऐसी कृपा करो !

हे प्रभु ! जो कोई जीव कल्याणक की दिव्यतम दिव्यताओं को समझते हैं, कल्याणकों की कल्याणकारिता को आत्मसात् करते हैं और कल्याणकों की मोक्षदायिता की आराधना करते हैं, वे जीव आपके जैसी सिद्धपद की शाश्वत रिद्धि सिद्धि को प्राप्त करते हैं !

प्रभु ! आपकी च्यवनावस्था की भावभरी आराधना से मेरी गर्भावस्था के अपचय और अगर्भावस्था के उपचय से मुझे परमपद की प्राप्ति हो !

प्रभु ! आपके जन्म कल्याणक की भावभरी आराधनाओं के प्रभाव से मेरी जन्मावस्था के अपकर्ष और अजन्मावस्था के उत्कर्ष से मुझे परमपद की प्राप्ति हो !

प्रभु ! आपके दीक्षाकल्याणक की भावभरी आराधना के प्रभाव से मेरी भोगावस्था के विघटन तथा योगावस्था के संघटन से मुझे परमपद की प्राप्ति हो !

प्रभु ! आपके केवलज्ञान कल्याणक की भावभरी आराधना के प्रभाव से मेरी अज्ञानावस्था के विसर्जन और

सर्वज्ञावस्था के संसर्जन से मुझे परमपद की प्राप्ति हो।

प्रभु ! आपके निर्वाणकल्याणक की भावभरी आराधना के प्रभाव से मेरी सदेहावस्था के विनाश और अदेहावस्था के विकास से मुझे परमपद की प्राप्ति हो।

हे अनंत अरिहंत परमात्मा ! परमपदप्रदाता ऐसे आपके पाँचकल्याणकों की विविध आराधना से मेरे संसार की सर्वपर्यायमय अवस्थाओं का नाश हो ! संसारातीत मुक्ति की एक ही अवस्था प्रकट हो !

आत्मन् ! यदि हम अल्पकाल में मोक्षपद चाहते हैं तो हमें इस गिरनार के साथ प्रीति करनी पड़ेगी, जिससे आनेवाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर पद्मनाभ दादा का हमें संयोग हो और मात्र साधिक ८४ हजार वर्ष में हमारी आत्मा का निस्तार हो ! गिरनार के साथ प्रीति के कारण जो भक्ति होगी वह मुक्ति के द्वार तक पहुंचाएगी। यदि प्रथम तीर्थंकर के समय की गाड़ी छूट जाये तो एक के बाद एक चौबीसों प्रभु की परमपद की गाड़ी यहीं से जानेवाली है। इसलिए हमारी भी उसमें कहीं न कहीं तो जगह हो जाएगी।

धून : चन्द्रगिरये नमो नमः, सुरजगिरये नमो नमः,
इन्द्रगिरये नमो नमः, वंदन हो गिरनार ने... (२)

पाप-संताप को दूर करके आत्मा को चंद्र समान शीतलता देनेवाली भूमि है यह गिरनार !

सर्वगिरि में सूरज समान प्रताप को धारण करनेवाली भूमि है यह गिरनार !

गिरिसमुदाय में इन्द्रसमान शोभास्पद भूमि है यह गिरनार!

इस गिरि के आलंबन से हमारे जीवन में पापों को पूर्णविराम देकर आत्मा को ऊर्ध्वगामी बनाने की आराधना में ही लक्ष्य रहे, यही प्रभु से प्रार्थना !

चैत्यवंदन विधि विभाग

(नीचे मुजब प्रथम इरियावहि करवी)

● इच्छामि खमासमण सूत्र ●

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआओ मत्थएण वंदामि,

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा देवाधिदेव परमात्मा को तथा पंचमहाव्रतधारी साधु भगवंतो को वंदन किया जाता है)

● इरियावहियं सूत्र ●

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं १. इरियावहियाए विराहणाए २. गमणागमणे ३. पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ४. जे मे जीवा विराहिया ५. एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ६. अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्‌विया, ठाणाओठाणं, संकामिया, जिवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ७.

(भावार्थ : इस सूत्र से हिलते चलते जीवों की जाने अनजाने में विराधना होने से लगा हुआ पाप दूर होता है।)

● तस्स उत्तरी सूत्र ●

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्धायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा इरियावहियं सूत्र से बाकी रहे पापो की विशेष शुद्धि होती है.)

● अन्नत्थ सूत्र ●

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिगसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(भावार्थ : इस सूत्र में काउस्सग्ग के सोलह आगार का वर्णन तथा कैसे खड़ा रहना वह बताया.)

(एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक और न आये तो चार नवकार का काउसग्ग करना, फिर प्रगट लोगस्स कहना)

● लोगस्स सूत्र ●

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवलि १. उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे २. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४. एवं, मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५. कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु, चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसुअहियं पयासयरा, सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ७.

(भावार्थ : इस सूत्र में चोवीस तीर्थंकरो के नामपूर्वक स्तुति की गई है.)

(तीन खमासमण देकर, बाया घुंटन खड़ा करके हाथ जोड़कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन करवुं.

सकल कुशल वल्ली - पुष्करावर्त मेघो,
दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः
भव जल निधि पोतः सर्व संपत्ति हेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः
श्रेयसे पार्श्वनाथः

● श्री सामान्यजिन चैत्यवंदन ●

तुज मुरतिने निरखवा, मुज नयणां तलसे;
तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे... १

काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे;
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरसे... २

एम जाणीने साहिबा ए, नेहनजर मोहे जोय;
ज्ञानविमल प्रभु सुनजरथी, ते शुं ? जे नवि होय... ३

● जंकिंचि सूत्र ●

जंकिंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए;
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा तीनों लोक में विद्यमान नाम रुपी तीर्थों एवं जिन प्रतिमा को नमस्कार किया गया है.)

● नमुत्थुणं सूत्र ●

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं. १. आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं २. पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं. ३. लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं, ४. अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ५. धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत - चक्कवट्टिणं, ६. अप्पडिहयवरनाण - दंसणधराणं, विअट्ट - छउमाणं. ७. जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, ८. सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयल मरुअ -

मणंत मक्खय मव्वाबाह - मपुणरावित्ति - सिद्धि गइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ९. जे अ अइया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि. १०.

(भावार्थ : इस सूत्र में अरिहंत परमात्मा के गुणों का वर्णन है. इन्द्र महाराजा स्तुति करते समय यह सूत्र बोलते हैं.)

● जावंति चेइआइं सूत्र ●

(पुरुषों को दो हाथ उपर करके बोलना है)
जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ;
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं.

(भावार्थ : इस सूत्र द्वारा तीन लोक में रही जिनप्रतिमा को नमस्कार किया गया है।)

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

● जावंत केवि साहू सूत्र ●

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ;
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं.

(भावार्थ : इस सूत्र में भरत, ऐरावत और महविदेह तीनों क्षेत्र में बिचरते सर्वे साधु साध्वीजी को नमस्कार किया गया है.)

(नीचे का सूत्र सिर्फ पुरुषों को बोलना है)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(भावार्थ : इस सूत्र में पंचपरमेष्ठि भगवंत को नमस्कार किया गया है।)

(इस पुस्तक में से भाववाही स्तवन के संग्रह से कोई भी एक स्तवन अथवा नीचे का स्तवन गाना)

● श्री सामान्य जिन स्तवन ●

आज मारा प्रभुजी, सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे;
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रुठडा बाळ मनावो,
मारा सांइ रे... १

पतितपावन शरणागतवत्सल, ए जश जगमां चावो रे;
मन रें मनाव्या विण नहीं मूकुं, ए ही ज माहरो दावो,
मारा सांइ रे... २

कबजे आव्या हवे नहि मूकुं, जिहां लगे तुम सम थावो रे;
जो तुम ध्यान विना शिव लहिए, तो ते दाव बतावो.
मारा सांइ रे... ३

महागोपने महानिर्यामक, इणि परे बिरुद धरावो रे;
तो शुं आश्रितने उद्धरतां, बहु बहु शुं रे कहावो.
मारा सांइ रे... ४

ज्ञान विमल गुरुनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे;
अचल - अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो.
मारा सांइ रे... ५

● जय वीयराय सूत्र ●

जयवीयराय ! जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं
भवनिव्वेओ मग्गा - णुसारिया इट्ठफलसिद्धि ...१

लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ, परत्थकरणं च;
सुहगुरुजोगो तव्वयण - सेवणा आभवमखंडा ...२

(दो हाथ नीचे करके)

वारिज्जइ जइवि निआण - बंधणं वीयराय ! तुह समए;
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं. ...३

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ;
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं. ...४

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याणकारणम्;
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ...५

अन्नत्थ, ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं. २. एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउस्सग्गो. ३ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ४

(कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग पार के)
नमोऽर्हत्सिध्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः
(बोलकर थोय बोलना)

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी,
तेहना परीहारी, बालथी ब्रह्मचारी;
पशुआ उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवल सिरी सारी, पामीया घाती वारी.

नेमिनाथ जिन चैत्यवंदन

श्री नेमिनाथजी के नव भव का चैत्यवंदन

अचलापुरी धनभव लही, सौधर्मे बने देव;
चित्रगति विद्याधर, करे जिणंदनी सेव. १

चोथे चोथो देवलोक, अपराजित नृपति;
दीक्षा लई सुर भवनमां, अगियारमे संपत्ति. २

शंख नृपति थया सातमे, संयम आधारी;
वीशस्थानक साधी थया, अपराजित निराबाधी. ३

नवमे नेमि जिनेश्वरु रे, अंजनवान शरीर;
'ज्ञानविमल' संभारता पामे भवजल तीर. ४

गिरनारजी का चैत्यवंदन

दीक्षा केवल ने वळी, त्रीजुं निरवाण,
त्रण कल्याणक उपना, गिरनारे ते जाण... १

अनंत चोवीसीए अनंत, कल्याणक वखाण,
वर्तमानमां नेमिनाथना, गिरनारे ते जाण... २

अनागत जिनवर सवि, पामशे शिवपुर ठाण,
सादि अनंत भागे सुखी, गिरनारे ते जाण... ३

संप्रति ने संग्रामनी, कुमारपालनी जाण,
मंदिर श्रेणी सोहामणी, गढ गिरनारे वखाण... ४

मोहराय मल्ल भागतो, मांगे कदि नवि दाण,
धर्मरत्न पसायथी, गिरनारे चित्त आण... ५

श्री नेमिनाथ जिन स्तवन विभाग

(१) राग : तुम दरिसन भले.../आजनो चांदलीयो...

सहसावन जई वसीये, चालोने सखी सहसावन जई वसीये;
घरनो धंधो कबही न पुरो, जो करीए अहो निशिए,
पीयरमां सुख घडीय न दीठुं, भय कारण चउदिशिए १

नाथ विहुणा सयल कुटुंबी, लज्जा कमियी न पसीए,
भेगा जमीए ने नजर न हिंसे, रहेवुं घोर तमसीए. २

पीयर पाछळ छल करी मेल्यु, सासरीये सुख वसीये;
सासुडी ते घर घर भटके, लोकने चटके डसीए. ३

कहेता साचुं आवे हासुं, भुंशीये मुख लई मशीए;
कंथ अमारो बाळो भोळो, जाणे न असि मसि कसिए; ४

जुठा बोली कलहण शीला; घर घर शूनि ज्युं भसीये;
ए दुःख देखी हइडुं मुंझे, दुर्जनथी दूर खसीये. ५

रैवतगिरिनुं ध्यान न धरीयुं, काल गयो हसमसीए;
श्री गिरनारे त्रण कल्याणक, नेमि नमन उल्लसीए. ६

शिव वरसे चोविश जिनेश्वर, अनागत चउवीसीए;
कैलास उज्जयंत रैवत कहीए, स्वर्ण गिरिने फरशीये. ७

गिरनार नंदभद्र ए नामे, आरे आरे छवीसीए;
देखी महितल महिमा मोटो, प्रभुगुण ज्ञान वरसीए. ८

अनुभव रंग वधे तेम पूजो, केशर घसी ओरशीये;
भावस्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुभवीर विलसीये. ९

(२)

राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../रीझो रीझो श्री वीर देखी...

अरज सुनो नेम नगीना, राजुलना भरथार,
भजलो भजलो हो जगना प्राणी, भजो सदा किरतार... अरज

जान लईने आव्या त्यारे, हर्ष तणो नहि पार,
पशुतणो पोकार सुणीने, पाछा वळ्या तत्काळ... अरज

राजुल गोखे राह नीरखती, रडती आंसुधार,
पियुजी मारा केम रिसायां, मुज हैयाना हार... अरज

नेम बन्यां तीर्थंकर स्वामी, बावीशमा जिनराज,
माया छोडी मनडुं साध्युं, नमो नमो शिरताज... अरज

नेम निरंजन नाथ हमारा, अम नयनोना तारा,
बाळक तुम भक्तिने माटे, रडतो आंसुधार... अरज

परदुःख भंजन नाथ निरंजन, जगपालक किरतार,
ज्ञानविमल कहे, भवसिन्धुथी, मुजने पार उतार... अरज

(३) राग : अमी भरेली नजरु राखो...

नेम प्रभुना चरण कमलनी लगनी अमने लागी;
भर जोबनमां राजुल जेवी रमणी जेणे त्यागी... नेम...

कृष्णदेवनी सघळी नारी, मनहरनारी कामणगारी;
विवाहनी वातो उच्चारी, मन डोलावा लागी... नेम...
पशुओनी सुणीने वाणी, दया अतिशय दिलमां आणी;
गिरनारे जई संयमधारी, माया ममता त्यागी... नेम...
पाछळ आवी राजुल नारी, पूर्व जन्मथी छे संस्कारी;
तेने पण आपे त्यां तारी, भवनी भावठ भागी... नेम...
रोमरोममां निर्विकारी, अमने आपो बुद्धि सारी;
श्याम जीवनमां झळहळकारी, निर्मळ ज्योति जागी... नेम...

(४) राग : मेरा जीवन कोरा कागज/है यह पावन भूमि

नेमजी कागल मोकले, निशदिन राजुल हाथ,
हवे अमे संयम लइशुं, तमे चालो अमारी साथ ॥१॥
अमे छीए गढ गिरनारमां, सुंदर सहेसारे वन,
तिहां तमे वहेला पधारजो, जो होय संयमनो मन ॥२॥
कहेशो अमने कह्युं नहीं, आठ भवनी हो प्रीत,
वलतुं वालम बालमां, ए छे उत्तम रीत ॥३॥
लेख वांचीने राजीमति, चढियां गढ गिरनार,
स्वामी हाथे संयम लीधो, पाळे पंच आचार ॥४॥
धन्य राजुल धन्य नेमजी, धन्य धन्य बेहुनी प्रीत,
संयम पाळी मुक्ते गयां, रुपवंदे निशदिन ॥५॥

(५)

सुणो सैयर मोरी, जुओ अटारी आवे छे नेम कुमार;
शिवा देवीनो नंद छे वालो, समुद्र विजय छे तात,
कृष्ण मोरारीनो बांधव वखाणुं, यादव कुळ मोझार रे,
प्रभु नेम विहारी, बाळ ब्रह्मचारी, जुओ अटारी १

अंग फरके छे जमणुं बेनी, अपशुकन मने थाय;
जरुर वहालो पाछो ज वळशे, नहि ग्रहे मुज हाथ रे,
मने थया दुःख भारी, कहुं छुं आभारी, जुओ अटारी २

परणुं तो बेनी तेने ज परणुं, अवर पुरुष भाई बाप,
हाथ न ग्रहो मारो तो तेमने मुकावु मस्तके हाथ,
हुं थावुं व्रतधारी, बाळ ब्रह्मचारी, जुओ अटारी ३

संयमधारी राजुल नारी, चाल्या छे गढ गिरनार,
मारगे जाता मेघजी वरस्या, भींजाय सतीना चीररे,
गया गुफा मोझारी, मनमां विचारी, जुओ अटारी ४

चीर सुकवे छे सती राजुल, रुपे मोह्या तेणीवार,
सुणो भाभी अमारी, थाव घरबारी, जुओ अटारी ५

वमेला आहारने शुं करवो छे, सुणो दियर मोरी वात,
मुझने वमेली जाणो देवरजी, शाने खोवो व्रत धारीरे,
संयम सुखकारी, पाळो आवारी, जुओ अटारी ६

रहनेमि मुनिवर राजीमतिने, उपन्युं केवळ ज्ञान,
चरम शरीरे मोक्षे पधार्या, साधवा आतम काजरे,
वीर विजय आवारी, गाउं गुण भारी, जुओ अटारी ७

(६) राग : अजितजिणंदशुं प्रीतडी/निंदरडी वेरण होई रही

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश;
पूरण दृष्टि निहाळीए, चित्त धरीये हो अमची अरदास परमातम. १

सर्व देश घाती सहु, अधाती हो करी धात दयाल;
वास कियो शिवमंदिरे, मोहे वीसरी हो भमतो जगजाल परमातम २

जगतारक पदवी लही तार्या सही हो अपराधी अपार;
तात कहो मोहे तारतां, किम कीनी हो इण अवसर वार परमातम ३

मोह महापद छाकथी, हूं छकियो हो नहि शुद्धि लगार;
उचित सही इणे अवसर, सेवकनी हो करवी संभाळ परमातम ४

मोह गये जो तारशो, तिण वेळा हो कीशो तुम उपगार;
सुख वेळा साजण घणा, दुःख वेळा हो विरला संसार परमातम ५

पण तुम दरिशन जोगथी, थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश;
अनुभव अभ्यासी करे, दुःखदायी हो सहु कर्म विनाश परमातम ६

कर्म कलंक निवारीने, निज रुपे हो रमताराम;
लहत अपूरव भावथी, इण रीते हो तुम पद विसराम परमातम ७

त्रिकरण जोगे हुं विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद,
चिदानंद मनमें सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद परमातम ८

(८) राग : तने साचवे पार्वती अखंड सौभाग्यवंती

आवो आवो ने नेमकुमार, आवो ने अम आंगणीए,
विनवे रडती राजुलनार, आवो ने अम आंगणीए...
बांध्या बांध्या तोरण बारणे,
वागे वागे शरणाई ढोल आंगणीए,
सज्या राजुल सोले शणगार...

आपणी आठ आठ भवनी प्रीतलडी,
नवमे भव केम विसारी दीधी,
ओछुं आव्युं शुं राजकुमार...

सुणी पोकार पशुडा पाडता,
प्रभु रथने पाछो वाळता,
बसिया जई गढ गिरनार...

लीधुं संयम केवल मोक्षे गया,
दीक्षा लीधी राजुल संगे गया,
माणेक वंदन वारंवार...

श्री नेमिनाथ थोय

(१) (चार बार बोल सकते हैं)

गिरनारे गीरुओ वहालो नेमि जिणंद,
अष्टापद उपर, पूजी धरो आनंद,
सिद्धांतनी रचना, गणधर करे अनेक,
दिवाळी दिवसे द्यो अंबा विवेक. १

(२)

श्री नेमिजिन प्रणमी, सवि दुःख टाळुं,
सविजिन वंदी, अध संचित गाळुं;
जिन आगमथी, जगमांहे अजवाळुं,
देवी अंबाइ, करे रखवाळुं.

(३)

नेमिनाथ, वन्दे बाढम्, १ सर्वे सार्वा; सिद्धि दद्यु २
जैनी वाणी, सिद्धयै भूयात्. ३ वाणी विद्यां, दद्याद् ह्याद्याम्. ४

(४)

गढ गिरनारे नमुं, नेमिजिनेश्वरस्वाम,
चोबीशे जिनवर, जगतजीव विश्राम;

अमृत सम आगम, सुणीये शुभ परिणाम,
अंबिका देवी, सारे काज तमाम.

(५)

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी;
पशुआं उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवलसिरी सारी, पामिया धातीवारी. १

त्रण ज्ञान संयुता, मातानी कुखे हुंता,
जन्मे पुरहुंता, आवी सेवा करंता;
अनुक्रमे व्रत लहंता, पंच समिति धरंता;
महियल विचरंता, केवलश्री वरंता. २

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,
त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे;
सिंहासन ठावे, स्वामिना गुण गावे,
तिहां जिनवर आवे, तत्त्ववाणी सुणावे. ३

शासनसुरी सारी, अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नर नारी, पाप संताप वारी;
प्रभु सेवा कारी, जाप जपीए सवारी,
संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी. ४

(६)

सुर असुर वंदित पायपंकज मयणमल्लमक्षोभितं,
धन सुधनश्याम शरीरसुंदर शंखलंछनशोभितं;
शिवादेवीनंदन त्रिजगवंदन भविककमलदिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवरशिखर वंदो श्रीनेमिनाथजिनेश्वरं. १

अष्टापदे श्रीआदिजिनवर वीर पावापुरी वरं,
वासुपूज्य चंपानयर सिध्या नेम रैवतगिरिवरं;
समेतशिखरे वीस जिनवर मुक्ति पहोंच्या मुनिवरं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदु सयल संघ सुहंकरं. २

अगियार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणीए,
छ छेदग्रंथ प्रशस्त अत्था चार मूल वखाणीए;
अनुयोगद्वार उदार नंदी-सूत्र जिनमत गाइए;
वृत्ति टीका भाष्य चूर्णी पिस्तालीस आगम ध्याइए. ३

दोय दिशी दोय बालक सदा भवियण सुखकरु,
दुःखहरी अंबा लुंब सुंदर दुरित दोहग अपहरु;
गिरनारमंडन नेमि जिनवर चरणपंकजसेवीए,
श्री संघ सुप्रसन्नमंगल करो ते अंबादेवीए. ४

(७)

श्री गिरनार शिखर शणगार,
राजीमती हैडानो हार जिनवर नेमिकुमार,
पुरण करुणा रसभंडार,
उगार्या पशुआं ए वार समुद्रविजय मल्हार;
मोर करे मधुरो किंकार,
विचे विचे कोयलना टहुकार सहस गमे सहकार
सहसावनमां हुआ अणगार,
प्रभुजी पाम्या केवलसार पोहता मुक्ति मोझार. १

सिद्धिगिरिए तीरथ सार,
आबु अष्टापद सुखकार चित्रकूट वैभार,
सुवर्णगिरि सम्मेत श्रीकार,
नंदीश्वर वर द्वीप उदार जिहां बावन विहार;
रुचक कुंडलने इषुकार,
शाश्वत अशाश्वता चैत्यविहार अवर अनेक प्रकार,
कुमति वयणे म भूल गमार,
तीरथ भेटे लाभ अपार भवियण भावे जुहार. २

प्रगट छट्ठे अंगे वखाणी,
द्रौपदी पांडवनी पटराणी पूजा जिनप्रतिमानी,
विधिशुं कीधी उलट आणी,
नारद मिथ्यादृष्टि अन्नाणी छांडी अविरति जाणी;
श्रावककुलनी एस हि नाणी,
समकित आलावे आख्याणी सातमे अंगे वखाणी,
पूजनिक प्रतिमा एम पंकाणी,
इम अनेक आगमननी वाणी ए सुणजो भवि प्राणी. ३

केडे कटिमेखला घुघरियाळी,
पाये नेउर रमझम चाली उज्जयंतगिरि रखवाली,
अधर लाल जीस्या परवाळी,
कंचनवान काया सुकुमाली कर लहके अंबडाळी;
वैरीने लागे विकराळी,
संघनां विघन हरे उजमाली अंबादेवी मयाली,
महिमाए दश दिशी अजुआळी,
श्री संघविजय बुध आनंदकारी नित्य नित्य घेर दिवाळी ४

गिरनार - नेमि भक्ति गीत

जोगी बनीने चाल्या

वादळथी वातो करे ऊंचो गढ गिरनार,
पावन थई डोली रह्यो ज्यारे आव्या नेमकुमार,
राजुल आवी साथमां, छोडी सकल संसार,
अमर कहाणी प्रेमनी गाई रह्यो गिरनार...

जोगी बनीने चाल्या नेमकुमार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ़ गिरनार,
विचरे ज्यां विश्वना तारणहार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ़ गिरनार...

जेने जग कल्याणनी लागी लगन,
जीवननी साधनामां मनडुं मगन,
अंतरमां प्रगटे छे प्रीतनी अगन,
आतम उडे छे अेनो ऊंचे गगन-२
वायरामां वहेती बसंती बहार-२,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार...

अेना प्राणमांथी प्रगटे छे अेवो प्रकाश,
उजाळी दीधा छे धरती आकाश,
भवोभवनी प्रीतडीनो बांध्यो छे पाश,
पूरी छे राजुलना अंतरनी आश-२,
मोक्षे सिधाव्या राजुल नेमकुमार-२,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार...

मारा शमणांमां नेम प्रभु

मारा शमणांमां नेम प्रभु आवता रे लोल,
मारी आंखोमां अमृत वरसावता रे लोल...
अे तो आवीने मुजने जगाडता रे लोल...
मारा शमणां मां...

मारी घेरी नींदर ने उडाडता रे लोल,
अे तो उरना आसनीये बिराजता रे लोल,
हुं तो अंतरथी आरती उतारतो रे लोल,
हुं तो भाव भर्या फूलडे वधावतो रे लोल...
मारा शमणां मां...

हुं तो स्नेहनी सितार आज छेडतो रे लोल,
मारा स्वामीने दिलथी रीझवतो रे लोल,

प्रभु हसी हसी मुजने बोलावता रे लोल,
मने मुक्तिनो मारग बतावता रे लोल...
मारा शमणां मां...

अेना शिखरे धजाओ मोंघी फरफरे रे लोल,
अेना सोनेरी कळश जन मन हरे रे लोल,
अेनी जाळीनी कोतरणी जीणवी रे लोल,
मने जोवी गमे बहु अे अनेरी रे लोल...
मारा शमणां मां...

नेमजी श्याम गमे

नेमजी श्याम गमे, गिरनार धाम गमे (२),
के जोग साधवाने नीकळ्यां हो (२)

सोहागी शोडला हुं राजुल के विचरुं,
अवगणी हुं काम बधां श्याम संग नीसरुं,
मनथी रहेवायना तनथी सहेवाय ना (२),
त्यारे मांगु हुं मारा मितने, त्यारे पामुं हुं मारा मितने...
नेमजी...

वनमां जो फूल खीले वहेणुंना नाद थी,
उपवन मां फूल खील्या नेमजीना सादथी,
राजुलना नाथ तमे गिरनारी श्याम तमे (२),
अेक व्हालुं लागे तारुं नाम रे,
अेक प्यारुं लागे तारुं नाम रे... नेमजी

नेमि प्रीतम प्यारा

नेमि प्रीतम प्यारा, व्हाला मारा नेमिनाथ - २,
तुज संग प्रीतडी अेवी लागी मने, नवभव केरी प्रीतलडी,
प्रभु हाथ झाली भवपार उतार, भवपार उतारो मने,
मारा नेमिनाथ प्यारा नेमिनाथ भवपार उतारो मने... २

संयम लेवाने काज, प्रभु जई वस्यां गढ गिरनार,
सहसावने करी निवास, प्रभु केवल वर्या गिरनार,
रैवतगिरि मंडन दुःखडा दूर निवारो,
स्वर्णगिरि मंडन भवना फेरा टाळो... प्रभु हाथ झाली

दीक्षा केवलने निर्वाण त्रण रत्न पाम्या गिरनार,
शाश्वतगिरि शणगार, तमे छो जीवन आधार,
शिवादेवी नंदन चरण शरण आपो,
मुज भक्तनी विनंती स्वीकारो... प्रभु हाथ झाली

जय हो गिरनार

गिरनार गिरि तरणतारण जहाज,
नेमनाथ दादो मारो गिरि शिरताज,
तारा गुण गातां गिरि थाये बेडो पार,
हाथ मारो झाली हवे भवपार उतार,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार

तार गिरि तार मने भवसागर तराव तुं,
तुं ज भक्ति तुं ज शक्ति तुं शरणआधार,
तार गिरि तार मने भवनिस्तार कराव तुं,
तुं ज गति तुं ज मति तुं परमआधार,

हो... गिरनार तारो छे संगाथ, माथे हाथ तारो नेमनाथ,
भवोभव मळजो तारो साथ, स्वीकारो अरज ओ नाथ,
तुं ज मारुं गीत गिरि, तुं ज मारी प्रीत छे,
तुं ज मारुं स्मित गिरि, तुं ज मारी रीत छे,

तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार
तार गिरि तार मने भवसागर तराव तुं,
तुं ज भक्ति तुं ज शक्ति तुं शरणआधार,
तार गिरि तार मने भवनिस्तार कराव तुं,
तुं ज गति तुं ज मति तुं परमआधार,

हो तारुं शरणुं जेणे स्वीकार्युं, गिरि कर्या अनंता उद्धार,
सिद्धपदगिरि गिरिराय मने तारी करो उपकार,
तुं ज हित गिरि, तुं ज मारी जीत छे,
तुं ज मारुं लक्ष्य गिरि तुं ज थकी मोक्ष छे,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज अेक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार... गरवो गिरनार
जय जय जय श्री नेमिनाथ, जय जय जय श्री नेमिनाथ,

व्हाला दादा नेमिनाथ, मारा प्यारा नेमिनाथ...
जय जय जय श्री गढ गिरनार, जय जय जय श्री गढ गिरनार,
जय जय पावन गढ गिरनार, जय जय गरवो गिरनार...

ओ नेम... ओ नेम...

गिरनारवासी मुक्तिविलासी - २,
हुं चाहुं तारो प्रेम... ओ नेम... ओ नेम...

हुं तो संभारुं तुं जो विसारे - २,
नभशे आ प्रीति केम... ओ नेम... ओ नेम...

पशुना पोकारो हृदयमां धारो - २,
मुज वेला आवुं केम... ओ नेम... ओ नेम...

राजुल नारी करुणाथी तारी - २,
मुज पर करशो ने रहेम... ओ नेम... ओ नेम...

टाळो ने विभावो आपो नीज भावो - २,
बने आतम साचो हेम... ओ नेम... ओ नेम...

ओ रखवैया प्यारी मुज मैया - २,
करजो मुज योगक्षेम... ओ नेम... ओ नेम...

पवननी पांखोमां

पवननी पांखो मां, गगननी आंखोमां, प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम-२
रोमे रोमे चाले अविरत संकीर्तन तारुं, प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम-२

गुफामां छे गुंजन तारुं खीणोमां छे खेलन तारुं,
शिखर शृंगार धरे तारो पगथीये छे कंपन तारुं-२,
नेमनाथ तारा शरणमां छे आजीवन मारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

धजामां छे नर्तन तारुं, दीवामां छे स्पंदन तारुं,
फूलोमां मोहरी तारी प्रीत, गीतमां संवेदन तारुं - २,
सहसावनमां चार मुखे मनहर दर्शन तारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

अमारुं तन मन धन तारुं, अमारुं जीवन पण तारुं,
स्वरोनुं संचालन तारुं, कूवारे संमोहन तारुं - २,
आतमना आंगणीये अनहद आव्हेलन तारुं...
प्रभु नेमिनाथ तारुं नाम - २

नेमजीनी जान

नाचे अंग अंग बाजे चंग मृदंग ने रंग उमंग छवायो,
झाझ पखवाज वळी शरणाईना साद थकी गीत मधुरा गवायो,
साजन माजन कई कई राजन आज न हरख समायो,
सजी शणगार कई नाचे नरनार, अेमां नेमजी अे जान जुडायो रे... ३

दूर शरणाईना सूर वागे... कई जानैया डोलवा लागे,
थई गानतानमां गुलतान रे... आवी आवी रे नेमजीनी जान रे...२
आवी रे... आवी रे... आवी रे... आवी
जुओ जादवकुळनी जान रे... वळी गाजे छे डंका निशान रे
आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

म्हाणी रह्यां छे कृष्ण महाराजा, वरणागी दीसे छे नेम वरराजा-२
कंई भूल्यां छे तन मन भान रे... २ आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

द्वारिकानी नार रुप रुपना अंबार, सजी सोळे शणगार उर आनंद अपार,
मुखमां छे जेनां पान रे... अेनां गातां मधुरां गान रे...
आवी आवी रे नेमजीनी जान रे... २

जय जय गरवो गिरनार

जय जय गरवो गिरनार... जय जय गरवो गिरनार...
नेमनाथ गिरि शणगार... जय जय गरवो गिरनार...
वंदन वंदन वंदन वंदन गिरनार तने वंदन...

पंचम शिखर शत्रुंजय तणुंअे, सिद्धगिरि छे धाम,
कैलास उज्जयंत रैवत नंदभद्र, स्वर्ण गिरि गिरनार,
नमो कर्णविहार प्रासाद... जय जय गरवो गिरनार...

ज्यां शोभे अंबिका मात, शासनने सदा सुखकार,
भावे प्रणमुं श्री नेमिजिनेश्वर गिरि भूषण शणगार,
पृथ्वीना तिलक समान... जय जय गरवो गिरनार...

छे अनंत आत्माओ तणी, दीक्षा भूमि गिरनार,
छे अनंता तीर्थंकरो तणी, कैवल्य भूमि गिरनार,
ने आवती चोवीसी तणी, निर्वाण भूमि गिरनार,
अध्यात्म नगरी गिरनार... जय जय गरवो गिरनार...

चौद हजार नदीना ज्यां जळ समाया, शीतळ गजपद कुंड,
ज्यां द्रष्टि अनुभवे धन्यता जोई राजुल रहनेमि टूंक,
दीक्षा केवळ सहसावने नमो समवसरण जिनबिंब,
दीपे शिखरोनी माळ... जय जय गरवो गिरनार...

ज्यांना कणेकणमां वसे, महापुरुषोना बलिदान,
धार पेथड सज्जन झांजणशा, नामे वही आ रक्तधार,
वंदु हिमांशु सूरी धर्मरक्षित, हेमवल्लभ सूरिराय,
सौ चालो जईये गिरनार.. जय जय गरवो गिरनार...

चरणो में तेरे

चरणों में तेरे रहेकर भगवन प्यार ही प्यार मिला,
श्रद्धा से जब पूजा मैंने ब्रह्म का ज्ञान मिला...

तुम संग कैसी प्रीत लगी की छुटा जग मुजसे,
जादु ये तुने ऐसा किया की छुटा जग मुजसे,
बंधन सारे तूट गये जब तुने बांध लीया... चरणों में तेरे

गुजर गया हर पल दुःख का जब तेरा ध्यान किया,
हर मुश्किल आसान हुई जब, तुने साथ दिया,
मोह माया में फंसा हुआ मैं, अब आजाद हुआ...चरणों में तेरे

जीना मरना सीखा भगवन जग में जी करके,
जीतेजी मर जाना कैसे सीखा अब तुजसे,
तुं ही है अब माजी मेरा नैया पार लगा... चरणों में तेरे

झहर भी पीना कहे दे अगर तुं, वो भी पी लेंगे,
राजी जिसमें तुं है भगवन, वैसे जी लेंगे,
बिन पिये मदहोश हुआ ये, कैसा जाम पिया... चरणों में तेरे

शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी

शमणांनी राते शमणांनी राते, शमणांनी राते शमणांनी राते,
शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

रथ पर आरुढ़ माथे लहेराय छोगुं, दिलडानी डोरे बांध्युं मन मारुं मोंघुं,
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

बांध्यो में चंदरवो, ने गूंथी फूल माळा, राजुल कहे छे हैयुं लेतुं रे उछाळा,
जोया श्रीनेमजी... जोया श्रीनेमजी... शमणांनी राते में जोया श्रीनेमजी...

मनडुं मारुं जोने

मनडुं मारुं जोने डोल डोल थाय, सद्भाग्ये व्हालाजीनो संग मळी जाय,
मायाना वळगणथी केम रे छूटाय, सद्भाग्ये व्हालाजीनो संग मळी जाय... मनडुं

आतमनो संग मने आपजो भगवंतजी,
भक्तिना पुष्पो खीलावजो भगवंतजी,
सेवा सत्संगमां मनडुं बंधाय... मनडुं मारुं

अंतरथी नेमनाथनुं नाम ज्यां लेवाय छे,
थईने बहु राजी अम हैया हरखाय छे,
अेमनी कृपाथी भवसागर तरी जाय... मनडुं मारुं

धन्य श्री गिरनारनो नाथ अलगारी,
दुःख दूर करशे श्री नेमि सुखकारी,
रत्नत्रयी तणां मारग समजाय... मनडुं मारुं

आपत्तिओ आवे भले

आपत्तिओ आवे भले विघ्नो हजार सतावे भले,
अेक ज छे झंखना, अनहद आराधना, साधु हुं साधना...

जय जय श्री नेमिनाथ, जय जय श्री नेमिनाथ,

सुख सफळता जे जे मळे, अेनो यश हुं तमने दउं,
दुःख मळे तेने मारा करम, मानीने हैये लगावी दउं,
चाहुं जनमोजनम, भक्ति तारी परम, साचो तारो धरम...
आपत्तिओ

मृत्यु क्षणे तुं संगे रहे, तारी कृपाथी समाधि मळे,
अंतिम श्वासे तारा थकी तन मन केरी अज्ञानता टळे,
मांगु आनंदघन, पामुं साधु जीवन, साचुं तारुं शरण... आपत्तिओ

मारा चित्तमां, मारा वित्तमां, नेमिनाथ तुं

मारा चित्तमां, मारा वित्तमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं....
मारी भक्तिमां, अभिव्यक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मारुं स्वप्न तुं, मारी आंख तुं, मारुं आभ तुं, मारी पांख तुं,
मारी मांगणी, बस अेक छे, तारा संगमां, मने राख तुं,
तन मन तणी, मुज शक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मम सत्य तुं, सौन्दर्य तुं, जीवन तणुं, तात्पर्य तुं,
मम देव तुं, मम धर्म तुं, उपदेश तुं, गुरुवर्य तुं,
श्रद्धाभरी, अनुरक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

साची समज, मने आपजे, काची समज, प्रभु कापजे,
जीवन तणी, केडी उपर, कुमकुमना पगलां थापजे,
मुज आतमा तणी तक्तिमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...

मारा दिलमां धडके गिरनार

गिरनार ओ गिरनार वंदन तने हो कोटी कोटी वार,
रैवत मने प्यारुं छे नेमनाथ छे शोभा तारी,
धन्य हुं थई गयो गिरिनो स्पर्श मने थयो... २
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...
मारा दिलमां

कल्याणकोनुं स्थान छे, मोक्ष तणुं द्वार छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...
मारा दिलमां

मारा तन मनमां प्रभु नेमनो जयजयकार ''गिरनारी हुं छुं''
मने प्राण थकी पण प्यारो गढ गिरनार ''गिरनारी हुं छुं''
मारी रग रगमां थाये शुद्धिनो संचार ''गिरनारी हुं छुं''
अहीं आवी थतां सौ संकल्पो साकार ''गिरनारी हुं छुं''
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

अहीं संयम लेवां आव्या नेमकुमार ''गिरनारी तुं छे''
अहीं सिद्धिवर्या प्रभु नेम थयां भवपार ''गिरनारी तुं छे''
अहीं सिद्धिवर्या प्रभु नेमना त्रण गणधार ''गिरनारी तुं छे''
हर साधक माटे उभो बनी उपकार ''गिरनारी तुं छे''

कल्याणक भूमि स्पर्शी हुं करुं सहसावननी वंदना,
चौद चौद जिनमंदिरो शोभी रह्यां छे तुज गोदमां,
वादळोनी साथे वातो करतुं कर्णविहार प्रासाद छे,
सृष्टिनुं सौंदर्य तुं तारो महिमा अपरंपार छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

गिरनार तीर्थनी भक्ति काजे मुज जीवन आ कुरबान छे,
सौ चालो जईये गिरनार हर धडकनमां अे अरमान छे,

अंजलिमां संकल्प छे मने तरवानो विश्वास छे,
द्यो निर्मळ समकित प्रभु बस अेज ''हेम''नी आश छे,
जय जय जय जय गरवो गिरनार मारा दिलमां धडके गिरनार...२

वंदो गिरनारने रे...

(राग : पूजो गिरिराजने रे...)

वंदो गिरनारने रे... पूजो गिरनार ने रे...
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता नावे पार... रे... वंदो...

अवसर्पिणीना छ आरे रे, विधविध नाम धरे... वंदो...
छव्वीस योजन पहेले आरे, कैलासगिरि जे कहे... वंदो...
उज्जयंत नामे वीस योजननो, बीजे ते आरे रहे... वंदो...

रैवतगिरिवर त्रीजे आरे, षट्दस मान धरे... वंदो...
स्वर्णगिरि अभिधा चोथे आरे, योजन दसनो बने... वंदो...

प्रभुनुं शासन तिंहा प्रवर्ते, धर्मनी हेली वहे... वंदो...
बे योजन मान गिरनारनुं रे, नेमि भजो पंचमे... वंदो...

छट्ठे आरे नंदभद्र नामे, शतधनुं ते रहे रे...
विधविध अभिधा एम धरे रे गिरिगुण हेम करे... वंदो...

रुडा रुडा गिरनारना शिखरो...

(राग : ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयना शिखरो...)
(मेरा जीवन कोरा कागज)

रुडा रुडा गिरनारना शिखरो सोहाय (२)
वच्चे मारा दादा केरा, देराओ देखाय... रुडा रुडा...
आदिश्वरना दरशन करी,
तलेटीए लागुं पाय (२)
नेमजीना चरण नमीने, मनडुं मारुं धाय (२)
ए गिरिवरनुं ध्यान धरतां, भवचोथे शिव थाय... १
एक एक पगले प्रभु समरतां, नाचे मननो मोर (२)
श्वासेश्वासे जपुं जिनने, पगमां आवे जोर (२)
तीर्थंकरो सिध्या अनंता व्रतनाण पामी दोय... २
पहेली टूंके देवकोट मांहे, नेम प्रभु देखाय (२)
नयणां मारा धन्य बनेने, हैये हर्ष न माय (२)
मानवभवनो ल्हावो लइने फेरो सफलो थाय.. ३
चौदे चैत्यना दर्शन पामी, लळी लळी लागुं पाय (२)
गजपदकुंडनुं जल फरसता, अंतर भीनुं थाय (२)
जिनवर केरी भक्ति करता, पापो दूर पलाय... ४

चोवीसजिनना पावन पगलां, गौमुख गंगा मांय (२)
रहनेमिना दर्शन करीने, अंबाटूंक जवाय (२)
अंबाजीमां शांबजीना, चरण बे सोहाय... ५

चोथी टूंके गोरख जाता, प्रद्युमन पाद देखाय (२)
चोतरफ अवलोकन करतां, आनंद अति उभराय (२)
पांचमी टूंके नेमप्रभुजी, मुक्तिगामी थाय... ६

नेमीश्वर ज्यां व्रत ग्रहीने, पाम्या केवल सार (२)
राजीमतीजी शिववर्या ते, सहसावन मनोहर (२)
घाती-अघाती कर्मो खपावी, पहोंता मुक्ति मोजार... ७

अनंतजिन कल्याणक जाणो, पावन गढ गिरनार (२)
गुणला ए रैवतगिरिना; कहेता न आवे पार (२)
हेम वदे तमे भावे भजीलो, दादा छे उदार... ८

यात्रा नव्वाणु करीअे...

(राग : यात्रा नव्वाणु करीअे...)

यात्रा नव्वाणु करीअे रैवतगिरि... यात्रा नव्वाणुं
तीर्थंकरो अनंता सिध्या, दीक्षा-केवल धरीने...
रैवतगिरि... १

घेर बेठां तस ध्यान धरंता, चोथे भवे शिव लहीअे... २
अरिहंतपदनो जाप जपतां, कर्म मल सवि हरीअे... ३
त्रण-त्रण कल्याणक नेमिजिनना, आराधी भव तरीअे... ४
गजपदकुंडना जलने फरसतां, आधि-व्याधि दूर करीअे... ५
अतीत चोवीसी मांहे घडेला, पडिमा पूजी हरखीअे... ६
सहसावने व्रत-ज्ञान वरंता, चरण नमी अघ हरीअे... ७
नव्वाणुं वार अे गिरि चढंता, भवरण नवि भमीअे... ८
हेम वदे अे तीरथ सेवतां, वल्लभपदने वरीअे... ९

गिरनारे चितडुं चौर्युं...

(राग : सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...)

गिरनारे चित्तडुं चोर्युं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
विण दरिसण आयखुं खोयुं रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
आतमउद्धारने करवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
कीधा उद्धार गिरि गरवा रे, नेमीश्वरे मन मोह्युं रे;
गिरनारे चित्तडुं...
भरतेसर पहेला आवे रे, नेमी... नमे चोथे आरे भावे रे, नेमी...
तीन कल्याणक नेमना जाणे रे, नेमी... सुरसुंदर चैत्य रचावे रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥१॥

दंडवीर्य अष्टम पाटे रे, नेमी... करी उद्धार नेमनाथ भेटे रे, नेमी...
हरि अजितनाथने आंतरे रे, नेमी... चउ उद्धार गिरि शणगारे रे नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥२॥

कोडी सागर लाख अग्यार रे, नेमी... सप्तम सगर उद्धार रे, नेमी...
चंद्रयश चंद्रप्रभ शासने रे, नेमी... करे तीर्थोद्धार बहुमाने रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥३॥

चक्रधर शांतिनाथ सुत रे, नेमी... तस नवमो उद्धार हुंत रे, नेमी...
रामचंद्रनो दसमो उद्धार रे, नेमी... अग्यारमो पांडव सार रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥४॥

रत्नश्रावके बारमो कीधो रे, नेमी... प्रभु थापी दर्शनामृत पीधुं रे, नेमी...
प्रभु बेठा पश्चिमा मुख रे, नेमी... भांगे भविजनना दुःख रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥५॥

'ध्रुव' 'परमोदय' 'निस्तार' रे, नेमी... 'पापहर' 'कल्याणक' सार रे, नेमी...
'वैराग्यगिरि' 'पुण्यदायक' रे, नेमी... 'सिद्धपदगिरि' 'दृष्टिदायक' रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥६॥

नामे निर्मल होवे काया रे, नेमी... प्रभु ध्याने नाशे जगमाया रे, नेमी...
गिरि दरिसण फरशन योगे रे, नेमी... हेम सुखियो कर्म वियोगे रे, नेमी...
गिरनारे चित्तडुं... ॥७॥

धन धन श्री गिरनारने...

(राग : धन धन श्री अरिहंतने रे...)

धन धन श्री गिरनारने रे, तार्या अरिहा अनंत सलूणा;
अे गिरिवरने फरसता रे, आतम निर्मल थाय सलूणा ॥१॥

जिम जिम अे गिरि सेवीअे रे, तिम तिम कर्म खपाय सलूणा;
त्रस थावर तस वासथी रे, पामे शिवपद पंथ सलूणा ॥२॥

त्रिकल्याणक भूतकाळमां रे, अनंता जिन गिरनार सलूणा;
वळी अनंता प्रभु पामिया रे, निर्वाणपद गिरनार सलूणा ॥३॥

गत चोवीसीमां त्रण थया रे, नेमीश्वर आदि अडना सलूणा;
अन्य बे जिनवर लहे रे, मोक्षगमन गिरनार सलूणा ॥४॥

अनंतवीर्य भद्रकृतना रे, दीक्षा-नाण-निर्वाण सलूणा;
शेष बावीस जिन पामशे रे, मुक्तिपद बहुमान सलूणा ॥५॥

सहसावनमां राजीमती रे, रथनेमि वरे ज्ञान सलूणा;
कृष्णकेरा सप्त बांधवा रे, रुकमणी सह अणगार सलूणा ॥६॥

गजसुकुमाल मुणिंदनुं रे, व्रत-नाण ने निर्वाण सलूणा;
सुमुखादि पंदर ग्रहे रे, संसार छेदक व्रत सलूणा ॥७॥

समुद्रविजय शिवामातने रे, विरति केरुं वरदान सलूणाः
निषध सारणादि कुमारने रे, चारित्र मळे गिरनार सलूणा ॥८॥

'विरती', 'व्रत', 'संयम' गिरि रे, 'सर्वज्ञ', 'केवल', 'ज्ञान' सलूणा ॥९॥
'निर्वाण' 'तारक' 'शिवगिरि' रे, सेवतां हेम होवे पार सलूणा;
इण कारण भविप्राणिया रे, नित्य ध्यावो गिरनार सलूणा ॥१०॥

शत्रुंज्य समो रैवत...

(राग : जिणंदा प्यारा मुणिंदा प्यारा...)

रैवत प्यारो, उज्जयंत प्यारो, देखो रे गढ गिरनार;
देखो रे नेमिनाथ प्यारो;

शत्रुंज्य समो रैवत महिमा, शास्त्र वयण प्रमाण... ॥१॥
अे गिरि पंचम नाणनो दाता, पंचम शिखर वखाण... ॥२॥
घोर पाप कुष्ठादिक रोगो, रैवत फरशे पलाय... ॥३॥
इण तीरथ आराधन करतां, क्रोड गणु फळ थाय... ॥४॥
महिमा मोटो अे गिरिवरनो, पार कदि न पमाय... ॥५॥
बुद्धिनो लवलेश न मुजमां, भावथी नमुं गिरिराय... ॥६॥
आज लगी शाश्वतगिरिवरना, जाण्या न गुण अपार... ॥७॥
पूरव पुण्य पसाये पाम्यो, हाथ न छोडुं लगार... ॥८॥
नेमि निरंजन गिरि प्रीते, आतमराम रंगाय... ॥९॥
नीरखी नीरखी नेम नगीनो, नयणा कदि न धराय... ॥१०॥

'हंसगिरि', 'विवेकगिरिवर', सुणतां चित्त हराय... ॥११॥
'मुक्तिराज' 'मणिकान्त' 'महाशय', 'अव्याबाध' सुहाय... ॥१२॥
'जगतारण' 'विलास' 'अगम्य', नामथी परम निधान... ॥१३॥
हेम वदे गिरिभक्ति काजे, तन मन मुज कुरबान... ॥१४॥

मेरो प्रभु

(राग : मेरो प्रभु पारसनाथ आधार)

मेरो प्रभु, नेम तुं प्राण आधार,
विसरुं जो प्रभु अेक घडी तो, प्राण रहे ना हमार. ॥१॥

भोग त्यजीने जोग लेवाने, नीकळ्या नेमकुमार,
गढ गिरनारने घाटे वसिया, ब्रह्मचारी शिरदार. ॥२॥

तुज तीरथनी भक्ति करतां, थाय हरि अेक तार;
पद तीर्थंकर करे निकाचित, अकल तुज उपगार. ॥३॥

समतारस भरियो गुण दरियो, नेमनाथ गिरनार;
सुता जागता ध्यावुं निशदिन, श्वासमांहि सो वार. ॥४॥

मन माणिककुं सोंप्युं में तो, मनमोहनने उधार;
प्रेम व्याज चढ्यो छे इतनो, किम छूटशे किरतार. ॥५॥

हारुं नहि तुज बल थकीजी, सिद्धसुख दातार;
श्रद्धा भरी छे अेक हृदयमां, तुजथी पामीश पार. ॥६॥

'आनंदधरगिरि', 'सुखदायी', 'भव्यानंद' मनोहार;
'परमानंदगिरि', 'इष्टसिद्धगिरि', 'रामानंद' जयकार ॥७॥

'भव्याकर्षणगिरि', 'दुःखहरगिरि', 'शिवानंद' सुखकार;
जगनायक नेमिनाथ कहावे, गिरिनायक शणगार. ॥८॥

शामळियाकुं अखियन जाणे, करुणारस भंडार;
हेमवदे प्रभु तुज अखियनकुं दीयो छबी अवतार. ॥९॥

गीत

(ऋषभ जिनराज मुज...) (जागने जादवा...)

साथ गिरनारनो हाथ नेमनाथनो, होय जो मस्तके तो शो तोटो,
अन्य स्थाने रही ध्यावे रैवतगिरि, चोथे भवे पामतो मोक्ष मोटो... १

मात तात घातकी पातकी अति घणो, राय भीमसेन गिरनार आवे,
मुनि बनी मौनधरी अष्टदिन तप तपी, उज्ज्यंतगिरिए मुक्ति पावे... २

वस्तुपाल तेजपाल मंत्री साजनने, धार, पेथड श्रावक भीमो,
तीर्थभक्ति करी तन-मन-धन थकी, मनुज अवतार तस सफल कीनो... ३

छाया पण पक्षीनी आवी पडे गिरिवरे, भ्रमण दुर्गति तणा नाश थावे,
जल थल खेचरा इण गिरि पर रही, त्रीजे भवे मोक्ष मोझार जावे... ४

व्यक्त चेतन रहित पृथ्वी अप् तेजसा, वायु पादप गिरनार पामी,
तीर्थ महिमा थकी कर्म हलवा करी, सवि थया तेहथी मुक्ति गामी... ५

'रत्न' 'प्रमोद' 'प्रशांत' 'पद्मगिरि', 'सिद्धशेखर' भवि पाप जावे,
'चन्द्र-सूरजगिरि' 'इन्द्रपर्वतगिरि', 'आत्मानंद' गिरिवर कहावे... ६

कथीर कंचन हुवे पारसना योगथी, हेम परे शुद्ध निज गुण पावे,
तिम रैवतगिरि योगथी आतमा, पदवी वल्लभ लही मोक्ष जावे... ७

तारजे डुबाडजे

तारजे डुबाडजे जीवाडजे के उगारजे,
सघळुं तने सोंपी दीधुं नेमिनाथ भगवान रे (२)
उगारजे के पाडजे, तरछोडजे स्वीकारजे...
सघळुं तने सोंपी...

सेवा तारी आपजे के दूर तुज थी राखजे (२)
स्मरण तारुँ आपजे के मायामां लपटावजे... (२)
सघळुं तने सोंपी...

सत्संग कोई नो आपजे के कुसुंगमां तुं राखजे (२)
दर्शन तारा आपजे के रखडतो तुं राखजे... (२)
सघळुं तने सोंपी...

सघळुं तारु राखजे, पण वात मारी मानजे (२)
जिनवरना श्री चरणोमां आ बाल ने स्थान आपजे (२)
सघणुं तने सोंपी...

सुनो प्यारे नेमजी

(राग : छुप गया कोई रे...)

सुनो प्यारे नेमजी, म्हारी पुकार रे,
थारी आ राजुल थाने, केवे बार-बार रे

मिलने की आशा में हूँ, बैठी भवन में,
नेम पिया नाम थारो, जप रही मन में,
नव भव की प्रीत स्वामी, किया दूर विसार रे ॥१॥

धूम धाम सूं तोरण पे आये,
तोरण पर आकर स्वामी रथ क्यूं फिराये,
लगती किनारे नैया पड़ी मझदार रे ॥२॥

पशुओं पे करुणा करके, लिया जोग धार रे,
राजुलने साथे ले लो, चलो गिरनार रे,
भक्तजन गुण गाये, प्रभु थारे द्वार रे,
सुनो प्यारे नेमजी, म्हारी पुकार रे....

सोहे उंचो

(राग : एक प्यार का नगमा है....)

सोहे उंचो गढ गिरनार, सोरठनो शणगार,
चालो जइये, यात्रा करवा, ज्यां सिध्या नेमकुमार...

अेतो यादव कुलराया... माता शिवादेवी जाया...
पिता समुद्र विजयराया... सोहे श्यामवर्ण काया...
सुणी पशुओनो पोकार... जेणे त्यागी राजुलनार...

गिरनारमां सहसावन स्वीकार्यु साधु जीवन,
आतमनी लागी लगन, साधनामां मनडुं मगन,
पाम्या ज्यां केवळज्ञान बन्या वितरागी भगवान...

ओ मुक्तिना स्वामी विनवुं अंतरयामी,
मारा जीवनमां खामी दूर करो ओ जग स्वामी,
सुणजो जयनो पोकार दर्शन आपो अेक वार...

मन मोही लीधू गिरनारे...

यादों मा ने स्वप्नों मा बस, तु छे दिन-रात,
ज्यार थी भेट्यो तुझने बस, एक तारी वात ।
तु दोष संताप टाले, तु भवसागर थी उगारे,
तु कर्म क्रोडो ना बाले, तु पापी ने पण तारे ।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

सहु चालो-गिरनारे, सहु चालो नेमजी ना द्वारे,
१) ज्याँ साधना नी बहार छे, सिद्धिना जे दातार छे ।
सौंदर्य एवुं अपार छे, देवलोक ने पण तार छे,
सहसावने संयम अंगीकार... कैवल्य ने वर्या... नेमकुमार,
समवसरण जिन बिंब जुहार, रहनेमि ने तर्या राजुलनार ।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

२) अरिष्ट ने अंजन समा, गिरनार ना शणगार छे,
जेना प्रभावे कईकणो, टूटयो अनंत संसार छे ।
बिराजे प्यारा नेमकुमार, छे धन्य धन्य ते कर्णविहार,
वरसावता ते ब्रह्मजलधार, सविजीव ना ते तारणहार ।
मन मोही लीधू गिरनारे, चित्त चोरी लीधू नेम कुमारे... ॥

आप क्या जाने...

आप क्या जाने नेमि जिनेश्वर, यहाँ हम कैसे जीए जा रहे हैं,
तुज को मिलने की उम्मीद रखकर, गम के आंसु पीए जा रहे है... आप १

तुं सागर है मे ओस बिंदु, मैं एक सूर ओर तुं सूर सिंधु,
सप्तसूरो की सरगम बनाकर, तेरे गीतो को हम गा रहे हैं. आप २

मुखडे पे तेरे ममता जो मलके, नैनो से तेरे प्यार जो छलके,
करुणा और समता की बहती, धारा में हम न्हा रहे हैं... आप ३

तुं समुद्र विजय शिवादेवी नंदा, तेरे चरणों में चोसठ इंदा,
मीटा दे मेरे भवोभव का फंदा, यही अरज हम सुना जा रहे हैं... आप ४

झलक दिखा...

(राग : आ लौट के आजा मेरे मीत...)

झलक दिखा... झलक दिखा... झलक दिखा...
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नैन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥१॥

भक्तों का प्यारा, देवों का दुलारा कितने की आंखों का तारा (२),
दुनिया में चमका नेमिनाथ तुं, जैसे शासन का सितारा,
तेरी आंखे अविकारी नेमिनाथ (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥२॥

बीच भवर में नैया फंसी है, आकर तुं पार लगा दे (२)
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है, आकर गले से लगा दे (२)
अब देर ना लगा तुं नेमिनाथ (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥३॥

वैसे तो तुम हो दिल में हमारे पर आंखे नहीं मानती (२)
अेक पल तेरे से इस भव में बिछड़कर रहना नहीं चाहती (२)
घड़ी घड़ी तरसाओ ना मित (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥४॥

डूब रहा है सुख का ये सूरज, गमकी बदरिया है छायी (२)
उजड़ गई है बगिया जीवन की, मन की कली है मुरझाई (२)
करे विनंती तुझे तेरे भक्त (२) तुझे तेरे लाल बुलाते है,
तेरे दर्शन को तरसे ये नयन (२) तुझे तेरे बाल बुलाते है,
अेक झलक दिखा तुं नेमिनाथ... ॥५॥

नेमि नाम

नेमजी ना नाम नि तू लूट लूटिले (२),
नेमि ना चरणे जई बेड़ो पार करीले (२)

शरणे जाये अेने प्रभु राह बतावे, जपे नेम अेने मोह केम सतावे(२),
राजुलना नाथ नु तू नाम रटीले (२), नेमि ना चरणे...
नेमजी ना... ॥१॥

ध्यान धरे अेने प्रभु ज्ञान अपावे, जाप जपे अेना प्रभु पाप खपावे(२)
हितकारी नेमिने प्रणाम करीले(२), नेमिना चरणे...
नेमजी ना नाम... ॥२॥

कृपा थाये प्रभुनी तो दोष दूर थाय, बंधनो जे राग ना अे धूर धूर थाय(२)
नेमि भजी संसार तमाम तजी ले(२), नेमि ना चरणे...
नेमजी ना नाम... ॥३॥

नेमि नाम नेमि नाम (२)
दिन रात सुबह शाम - नेमि नाम नेमि नाम,
पहुंचाता सिद्धि धाम - नेमि नाम नेमि नाम,
तू जपले रे अविराम - नेमि नाम नेमि नाम,

नेमि नाम, नेमि नाम, नेमि नाम... (३६ बार)

दिन रात एक ही बात... नेमिनाथ नेमिनाथ

नमामी नेमि

परम पवित्र पावन प्रीतम पुरुषोत्तम रे प्यारा,
निष्काम निरागस नाथ निरंजन निर्विकारी न्यारा,
बाविस माँ सितारा, ने द्वारिका दुलारा,
गिरनार न गभारा माँ शोभनारा जे ॥

ब्रह्मचरनारा, सत्व धरनारा,
जीवदया प्रेमी, नमामि नेमी ।

रंभा जेवू रुप जेनू, रम्य राजुल राणी,
पण पोकारे पंथ माँ पशुओ ने प्राणी,
प्रभुना पापणो थी पडे पाणी, मुख माँ थी झरे वैराग्यनी वाणी,
हैये दया उभराणी, कलरव थया कल्याणी,
अन्ते थया निर्वाणी, माणी मुक्ति राणीने ॥ ब्रह्म चर नाथ...

मन महलमां मोह महाराजनी मस्ती छे,
मोह ने मारीने मारे माणवी मुक्ति छे,
करवा हवे मोहघाति घोष पडघम ना,
साधी ने साते सुरो संयम सरगम न,
संबंधो लागे खारा, बनजो एवा सहारा,
चढवी छे ध्यान धारा, तमारा जेवी रे... ब्रह्म...

अनंत तीर्थंकर परमात्मा के कल्याणकों से पावन बने श्री गिरनार महातीर्थ के महाकल्याणकारी १०८ नाम सहित के १०८ खमासमण के दोहे

१. कैलासगिरि :

कैलासगिरिवरे शिववर्या, तीर्थंकरो अनंत;
आगे अनंता पामशे, तीरथकल्प वदंत.

२. उज्ज्यंतगिरि :

उज्ज्यंतगिरिवर मंडणो, शिवादेवीनो नंद;
यदुकुलवंश उजालियो, नमो नमो नेमिजिणंद.

३. रैवतगिरि :

रैवतगिरि समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मानवभव पामी करी, ध्यावुं वारंवार.

४. स्वर्णगिरि :

एकेकुं पगलुं चढे, स्वर्णगिरिनुं जेह;
हेम वदे भवोभवतणा, पातिक थाये छेह.

५. गिरनारगिरि :

सोरठदेशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
सहसावन फरश्यो नही, एनो एले गयो अवतार.

६. नंदभद्रगिरि :

आधि व्याधि उपाधि सौ, जाये तत्काल दूर;
भावथी नंदभद्र वंदता, पामे शिवसुख नूर.

७. पारसगिरि :

लोह जिम कंचन बने, पारसमणिने योग;
गिरि स्पर्शे चिन्मय बने, अशोक चंद सुयोग.

८. योगेन्द्रगिरि :

मन वच काया योगने, जीत्या जे गिरि मांहि;
तिण कारण योगी तणो, इन्द्र कहायो ज्यांही.

९. सनातनगिरि :

गिरि तणा गुणने कहे, तीर्थंकर भगवंत;
सनातनगिरि मानथी, शिव लहे जीव अनंत.

१०. सुरभिगिरि :

दुर्गधानारी इणगिरि, गजपद कुंडे स्नान;
बनी सुगंधी देहडी, सुरभिगिरिने प्रणाम.

११. उदयगिरि :

उदय लहे शुभकर्मनो, अशुभनो थाये तिहां छेद;
एह गिरिना ध्यानथी, अंते लहे अवेद.

१२. तापसगिरि :

तापस पण शिवसुख लहे, एहवो जेहनो प्रभाव;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पामे आत्म स्वभाव.

१३. आलंबनगिरि :

आलंबन आपी रह्यो, सिद्धिसदन सोपान;
जे जे जिवडा तेह भजे, झट पामे शिवस्थान.

१४. परमगिरि :

गिरिवरोमां परमता, पामी जेह सौभाग्य;
आनंद आपे सहु जीवने, दूर करी दुर्भाग्य.

१५. श्रीगिरि :

श्री गिरि छे एक एहवो, प्रिय वस्तुमां अजोड;
भविक जीव झंखे घणुं, वरवा शिववधू कोड.

१६. सप्तशिखरगिरि :

सातराज पहोंचाडवा, जे धरे सप्त शिखर;
स्वगुण महेल प्रवेशवा, जे करे मोटु विवर.

१७. चैतन्यगिरि :

चैतन्यशक्ति प्रगटतां, आत्मानंद जिहां थाय;
तेह गिरिना स्मरणथी, चैतन्यपूंज समराय.

१८. अव्ययगिरि :

व्यय होवे कर्मो तणो, वली अशुभ परिणाम;
अव्ययगिरिने वंदता, शुद्ध स्वरुपने पाम.

१९. ध्रुवगिरि :

एह गिरि छे अनादिथी, काल अनंत रहे जेह;
भूमितले ध्रुवपणे रही, शाश्वतता लहे तेह.

२०. परमोदयगिरि :

ध्यान धरता गिरितणुं, भवचोथे लहे शिव;
परमोदय आतमतणो, प्रगटावे भवि जीव.

२१. निस्तारगिरि :

सहसावने संयमग्रही, गजसुकुमाल मुणिंद;
रैवत मसाणे शिव लही, निस्तारण गिरिंद.

२२. पापहरगिरि :

मातपितानो घातकी, गिरनारे आवंत;
भीमसेन मुगते गयो, पापहर गिरि सेवंत.

२३. कल्याणकगिरि :

अनंतकल्याणक जिन तणा, गिरि शृंगे सोहाय;
व्रत-केवल-मुक्ति लहे, कल्याणक गिरि जोवाय.

२४. वैराग्यगिरि :

मेघ परे वरसे सदा, गिरि वैराग्य झरण;
सिंचे आतम गुणने, परमानंद रमण.

२५. पुण्यदायकगिरि :

सुरतरु सम आराधतां, पुण्यदायक गिरिराज;
ऋद्धि समृद्धि तत्क्षण मिले, वली मले सिद्धिराज.

२६. सिद्धपदगिरि :

सिद्धपद अर्पण करे, जेह गिरिनी सेव;
तिणे कारण वंदिए सदा, अभेद थइ तत्खेव.

२७. द्रष्टिदायकगिरि :

मिथ्याद्रष्टि भमता भवे, पामे गिरि शरण;
सुद्रष्टि लहे पंथे रही, द्रष्टिदायक चरण.

२८. इन्द्रगिरि :

पडिमा भरावी सुरवरे, पूजा करे त्रिकाल;
चैत्यद्वारे रक्षा करे, इन्द्र थइ रखेवाल.

२९. निरंजनगिरि :

स्फटिक जिम छे उजलो, निरंजन निराकार;
शुद्धातम इण गिरि करे, दीसे अंजन आकार.

३०. विश्रामगिरि :

इण क्षेत्रे दान तप करे, क्रोडगणुं फल पाम;
अनंत ऋद्धि निर्मलपणुं, लहेशो गिरि विश्राम.

३१. पंचमगिरि :

स्पर्शो पंचम शिखरे, शिवगामी नेमि चरण;
वरदत्त गणधर पूजो, पामो चरण शरण.

३२. भवच्छेदकगिरि :

भवनिर्वेद करी मुनिवरो, अनशन तपे तपंत;
भवच्छेदकगिरि वंदता, अजरामर पद लहंत.

३३. आश्रयगिरि :

द्रव्यभाव शत्रु हणे, आपे मन वांछित;
गिरिवरनो आश्रय लहे, विश्व बने आश्रित.

३४. स्वर्गगिरि :

देवो वास करे जिहां, करवा जनम पवित्र;
जाणे स्वर्ग वस्यु तिंहा, तिणे स्वर्गगिरि सिद्ध.

३५. समत्वगिरि :

समत्व गुण विलसी रह्यो, महागिरि कणे कण;
स्मरण दर्शन स्पर्शने, दीप अनुभव मण.

३६. अमलगिरि :

विशाल गिरि परशालमां, वास करे भविलोक;
पाप टले भवतणा, अमल गिरि आलोक.

३७. ज्ञानोद्योतगिरि :

भव्यरुपी कमल खिले, ज्ञानोद्योतगिरि तेज;
गुणश्रेणि प्रकाशमां, पामी सिद्धनी सेज.

३८. गुणनिधि :

गुणनिधि ए गिरि थयो, अनंत जिननो ज्यां;
प्रगट्यो निज स्वरुपनो, अकल अमल गुण त्यां.

३९. स्वयंप्रभगिरि :

स्वयंप्रभा खिली रही, जेनी अनादि अनंत;
तेह गिरिने वंदता, दोष टले अनंत.

४०. अपूर्वगिरि :

ए गिरनारने भेटतां, अपूरव उल्लसे देह;
करमदल चूरण करी, पामे भवि सुख तेह.

४१. पूर्णानंदगिरि :

आनंद पूरण जेहना, फरसे ध्याने जेह;
पूर्णानंदगिरि तेहनुं, नाम थयु जग तेह.

४२. अनुपमगिरि :

वानरीमुख नृपअंगजा, इणगिरि झरण पसाय;
अनुपम मुखकमल लही, पामे शिवसुखसदाय.

४३. प्रभंजनगिरि :

प्रभंजनगिरि एहथी, पाप प्रणाशन थाय;
पुण्यपूंज करी एकठो, सुखपामे वरदाय.

४४. प्रभवगिरि :

प्रभवगिरिना प्रभावथी, तिणे शिव पाम्या अनंत;
पामे छे ने पामशे, लब्धि लही अनंत.

४५. अक्षयगिरि :

हिम सम शीतलता हुवे, करे जीव समतापान;
आतम सत्ता प्रगट करी, अक्षयपद विसराम.

४६. रत्नगिरि :

रत्नबलाह गुफामंही, रत्नपडिमा शोभंत;
देव सहाये दरिसण, निकट भवि लहंत.

४७. प्रमोदगिरि :

प्रमोद लहे गिरि दर्शने, पूर्णता स्पर्शे पमाय;
गढ गिरनारनी सहजता, जेह सदा सुखदाय.

४८. प्रशांतगिरि :

प्रकर्षथी करे शांत जेह, कर्म वंटोल अतीव;
प्रशांत गिरिवर तेह छे, वंदु तेहने सदैव.

४९. पद्मगिरि :

पद्मतणी परे जिहां सदा, प्रसरे गुण सुवास;
तेह आपे भवि जीवने, मुक्ति सुख आवास.

५०. सिद्धशेखरगिरि :

सिद्धो थकी शेखर थयो, अन्य गिरिमां तेह;
अनंत जिन निवासथी, पाम्यो मुक्तिरुप जेह.

५१. चंद्रगिरि :

चंद्रसम शीतलपणु, आपे जीवने जेह;
पाप संताप टले इहां, सुख पामे ससनेह.

५२. सुरजगिरि :

सुरज सम प्रतपे बहु, सर्व गिरिमां तेह;
तेहथी सुरज गिरि कह्यु, नाम अनुपम जेह.

५३. इन्द्रपर्वतगिरि :

देवोतणा परिवारमां, शोभे इन्द्र महाराय;
तिम गिरिमाल मांहे, शोभे तीरथराय.

५४. आत्मानंदगिरि :

आतम आनंद जिहां लहे, अनुभवे निरमल सुख;
काल अनादिना टले, मिथ्या मतिना दुःख.

५५. आनंदधरगिरि :

आत्मानंदने पामवा, मुनिवर कोडा कोड;
आनंदधर ए गिरिवरे, करता दोडा दोड.

५६. सुखदायीगिरि :

सुखदायी ए गिरि थयो, आपी अनंत सुखशात;
तेहने पामी भवितणा, टली गया दुःख व्रात.

५७. भव्यानंदगिरि :

अनंतसिद्ध जिहां थया, करी अनशन शुभ भाव;
भव्यानंद पामी करी, विलसे निज स्वभाव.

५८. परमानंदगिरि :

परमानंदने पामतो, दरिसण लहे भवि तेह;
तेह परम पदवी भणी, गति लहे ससनेह.

५९. इष्टसिद्धगिरि :

सर्व शाश्वती औषधि, सुवर्ण सिद्धि रसकूप;
पुण्यशालीने गिरि दिए, इष्टसिद्धि अनुप.

६०. रामानंदगिरि :

आतमराम आनंदमां, झीले जेहनो संग;
रामानंदगिरि वंदता, पामो सुख असंग.

६१. भव्याकर्षणगिरि :

भव्याकर्षणगिरि प्रति, प्रीत भविने अतीव;
जिन अनंतनी प्रगति, आकर्षे ते भविजीव.

६२. दुःखहरगिरि :

गोमेधे घणु दुःख लह्युं, रोगे पीडियो भमंत;
थयो अधिष्ठायक गिरि, दुःखहर गिरि भजंत.

६३. शिवानंदगिरि :

शिवनो आनंद जे गिरि, चढता अनुभवे जीव;
एहवा ते शिवगिरि प्रति, प्रगट्यो नेह अतीव.

६४. उज्वलगिरि :

इण गिरिनी उज्वलप्रभा, प्रसरे चिहुं दिशे ज्यांय;
तिहां थकी तिमिर सहु, झटपट नासे ज्यांय.

६५. आनंदगिरि :

आनंदनां जिहां समुह छे, अनंत जिननां जेह;
तेह फरसी भवि लहे, रहे ना क्लेशनी रेह.

६६. तीर्थोत्तमगिरि :

ए तीरथने भेटतां, सर्व तीरथ फललाध;
ते तीर्थोत्तम प्रणमतां, सुख मले अव्याबाध.

६७. महेश्वरगिरि :

आणा महेश्वरगिरि तणी, त्रण लोके वर्ताय;
अनंत कल्याणकनी जिहां, आर्हन्त्य शक्ति समाय.

६८. रम्यगिरि :

रम्यता ए गिरि तणी, देखी मोह्यु मन;
देवो अने विद्याधरो आवे दोडी प्रसन्न.

६९. बोधिदायगिरि :

सदा कालजे वरसतो, गिरि प्रभाव अमंद;
बोधि बीज वपन करे, बोधिदाय निर्मद.

७०. महोद्योतगिरि :

नेमीश्वरने गिरि श्यामलो, मन मोहे दिन रात;
महोद्योत भीतर करे, गुण पेखी सुख शात.

७१. अनुत्तरगिरि :

अरिहंत ध्यान परमाणुने, ग्रहे अर्हम् पद योग;
साधे जे भवि ते लहे, अनुत्तर सुखनो योग.

७२. प्रशमगिरि :

प्रशमगुण जिहां उपजे, फरसता जीवने ज्यां;
तिणे कारण गिरि स्पर्शथी, सुख पामो भवि त्यां.

७३. मोहभंजकगिरि :

मोहे पीडित जीवडा, आवे गिरि सानिध;
सम्यक्त्व पामी शिव लहे, मोहभंजक गिरि किध.

७४. परमार्थगिरि :

अनंतकालथी प्राणीया, सेवे स्वार्थीय भाव;
गिरि चरण शरण ग्रही, प्रगटे परमार्थ भाव.

७५. शिवस्वरुपगिरि :

मन-वचन-काया वशकरी, योगी सेवे गिरि आज;
शिव स्वरुप रस लिए, बनी सदा भृंगराज.

७६. ललितगिरि :

गिरि हारमालाओ महीं, मनोहर रुप लहंत;
तेह गिरि निरखी भवि, ललितगिरि वदंत.

७७. अमृतगिरि :

अमृतसम दरिसण लही, पामे भव्यत्व छाप;
अमृतगिरितणी सेवा करे, तेना टाले सवि ताप.

७८. दुर्गतिवारणगिरि :

आ भवे परभव भावथी, रैवत भक्ति करंत;
दुःख दरिद्र दुर्गति टले, दुर्गतिवारण नमंत.

७९. कर्मक्षायकगिरि :

कर्मविडंबना जीवने, वलगी काल अनंत;
कर्मक्षायक गिरि सेवतां, आतम मुक्ति लहंत.

८०. अजेयगिरि :

अजेय जे सवि शत्रुने, चिंता सवि दूर जाय;
राग-द्वेष जीती करी, अरिहंत पदने पमाय.

८१. सत्त्वदायकगिरि :

रजस् तमो गुणी आवी, गिरिवर पाद चढंत;
सत्त्वदायक गिरि बले, क्षपक श्रेणी धरंत.

८२. विरतिगिरि :

परमाणु जे सहसावने, दिए विरति परिणाम;
अंतराय सवि दूरे करी, सप्त गुणठाणु पाम.

८३. व्रतगिरि :

हरि पटराणीने यादवो, प्रद्युम्न शांब कुमार;
व्रतगिरिए व्रत ग्रही, पाम्या भवनो पार.

८४. संयमगिरि :

जिन अनंता सहसावने, नेमिप्रभु ठवे पाय;
संयम ग्रही मनःपर्यवी, ध्यान धरी मुगते जाय.

८५. सर्वज्ञगिरि :

रवि लोक प्रकाशतो, सर्वज्ञ लोकालोक;
मोहतिमिर दूरे टले, चेतनशक्ति आलोक.

८६. केवलगिरि :

एक एक प्रदेशमां, गुण अनंतनो वास;
इण गिरि केवल लइ, भोगवे लील विलास.

८७. ज्ञानगिरि :

सहजानंद सुख पामीयो, ज्ञानरस भरपूर;
तेहना बलथी में हण्यो, मोह सुभट महा क्रूर.

८८. निर्वाणगिरि :

जे गिरिए अनंता, निर्वाण पाम्या जिन;
ते निर्वाणगिरि पर, कोइ नहीं दीन हीन.

८९. तारकगिरि :

आंगणुं ए गिरि तणुं, पामे जल थल जेह;
भव सातमे मुक्ति लहे, तारकपणु गुणगेह.

९०. शिवगिरि :

राजिमतीने रहनेमि, सहसावने दीक्षा लीध;
वली शिवपद पामीया, इणगिरि अनशन कीध.

९१. हंसगिरि :

हंस परे निर्मल करे, परिणति शुद्ध सहाय;
जेह गिरि सांनिध्यथी, अनुपम गुण पमाय.

९२. विवेकागिरि :

विवेकगिरि आतमतणो, देह थकी जे भिन्न;
ध्यान धारा मांही लहे, परम सुख अभिन्न.

९३. मुक्तिराजगिरि :

मुगतिना मुगट समो, शोभे ए गिरिराज;
मुक्तिराज ए गिरि थयो, आपे सिद्धनुं राज.

९४. मणिकान्तगिरि :

मणिसम कान्ति जेहनी, दीपे सदा दिनरात;
भविक लोकनी दृष्टिमां, दीसे ते भलीभात.

९५. महायशगिरि :

महान यशने पामीयो, अनंतजिन जिहां सिद्ध;
तेहनी तुलनामां नहीं, अनंत कोई प्रसिद्ध.

९६. अव्याबाधगिरि :

त्रण लोकमां सुरनरो, गिरि आकार पूजंत;
संसार बधा छोडीने, अव्याबाध भजंत.

९७. जगतारणगिरि :

जगतना जीवो सहु, पामी तरे संसार;
एह गुण छे गिरितणो, न लहे फरी अवतार.

९८. विलासगिरि :

ए गिरिनो विलास जे, प्रसरे त्रिहुं जगमांय;
आतमशक्ति प्रगटाववा, भविजन आवे त्यांय.

९९. अगम्यगिरि :

अगम्य गुण छे जेहना, पार न पामे कोइ;
केवली एह जाणी शके, कही न शके ते जोइ.

१००. सुगतिगिरि :

प्राचीन पडिमा विश्वमां, दरिसणे दुर्गति जाय;
पूजो प्रणमो भावथी, सुगति गिरिना पाय.

१०१. वीतरागगिरि :

कर्मरेणु दूरे करे, रैवतभक्ति समीर;
वीतरागगिरि बले, मुक्त बनी रहे स्थिर.

१०२. चिंतामणीगिरि :

भाव चिंतामणी गिरि दिए, गुणरत्नो क्रोडो क्रोड;
इच्छित सर्व शीघ्र फले, भेटवा मन धरे दोड.

१०३. अतुलगिरि :

अनंत कल्याणको थकी, मेरु सम गिरि अतुल;
अन्य गिरि तुलना नही, भाखे ऋषभ अमूल.

१०४. महावैद्यगिरि :

भव रोग पीडतो मने, जन्मजरा मृत्यु दुःख;
गुण योगे रोग वारजो, महावैद्यगिरि दिए सुख.

१०५. पावनगिरि :

त्रस स्थावर गिरि खोळे, कर्म मलथी अपवित्र;
''माँ'' बालने पुनित करे, तिम पावनगिरि धरे हित.

१०६. अचलगिरि :

त्रिकल्याणक परमाणुओ, काल असंख्य अविचल;
रत्नत्रयी अविचल दिए, अचलगिरि परिबल.

१०७. लब्धिगिरि :

अनंतलब्धि इहां उपनी, गणधर मुनि महंत;
आत्मलब्धिगिरि नमो, भावे भजो भगवंत.

१०८. सौभाग्यगिरि :

एकसो आठ शिखर महीं, सौभाग्यशाली गिरि शृंग;
त्रिकल्याणक इण गिरि, रहे प्रतिकाल उत्तंग.
गुण केटला गिरि तणा, गाइ शकुं मति मंद;
बृहस्पति न गणी शके, गुणवंतगिरि अमंद.

श्री गिरनार महातीर्थ के शास्त्रानुसार ६ आरे में ६ नाम सुनने में आये हैं, वह है (१) कैलासगिरि (२) उज्जयंतगिरि (३) रैवतगिरि (४) स्वर्णगिरि (५) गिरनारगिरि (६) नंदभद्रगिरि, परंतु तीर्थप्रीति से इस तीर्थ की भक्ति के लिए इस गिरनार तीर्थ के विविध गुणानुसार यह १०८ नाम और दोहे कि रचना की गई है।

श्री गिरनार महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि

पूर्व में अनंता तीर्थंकरो के कल्याणक, वर्तमान चोवीशी के बावीसवें बालब्रह्मचारी नेमनाथ परमात्मा के दीक्षा-केवलज्ञान तथा मोक्षकल्याणक द्वारा श्री गिरनार महातीर्थ की यह पुनित भूमि पावनकारी बनी है। आनेवाली चोवीशी के २४ तीर्थंकर इस महातीर्थ पर मोक्ष में जानेवाले हैं। इस महातीर्थ की ९९ यात्रा की विधि के लिए शास्त्रों में विशेष कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन पश्चिम भारत में इस चौबीशी के सिर्फ एक तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान के मात्र तीन कल्याणक ही होने की वजह से महाकल्याणकारी भूमि के दर्शन-पूजन तथा स्पर्श द्वारा अनेक भव्यजन आत्मकल्याण की आराधना में विशेष भाव ला सके उसके लिए पुष्ट आलंबन स्वरुप से गिरनार गिरिवर की ९९ यात्रा का आयोजन किया जाता है।

- वर्तमान परिस्थिति को लक्ष्य में रखकर नीचे मुजब यात्रा कर सकते हैं।
- गिरनार के पांच चैत्यवंदन तथा ९९ यात्रा की समझ :

१. तलेटी में आदिनाथ मंदिर में

२. जय तलेटी में नेमिनाथ परमात्मा आदि पांच तीर्थंकर की चरणपादुका के सन्मुख

(पाँचवें पगथिये में श्री नेमिनाथ के चरण पादुका के दर्शन)

३. यात्रा करके दादा की प्रथम टूंक मूलनायक

४. मूल मंदिर के पीछे आदिनाथ मंदिर में

५. अमिझरा पार्श्वनाथ का चैत्यवंदन करना अथवा नेमिनाथ परमात्मा के पगला का चैत्यवंदन करना। वहाँ से सहसावन (दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणक) अथवा जयतलेटी की तरफ से आने से प्रथम यात्रा पूर्ण हुई ऐसा कहा जाता है।

बाद में फिर से जयतलेटी से अथवा सहसावन से पूर्व मुजब दो चैत्यवंदन करके उपर चढ़ते दादा की टूंक दर्शन तथा तीन चैत्यवंदन करके पिछे सहसावन या जयतलेटी से नीचे उतरते ही दुसरी यात्रा हुई ऐसा गीना जाता है। क्रमशः इस तरह १०८ बार दादा की टुंक की स्पर्शना करनी आवश्यक है।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ का चैत्यवंदन

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं;
सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं. १

विमल गिरिवर शृंगमंडन, प्रवर गुणगण भूधरं;
सुर असुर किन्नर कोटि सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं. २

करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं;
निर्जरा वळी नमे अहोनिश, नमो आदि जिनेश्वरं. ३

पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोटि पण मुनि मनहरं;
श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा, नमो आदि जिनेश्वरं. ४

निज साध्य साधक शूर मुनिवर, कोटिनंत ए गिरिवरं;
मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वरं. ५

पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवर तो परं;
नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं. ६

ईम विमल गिरिवर शिखर मंडन, दुःख विहंडण ध्याईए;
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाईए. ७

जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं;
गिरिराज सेवा करण तत्पर, 'पद्मविजय' सुहितकरं. ८

स्तवन

(राग : ते दिन क्यारे आवशे.../छट्टो आरो एवो आवशे...)

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा;
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा... विमला०॥१॥

उज्ज्वल जिन गृह मंडली, तिहां दीपे उत्तुंगा;
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा... विमला०॥२॥

कोइ अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले;
एम श्रीमुख हरि आगले, श्री सीमंधर बोले... विमला०॥३॥

जे सघलां तीरथ कह्यां, यात्रा फल कहीए;
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहीए... विमला०॥४॥

जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे;
'सुजशविजय' संपद लहे, ते नर चिर नंदे... विमला०॥५॥

थोय

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार,
मंत्रमांहे नवकार ज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधर जलमां जाणुं;
पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जेम ऋषभनो वंश, नाभितणो ए अंश,
क्षमावंतमां श्री अरिहंत, तपशूरामां मुनिवर महंत, शत्रुंजय गिरि गुणवंत॥१॥

१. श्री आदिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरुं, विनीतानो राय;
नाभिराया कुल मंडणो, मरुदेवा माय... ॥१॥

पांचसे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल;
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल... ॥२॥

वृषभ लंछन जिन वृषधरुं ए, उत्तम गुण मणिखाण;
तस पद 'पद्म' सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण... ॥३॥

स्तवन

(राग : मालकौंस...मैली चादर ओढके.../आजनो चांदलीयो...)

तुम दरिसण भले पायो, प्रथम जिन ! तुम दरिसण भले पायो;
नाभि नरेसर नंदन निरुपम, माता मरुदेवी जायो... प्र०॥१॥

आज अमीरस जलधर वूठो, मानुं गंगाजले नाह्यो;
सुरतरु सुरमणि प्रमुख अमुपम, ते सवि आज में पायो... प्र०॥२॥

युगलाधर्म निवारण तारण, जग जस मंडप छायो;
प्रभु ! तुज शासन वासन समकित, अंतर वैरी हरायो... प्र०॥३॥

कुदेव कुगुरु कुधर्मनी वासे, मिथ्यामत में फसायो;
में प्रभु ! आज से निश्चय कीनो, सवि मिथ्यात्व गमायो... प्र०॥४॥

बेर बेर करुं विनंति इतनी, तुम सेवा रस पायो;
'ज्ञानविमल' प्रभु साहिब नजरे, समकित पूरण सवायो... प्र०॥५॥

थोय

प्रह ऊठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत;
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाले इंद्र,
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद... ॥१॥

२. श्री अजितनाथ भगवान का चैत्यवंदन

अजितनाथ प्रभु अवतर्यो, विनीतानो स्वामी;
जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिवगामी... ॥१॥

बोहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाल्युं जेणे आय;
गज लंछन लंछन नहि, प्रणमे सुर राय... ॥२॥

साडा चारशे धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह;
पाद 'पद्म' तस प्रणमीये, जिम लहीए शिवगेह... ॥३॥

स्तवन

(राग : परमातम पूरणकला.../ कर चलें हम फीदा...)

अजित जिणंदशुं प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो संग के;
मालती फूले मोहीयो, किम बेसे हो बावलतरु भृंग के...
अजित० ॥१॥

गंगाजलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के;
सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जग चातक बाल के...
अजित० ॥२॥

कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकार के;
आछां तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के...
अजित० ॥३॥

कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के;
गौरी गिरीश गिरिधर विना, नवी चाहे हो कमला निज चित्त के...
अजित० ॥४॥

तिम प्रभुशुं मुज मन रम्युं, बीजाशुं हो नवि आवे दाय के;
श्री नयविजय विबुध तणो, 'वाचक यश' हो नित नित गुण गाय के...
अजित० ॥५॥

थोय

विजयासुत वंदो, तेजशी ज्युं दिणंदो,
शीतलताए चंदो, धीरताए गिरींदो;
मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरींदो,
लहो परमाणंदो, सेवना सुख कंदो ॥१॥

३. श्री संभवनाथ भगवान का चैत्यवंदन

सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ;
जितारी नृप नंदनो, चलवे शिव साथ... ॥१॥

सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे;
चारशे धनुषनुं देहमान, प्रणमो मनरंगे... ॥२॥

साठ लाख पूरव तणुं ए, जिनवर उत्तम आय;
तुरग लंछन पद 'पद्म'ने, नमतां शिवसुख थाय... ॥३॥

स्तवन

(राग : राखना रमकडा.../एक पंखी आवीने.../जनम-जनम का...)

संभव जिनवर विनति, अवधारो गुणज्ञाता रे;
खामी नहि मुज खिजमते, कदीय होशो फलदाता रे... संभव० ॥१॥

कर जोडी ऊभो रहुं, रात-जिवस तुम ध्याने रे;
जो मनमां आणो नहि, तो शुं कहीए थाने रे... संभव० ॥२॥

खोट खजाने को नहि, दीजीये वांछित दानो रे;
करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानो रे... संभव० ॥३॥

काललब्धि मुज मति गणो, भावलब्धि तुम हाथे रे;
लडथडतुं पण गजबच्चुं, गाजे गयवर साथे रे... संभव० ॥४॥

देशो तो तुम हि भला, बीजा तो नवि याचुं रे;
'वाचक यश' कहे सांईशुं, फलशे ए मुज साचुं रे... संभव० ॥५॥

थोय

संभव सुखदाता, जेह जगमां विख्याता,
षट्जीवना त्राता, आपता सुखशाता;
माता ने भ्राता, केवलज्ञान ज्ञाता,
दु:खदोहग व्राता, जास नामे पलाता ॥१॥

४. श्री अभिनंदनस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

नंदन संवर रायनो, चोथा अभिनंदन;
कपि लंछन वंदन करो, भवदु:ख निकंदन... ॥१॥

सिद्धारथा जस मावडी, सिद्धारथ जिनराय;
साडा त्रणसें धनुषमान, सुंदर जस काय... ॥२॥

विनितावासी वंदीये ए, आयु लख पचास;
पूरव तस पद 'पद्म'ने नमतां शिवपुर वास... ॥३॥

स्तवन

(राग : ए मेरे वतन के लोगो.../तुम्हे सूरज कहुँ या चंदा...)

अभिनंदन स्वामी हमारा, प्रभु भवदु:ख भंजणहारा;
ये दुनिया दु:ख की धारा, प्रभु इनसे करो निस्तारा... अभि० ॥१॥

हुं कुमति कुटिल भरमायो, दूरनीति करी दु:ख पायो;
अब शरण लीयो है थारो, मुझे भवजल पार उतारो... अभि० ॥२॥

प्रभु शीख हैये नवि धारी, दुर्गतिमां दु:ख लीयो भारी;
इन कर्मो की गति न्यारी, करे बेर बेर खुवारी... अभि० ॥३॥

तुमे कुरणावंत कहावो, जगतारक बिरुद धरावो;
मेरी अरजीनो एक दावो, इण दुःख से क्युं न छुडावो...अभि० ॥४॥

में विरथा जनम गुमायो, नहीं तन धन स्नेह निवार्यो;
अब पारस पर संग पामी, नहीं 'वीरविजय'कुं खामी... अभि० ॥५॥

थोय

संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो,
थयो हीरो जाचो, मोहने देई तमाचो;
प्रभु गुणगण माचो, एहने ध्याने राचो,
जिनपद सुख साचो, भव्य प्राणी निकाचो ॥१॥

५. श्री सुमतिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

सुमतिनाथ सुहंकरुं, कोसल्ला जस नयरी;
मेघराय मंगला तणो, नंदन जितवयरी... ॥१॥

क्रौंच लंछन जिनराजीयो, त्रणसें धनुषनी देह;
चालीस लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह... ॥२॥

सुमति गुणे करी जे भर्या ए, तर्या संसार अगाध;
तस पद 'पद्म' सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध... ॥३॥

स्तवन

(राग : झांझरिया मुनिवर धन धन तुम अवतार.../शमदम गुणनां आगरुंजी...)

सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुज मन प्रीति;
तेलबिंदु जिम विस्तरेजी, जलमांहे भली रीति,
सोभागी जिनशुं लाग्यो अविहड रंग... वैरागी जिनशुं...
सोभागी० ॥१॥

सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय,
परिमल कस्तूरी तणोजी, महीमांहे महकाय...
सोभागी० ॥२॥

आंगलीए नवि मेरु ढंकाए, छाबडीए रवि-तेज;
अंजलिमां जिम गंग न माए, मुज मन तिम प्रभु हेज...
सोभागी० ॥३॥

हुओ छीपे नहि अधर अरूण जिम, खाता पान सुरंग;
पीवत भरभर प्रभु-गुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभंग...
सोभागी० ॥४॥

ढांकी ईक्षु परालशुं जी, न रहे लही विस्तार;
'वाचक यश' कहे प्रभु तणोजी, तिम मुज प्रेम-प्रकार...
सोभागी० ॥५॥

थोय

सुमति सुमति दाई, मंगला जास माई;
मेरु ने वली राई, ओर एहने तुलाई;
क्षय किधां घाई, केवलज्ञान पाई;
नहि ऊणीम कांई, सेवीए ते सदाई ॥१॥

६. श्री पद्मप्रभस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

कोसंबीपुर राजीयो, धर नरपति ताय;
पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय... ॥१॥

त्रीस लाख पूरव तणुं, जिन आयु पाली;
धनुष अढीसे देहडी, सर्व कर्मने टाली... ॥२॥

पद्म लंछन परमेश्वरुं ए, जिनपद पद्मनी सेव,
'पद्मविजय' कहे कीजीए, भविजन सौ नित्यमेव... ॥३॥

स्तवन

(राग : बहारो फूल बरसाओ.../जगत है स्वार्थ का...)

पद्मप्रभ प्राण से प्यारा, छुडावो कर्मकी धारा;
कर्मफंद तोडवा धोरी, प्रभुजी से अर्ज है मोरी... पद्मप्रभ० ॥१॥

लघुवय एक थें जीया, मुक्ति में वास तुम कीया;
न जानी पीर तें मोरी प्रभु अब खींच ले दोरी...

पद्मप्रभ०॥२॥

विषयसुख मानी मों मन में, गयो सब काल गफलत में;
नरक दुःख वेदना भारी, निकलवा ना रही बारी...

पद्मप्रभ० ॥३॥

परवश दीनता कीनी, पाप की पोट शिर लीनी;
न जानी भक्ति तुम केरी, रह्यो निशदिन दुःख घेरी...

पद्मप्रभ० ॥४॥

इस विध विनंती तोरी, करुं मैं दोय कर जोडी;
आतम आनंद मुज दीजो, 'वीर'नुं काज सब कीजो...

पद्मप्रभ० ॥५॥

थोय

अढीसें धनुष काया, त्यक्त-मद-मोह-माया,
सुसीमा जस माया, शुक्ल जे ध्यान ध्याया;
केवल वर पाया, चामरादि धराया,
सेवे सुर राया, मोक्षनगरे सिधाया ॥१॥

७. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

श्री सुपास जिणंद पास, टाल्यो भव फेरो;
पृथिवी मात उरे जयो, ते नाथ हमेरो... ॥१॥

प्रतिष्ठित सुत सुंदरुं, वाणारसी राय;
वीश लाख पूरव तणुं, प्रभुजीनुं आय... ॥२॥

धनुष बसें जिन देहडीए, स्वस्तिक लंछन सार;
पद 'पद्मे' जस राजतो, तार तार भव तार ... ॥३॥

स्तवन

(राग : सारंग, मल्हार-ललनानी देशी)
(राग : श्री महावीर मनोहरुं.../भरतनी पाटे भूपति.../मुज घट आवजो रे नाथ..)

श्री सुपास जिन वंदीए, सुख-संपत्तिनो हेतु, ललना;
शांत सुधारस जलनिधि, भवसागरमां सेतु, ललना...
श्री सुपास० ॥१॥

सात महाभय टालतो, सप्तम जिनवर देव, ललना;
सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव, ललना...
श्री सुपास० ॥२॥

शिव शंकर जगदीश्वरु, चिदानंद भगवान, ललना;
जिन अरिहा तीर्थंकरु, ज्योति स्वरुप असमान ललना...
श्री सुपास० ॥३॥

अलख निरंजन वच्छलु, सकल जंतु विसराम, ललना;
अभयदान-दाता सदा, पूरण आतमराम, ललना...
श्री सुपास० ॥४॥

वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय सोग, ललना;
निद्रा तंद्रा दुरंदशा, रहित अबाधित योग, ललना...
श्री सुपास० ॥५॥

परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर परधान, ललन;
परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान, ललना...
श्री सुपास० ॥६॥

विधि विरंचि विश्वंभरु, ऋषीकेश जगनाथ, ललना;
अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परमपद साथ, ललना...
श्री सुपास० ॥७॥

एम अनेक अभिधा धरे, अनुभवगम्य विचार, ललना;
जे जाणे तेहने करे, 'आनंदघन' अवतार, ललना...
श्री सुपास० ॥८॥

थोय

सुपास जिनवाणी, सांभले जेह प्राणी,
हृदये पहेंचाणी, ते तर्या भव्य प्राणी;
पांत्रीस गुणखाणी, सूत्रमां जे गूंथाणी,
षट् द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं घाणी ॥१॥

८. श्री चंद्रप्रभस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

लक्ष्मणा माता जनमीयो, महसेन जस ताय;
उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय... ॥१॥

दश लाख पूरव आउखुं, दोढसो धनुषनी देह;
सुरनरपति सेवा करे, धरता अति ससनेह... ॥२॥

चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार;
'पद्मविजय' कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार... ॥३॥

स्तवन

(राग : वीरकुंवरनी वातडी केने कहीये...)

चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य करीए रे, नित्य करीए रे, नित्य करीए,
करीए तो भवजल तरीए... हां रे चडते परिणाम...
चंद्रप्रभ० ॥१॥

लक्ष्मणा माता जनमीया जिनराया, जिन उडुपति लंछन पाया;
एतो चंद्रपुरीना राया, हां रे नित्य लीजे नाम...

चंद्रप्रभ० ॥२॥

महसेन पिता जेहना प्रभु बलिया, मने जिनजी एकांते मलीया;
मारा मनना मनोरथ फलीया... हां रे दीठे दु:ख जाय...

चंद्रप्रभ० ॥३॥

दोढसो धनुषनी देहडी जिन दीपे, तेजे करी दिनकर झीपे;
सुर कोडी ऊभा समीपे... हां रे नित्य करतां सेवा...

चंद्रप्रभ० ॥४॥

दश लाख पूर्वनुं आउखुं जिन पाली, निज आतमने अजवाली;
दुष्ट कर्मना मर्मने टाली... हां रे लह्युं केवलज्ञान...

चंद्रप्रभ० ॥५॥

समेतशिखर गिरि आविया प्रभु रंगे, मुनि कोडी सहस प्रसंगे;
पाली अणसण उलट अंगे... हां रे पाम्या परमानंद...

चंद्रप्रभ० ॥६॥

श्री जिन उत्तम रुपने जे ध्यावे, ते कीर्ति कमला पावे;
'मोहनविजय' गुण गावे... हां रे आपो अविचल राज...

चंद्रप्रभ० ॥७॥

थोय

सेवे सुर वृंदा, जास चरणारविंदा,
अट्ठम जिणचंदा, चंद वरणे सोहंदा;
महसेन नृप नंदा, कापता दु:ख दंदा,
लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा ॥१॥

९. श्री सुविधिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

सुविधिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात;
मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रुडी मात... ॥१॥

आयु बे लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय;
काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभु पाय... ॥२॥

उत्तमविधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधि जिन नाम;
नमतां रस पद 'पद्म'ने, लहिये शाश्वत धाम... ॥३॥

स्तवन

(राग : सारंग.../दर्शन द्यो घनश्याम.../जिन ! तेरे चरणकी.../मैली चादर...)

मैं कीनो नहि तुम बिन ओर शुं राग.. मैं कीनो नहि...!
दिन दिन वान चढत गुण तेरो, ज्युं कंचन परभाग;

ओरनमें है कषायों की कालिमा, सो क्युं सेवा लाग...
मैं कीनो० ॥१॥

राजहंस तुं मानसरोवर, ओर अशुचि रुचि काग;
विषम भुजंगम गरुड तुं कहीए, ओर विषय विषनाग...
मैं कीनो० ॥२॥

ओर देव जल छील्लर सरीखे, तुं तो समुद्र अथाग;
तुं सुरतरु जगवांछित पूरण, ओर तो सुके साग...
मैं कीनो० ॥३॥

तुं पुरुषोत्तम तुं हि निरंजन, तुं शंकर वडभाग;
तुं ब्रह्मा तुं बुद्ध महाबल, तुंही ज देव वीतराग...
मैं कीनो० ॥४॥

सुविधिनाथ तुज गुण फूलन को, मेरो दिल हे बाग;
'जस' कहे भ्रमर रसिक होई तामें, लीजे भक्ति पराग...
मैं कीनो० ॥५॥

थोय

नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो,
जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो;
जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो,
सुविधिदिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो ॥१॥

१०. श्री शीतलनाथ भगवान का चैत्यवंदन

नंदा द्रढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ;
राजा भद्दीलपुर तणो, चलवे शिवपुर साथ... ॥१॥

लाख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण;
काया माया टालीने, लह्यां पंचम नाण... ॥२॥

श्रीवत्स लंछन सुंदरुं ए, पद 'पद्मे' रहे जास;
ते जिननी सेवा थकी, लहीये लील विलास... ॥३॥

स्तवन

(राग : धन्याश्री गोडी- ''गुणह वशाला मंगलिक माला...'' ए देशी)
(राग : दीन दु:खीयानो.../श्री सीमंधरस्वामी मुक्तिना गामी.../
वीरजिणंद जगत...)

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे;
करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे...
शीतल० ॥१॥

सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्मविदारण तीक्षण रे;
हान-दानरहित परिणामी, उदासीनता वीक्षण रे...
शीतल० ॥२॥

परदु:ख-छेदन ईच्छा करुणा, तीक्षण परदु:ख रीझे रे;
उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे...
शीतल० ॥३॥

अभयदान तिम लक्षण करूणा, तीक्षणता गुण भावे रे;
प्रेरक विण कृति उदासीनता, ईम विरोध मति नावे रे...
शीतल० ॥४॥

शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे;
योगी भोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगी उपयोगे रे...
शीतल० ॥५॥

इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे;
अचरिजकारी चित्र-विचित्रा, 'आनंदघन' पद लेती रे...
शीतल० ॥६॥

थोय

शीतलजिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी,
प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी;
जे शिवगतिगामी, शाश्वतानंद धामी,
भवि शिवसुख कामी, प्रणमीए शीष नामी ॥१॥

११. श्री श्रेयांसनाथ भगवान का चैत्यवंदन

श्री श्रेयांस आग्यारमा, विष्णु नृप ताय;
विष्णु माता जेहनी, ऐंशी धनुषनी काय... ॥१॥

वरस चोराशी लाखनुं, पाल्युं जेणे आय;
खड्गी लंछन पद कजे, सिंहपुरीनो राय... ॥२॥

राज्य तजी दीक्षा वरीए, जिनवर उत्तम ज्ञान;
पाम्या तस पद 'पद्मने' नमतां अविचल ठाण... ॥३॥

स्तवन

(राग : गोडी-अहो मतवाले साजना... ए देशी)
(राग : छुलेने दो नाजुक.../ एक पंखी आवीये उडी...)

श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे;
अध्यातम-मत- पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे...
श्री श्रेयांस० ॥१॥

सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनिगण आतमरामी रे;
मुख्यपणे जे आतमरामी, ते केवल निष्कामी रे...
श्री श्रेयांस० ॥२॥

निजस्वरुप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहिये रे;
जे किरिया करी चउगति साधे, ते न अध्यातम कहिये रे...
श्री श्रेयांस० ॥३॥

नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे;
भाव अध्यातम निज गुण साधे, तो तेहशुं रढ मंडो रे...
श्री श्रेयांस० ॥४॥

शब्द अध्यातम अर्थ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे;
शब्द अध्यातम भजना जणी, हान ग्रहण मति धरजो रे...
श्री श्रेयांस० ॥५॥

अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे;
वस्तुगतें जे वस्तु प्रकाशे, 'आनंदघन' मत वासी रे...
श्री श्रेयांस० ॥६॥

थोय

विष्णु जस माता, जेहना विष्णु तात,
प्रभुना अवदात, तीन भुवन में विख्यात;
सुरपति संघात; जास निकटे आयात,
करी कर्मनो घात, पामिया मोक्ष शात ॥१॥

१२. श्री वासुपूज्यस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम;
वसुपूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम... ॥१॥

महिषलंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण;
काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण... ॥२॥

संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय;
तस मुख 'पद्म' वचन सुणी, परमानंदीत थाय... ॥३॥

स्तवन

(राग : चार दिवसनां चांदरडा.../गमे ते स्वरुपे गमे त्यां...)

स्वामी ! तुमे कांई कामण किधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं;
अमे पण तुमशुं कामण करशुं, भक्ते ग्रही मन-घरमां धरशुं,
साहिबा ! वासुपूज्य जिणंदा, मोहना ! वासुपूज्य जिणंदा...
सा० ॥१॥

मन घरमां धरीया घर शोभा, देखत नित्य रहेशो थिर थोभा;
मन- वैकुंठ अकुंठित भक्ते, योगी भाखे अनुभव युक्ते...
सा० ॥२॥

क्लेश वासित मन ते संसार, क्लेश रहित मन ते भवपार;
जो विशुद्ध मन-घर तुमे आव्या, तो अमे नवनिधि ऋद्धि पाया...
सा० ॥३॥

सात राज अलगा जई बेठा, पण भगते अम मनमांही पेठा;
अलगाने वलग्या जे रहेवुं, ते भाणा खडखड दु:ख सहेवुं...
सा० ॥४॥

ध्याता-ध्येय-ध्यान गुण एके, भेद-छेद करशुं हवे टेके;
क्षीर-नीर परे तुमशुं मिलशुं, 'वाचक यश' कहे हेजे हलशुं...
सा० ॥५॥

थोय

विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी;
धर्मना दातारी, कामक्रोधादि वारी;
तार्या नरनारी, दु:खदोहग हारी;
वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी ॥१॥

१३. श्री विमलनाथ भगवान का चैत्यवंदन

कंपिलपुर विमलप्रभु, श्यामा माता मल्हार;
कृतवर्मा नृत कुलनभे, उगमीयो दिनकार... ॥१॥

लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुष्यनी काय;
साठ लाख वरसा तणुं, आयु सुख समुदाय... ॥२॥

विमल विमल पोते थया ए, सेवक विमल करेह;
तुज पद 'पद्म' विमल प्रति, सेवुं धरी ससनेह... ॥३॥

स्तवन

(राग : में किनो नहीं.../ प्रभुजी अजवाला देखाडो...)
(राग : सत्यम शिवम सुन्दरम्...)

प्रभुजी ! मुज अवगुण मत देखो... हो प्रभुजी ! मुज...!
राग दशाथी तुं रहे न्यारे, हुं मन रागे वालुं;
द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालुं...
हो प्र० ॥१॥

मोह लेश फरस्यो नहीं तुजने, मोह लगन मुज प्यारी;
तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, ए पण रहेणी न्यारी...
हो प्र० ॥२॥

तुं ही निरागी भावपद साधे, हुं आशा संग विलुध्धो;
तुं निश्चल हुं चल, तुं सीधो, हुं आचरणे उंधो...
हो प्र० ॥३॥

तुज स्वभावथी अवला मारा, चरित्र सकल जगे जाण्या;
एहवा अवगुण मुज अतिभारी; न घटे तुज मुख आण्यां...
हो प्र० ॥४॥

प्रेम नवल जो होई सवाई, विमलनाथ मुख आगे;
'कांति' कहे भवरान उतरतां, तो वेला नवि लागे...
हो प्र० ॥५॥

थोय

विमलजिन जुहारो, पाप संताप वारो,
श्यामांब मल्हारो, विश्वकीर्ति विफारो;
योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो,
गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो ॥१॥

१४. श्री अनंतनाथ भगवान का चैत्यवंदन

अनंत अनंत गुण आगरुं, नयरी अयोध्यावासी;
सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी... ॥१॥

सुजसा माता जनमीयो, त्रीस लाख उदार;
वरस आउखुं पालियुं, जिनवर जयकार... ॥२॥

लंछन सिंचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास;
जिन पद 'पद्म' नम्या थकी, लहिये सहज विलास... ॥३॥

स्तवन

(राग : निलूडि रायण... आंखडी मारी प्रभु.../प्रीतलडी बंधाणी रे...)

श्री अनंतजिनशुं करो, साहेलडियां, चोल मजीठनो रंग रे, गुण वेलडियां;
साचो रंग ते धर्मनो, सा०, बीजो रंग पतंग रे, गु०. श्री० ॥१॥

धर्मरंग जीरण नहि, सा०, देह ते जीरण थाय रे गु;
सोनुं ते विणसे नहि, सा०, घाट-घडामण जाय रे,गु०. श्री० ॥२॥

तांबुं जे रसवेधीयुं, सा०, ते होए जाचुं हेम रे गु;
फरी ताबुं ते नवि होवे, सा०, एहवो जगगुरु प्रेम रे, गु०. श्री० ॥३॥

उत्तम गुण अनुरागथी, सा०, लहिए उत्तम ठाम रे, गु०;
उत्तम निज महिमा वधे सा०, दीपे उत्तम धाम रे, गु०. श्री० ॥४॥

उदकबिंदु सायर भल्यो, सा०, जिम होय अखय अभंग रे, गु०;
'वाचक यश' कहे प्रभुगुणे, सा०, तिम मुज प्रेम प्रसंग रे, गु०. श्री० ॥५॥

थोय

अनंत अनंतनाणी, जास महिमा गवाणी,
सुर नर तिरि प्राणी, सांभले जास वाणी;
एक वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी,
तर्या ते गुणखाणी, पामिया सिद्धिराणी ॥१॥

१५. श्री धर्मनाथ भगवान का चैत्यवंदन

भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात;
वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात... ॥१॥

दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनु पिस्तालीश;
रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश... ॥२॥

धर्म मारग जिनवर कहे ए, उत्तम जन आधार;
तेणे तुज पाद 'पद्म' तणी, सेवा करुं निरधार... ॥३॥

स्तवन

(राग : सखी रे आज आनंद की घडी.../मैया मोरी में नहि माखन खायो...)

लागी रे मुने ! धर्म जिणंदशुं प्रीत (२) लागी रे मुने !

प्रीत पुरानी न तोडो जिनजी (२) ए सज्जन की न रीत... लागी० ॥१॥

दान शीयल तप भावना चउविध (२) धर्म की थापना कीध... लागी० ॥२॥

दश द्वादश विध साधु श्राध्ध के (२) देशना धर्म की दीध... लागी० ॥३॥

जगजंतु उद्धारण कारण (२) मारग कीयो रे प्रसिद्ध... लागी० ॥४॥

धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाशी (२) जग में बहु जश लीध... लागी० ॥५॥

'वीरविजय' आतमपद लेवा (२) धर्म सुण्यानी रे प्रीत... लागी० ॥६॥

थोय

धरम धरम धोरी, कर्मना पास तोरी,
केवलश्री जोरी, जेह चोरे न चोरी;
दर्शन मद छोरी, जाय भाग्या सटोरी,
नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी ॥१॥

१६. श्री शांतिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

शान्ति जिनेश्वर सोलमां, अचिरासुत वंदो;
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुख कंदो... ॥१॥

मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण;
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण... ॥२॥

चालीश धनुषनी देहडीए, समचउरस संठाण;
वदन 'पद्म' ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण... ॥३॥

स्तवन

(राग : नागीन की धून.../सिद्धारथना रे नंदन विनवुं...)

मारो मुजरो ल्योने राज ! साहिब ! शांति ! सलूणा !
अचिराजीना नंदन तोरे, दरिशण हेते आव्यो;
समकित रीझ करोने स्वामी, भक्ति भेटणुं लाव्यो... मारो० ॥१॥

दु:खभंजन छे बिरुद तमारुं, अमने आशा तुमारी;
तुमे निरागी थईने छूटो, शी गति होशे हमारी ?... मारो० ॥२॥

कहेशे लोक न ताणी कहेवुं, एवडुं स्वामी आगे;
पण बालक जो बोली न जाणे, तो किम व्हालो लागे ?... मारो० ॥३॥

मारे तो तुं समरथ साहिब, तो किम ओछुं मानुं ?;
चिंतामणि जेणे गांठे बांध्युं, तेहने काम किश्यानुं ?...मारो० ॥४॥

अध्यातम रवि उग्यो मुज घट, मोहतिमिर हर्युं जुगते;
विमलविजय वाचकनो सेवक, 'राम' कहे शुभ भगते...मारो० ॥५॥

थोय

शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे,
सुमित्रने घेर पारणुं, भवपार उतारे ;
विचरंता अवनि तले, तप उग्र विहारे,
ज्ञानध्यान एकतानथी, तिर्थंचनं तारे ॥१॥

१७. श्री कुंथुनाथ भगवान का चैत्यवंदन

कुंथुनाथ कामित दीए, गजपुरनो राय;
सिरि माता अवतर्यो, सुर नरपति ताय... ॥१॥

काया पांत्रीस धनुष्यनी, लंछन जस छाग;
केवलज्ञानादिक गुणो, प्रणमो धरी राग... ॥२॥

सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय;
'पद्मविजय' कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय... ॥३॥

स्तवन

(राग : गुर्जरी-रामकली-अंबर दे हो मोरारी हमारो-ए देशी)
(राग : ऐसी आय बनी.../मुज अवगुण मत.../मेरुशिखर न्हवरावे...)

कुंथुजिन ! मनडुं किमही न बाजे, हो कुंथुजिन ! मनडुं०
जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगुं भाजे...
हो कुंथु० ॥१॥

रजनी वासर वसति उज्जड, गयण पायाले जाय;
साप खाय ने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय...
हो कुंथु० ॥२॥

मुक्तितणा अभिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे;
वयरीडुं कांई एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे...
हो कुंथु० ॥३॥

आगम आगमधरने हाथे, नावे किण विध आंकुं;
किहां कणे जो हठ करी अटकुं तो, व्यालतणी परे वांकुं..
हो कुंथु० ॥४॥

जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नांहि;
सर्व मांहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मनमांहि...
हो कुंथु० ॥५॥

जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो;
सुर-नर-पंडितजन समजावे, समजे न माहरो सालो...
हो कुंथु० ॥६॥

में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले;
बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले...
हो कुंथु० ॥७॥

मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं, एह वात नहीं खोटी;
ईम कहे साध्युं ते नवि मानुं, एक ही वात छे मोटी...
हो कुंथु० ॥८॥

मनडुं दुराराध्य तें वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं;
'आनंदघन' प्रभु ! माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं...
हो कुंथु० ॥९॥

थोय

कुंथुजिन नाथ, जे करे छे सनाथ,
तारे भवपाथ, जे ग्रही भव्यहाथ;
एहनो तजे साथ, बावल दीए बाथ,
तरे सुरनर साथ, जे सुणे एक गाथ ॥१॥

१८. श्री अरनाथ भगवान का चैत्यवंदन

नागपुरे अर जिनवरुं, सुदर्शन नृप नंद;
देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद... ॥१॥

लंछन नंदावर्तनुं, काया धनुष त्रीश;
सहस चोराशी वरसनुं, आयु जास जगीश... ॥२॥

अरुज अजर अर जिनवरुं ए, पाम्यो उत्तम ठाण;
तस पद 'पद्म' आलंबतां, लहीये पद निरवाण... ॥३॥

स्तवन

(राग : वंदना वंदना वंदना रे...)

वंदना वंदना वंदना रे, अरनाथकुं सदा मोरी वंदना रे.. !
वंदना ते पापनिकंदना रे, जगनाथकुं सदा मोरी वंदना रे.. मेरे नाथकुं०
जग उपकारी धन ज्यों वरसे, वाणी शीतल चंदना रे... जग० ॥१॥
रूपे रंभा राणी श्रीदेवी, भूप सुदर्शन नंदना रे... जग० ॥२॥
भावभगतिशुं अहनिश सेवे, दुरित हरे भवफंदना रे... जग० ॥३॥
छ खंड साधी भीती द्विधा कीधी, दुर्जय शत्रु निकंदना रे... जग० ॥४॥
'न्यायसागर' प्रभु सेवा मेवा, मागे परमानंदना रे... जग० ॥५॥

थोय

अर जिनवर राया, जेहनी देवी माया,
सुदर्शन नृप ताया, जास सुवर्ण काया;
नंदावर्त्त पाया, देशना शुद्ध दाया,
समवसरण विरचाया, इन्द्र इन्द्राणी गाया ॥१॥

१९. श्री मल्लिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

मल्लिनाथ ओगणीशमा, जस मिथिला नयरी;
प्रभावती जस मावडी, टाले कर्मवयरी... ॥१॥

तात श्री कुंभ नरेसरु, धनुष पचवीशनी काय;
लंछन कलश मंगल करुं, निर्मम निरमाय... ॥२॥

वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय;
'पद्मविजय' कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय... ॥३॥

स्तवन

(राग : तुं वादा न तोड.../अब सोंप दिया.../कौन भरे कौन भरे कौन भरे रे...)

कौन रमे कौन रमे कौन रमे रे, मल्लिनाथजी विना चित्त कौन रमे रे... !
माता प्रभावती राणी जायो, कुंभ नृपति सुत काम दमे रे... कौन० ॥१॥

कामकुंभ जिम कामित पूरे, कुंद लंछन जिन मुख गमे रे... कौन० ॥२॥
मिथिलानयरी जनम प्रभु को, दर्शन देखत दुःख शमे रे... कौन० ॥३॥
घेबर भोजन सरसा पीरस्या, कुकस बाकस कौन जमे ? रे... कौन० ॥४॥
नीलवरण प्रभु कान्ति के आगे, मरकतमणि छबी दूर भमे रे...कौन० ॥५॥
'न्यायसागर' प्रभु जगनो पामी, हरिहर ब्रह्मा कौन नमे ? रे... कौन० ॥६॥

थोय

मल्लिजिन नमीए, पूरवलां पाप गमीए,
इन्द्रिय गण दमीए, आण जिननी न क्रमीए;
भवमां नवी भमीए, सर्व परभाव वमीए;
निजगुणमां रमीए, कर्ममल सर्व दमीए ॥१॥

२०. श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछनः
पद्मा माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन... ॥१॥

राजगृही नगरी धणी, वीश धनुष शरीर;
कर्म निकाचित रेणुं व्रज, उद्दाम शरीर... ॥२॥

त्रीश हजार वरसा तणुं ए, पाली आयु उदार;
'पद्मविजय' कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार... ॥३॥

स्तवन

(राग : तोडी.../जय जय जय जय पार्श्व जिणंदा.../हे प्रभु ! पार्श्वचिंतामणि...)

आज सफल दिन भयो सखीरी... आज सफल... !

मुनिसुव्रत जिनवर की मूरति, मोहनगारी जो निरखीरी... आ० ॥१॥

आज मेरे घर सुरतरु उगीयो, निधि प्रगट भई आज सखीरी... आ० ॥२॥

आज मनोरथ सकल फले मेरे, प्रभु देखत दिल हरखीरी... आ० ॥३॥

पाप गये सब ही भव-भव के, दुरगति दुरमति दूर नखीरी... आ० ॥४॥

कहे 'जिनहर्ष' मुगति के दाता, शिर पगरी ताकी आण रखीरी... आ० ॥५॥

थोय

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे,
सवि संपत्ति पामे, स्वर्गना सुख जामे:
दुर्गतिदु:ख वामे, नवि पडे मोह भामे,
सवि कर्म विरामे, जई वसे सिद्धि धामे ॥१॥

२१. श्री नमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

मिथिला नयरी राजीयो, वप्रा सुत साचो;
विजयराय सुत छोडीने, अवर मत माचो... ॥१॥

नीलकमल लंछन भलुं, पत्रर धनुष्यनी देह;
नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणिगेह... ॥२॥

दश हजार वरस तणुं ए, पाल्युं परगट आय;
'पद्मविजय' कहे पुण्यथी, नमीये ते जिनराय... ॥३॥

स्तवन

(राग : आज मारा प्रभुजी.../चार दिवसना चांदरडा...)

श्री नमिनाथने चरणे नमतां, मन गमता सुख लहीए रे;
भवजंगलमां भमता भमता, कर्म निकाचित दहीए रे... श्री० ॥१॥

समकित शिवपुरमांही पहोंचाडे, समकित धरम आधार रे;
श्री जिनवरनी पूजा करीए, ए समकितनो सार रे... श्री० ॥२॥

जे समकितथी होय उपरांठा, तेना सुख जाये नाठा रे;
जे कहे जिनपूजा नवि कीजे, तेनुं नाम न लीजे रे... श्री० ॥३॥

वप्राराणीनो सुत पूजो, जिम संसारे न धुजो रे;
भवजलतारक कष्ट निवारक, नहि कोई एहवो दूजो रे... श्री० ॥४॥

श्री किर्तिविजय उवज्झायनो सेवक, 'विनय' कहे प्रभु सेवो रे;
त्रण तत्व मनमांहे अवधारो, वंदो अरिहंत देवो रे... श्री० ॥५॥

नमीए नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह,
अघ-समुदय जेह, ते रहे नाहि रेह;
लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह,
लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह. ॥१॥

२२. श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीशमा, अपराजीतथी आय;
शौरीपुरीमां अवतर्या, कन्या राशि सुहाय... ॥१॥

योनि वाघ विवेकीने, राक्षस गण अद्‌भुत;
रिख चित्रा चोपन दिन, मौनवता मनपूत... ॥२॥

वेतस हेठे केवलीए, पंचसया छत्रीस;
वाचंयमशुं शिव वर्या, वीर नमे निशदीश... ॥३॥

स्तवन

(राग : मेरुशिखर न्हवरावे हो.../फूल तुम्हें भेजा था/
शांतिजिनेश्वर साचो)

देखत हि चित्त चोर लियो है... देखत हि चित्त चोर लियो है !
शाम को नाम रुचत मोहि अहनिशी, शाम बिना कहा काज जियो रे,
सिद्धिवधू के लिये मुझ छोडी, पशुअन के शिर दोष दियो है...
परकी पीडन जानत ता सो, वैर वसायो जो नेह कियो है
प्राण धरत में प्राण पिया बिन, वज्र से भी मोहि कठिन हियो है...
जस प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिवसुख रस पियो है...

थोय

(राग : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर)

नारदपुरीमंडन यदुनंदन, नमीये नेमिजिनेशोजी,
देवल आठ अनोपम बीजा, तिणमां जिने चोवीशोजी;
जीवादिक नवतत्त्व प्रकाशी, आतमलीलावासीजी,
अंबादेवी सार करेवी, नेमिजिन मेवासीजी. ॥१॥

२३. श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी, त्रोडे भवपास;
वामा माता जनमिया, अहि लंछन जास... ॥१॥

अश्वसेन सुत सुखकरुं, नव हाथनी काय;
काशी देश वाणारसी, पुण्ये प्रभु आय... ॥२॥

एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाली पार्श्वकुमार;
'पद्म' कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार... ॥३॥

स्तवन

(राग : मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं.../तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो...)

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो रे;
सांभलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो,

सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव-सुख आपो,
आपो आपोने महाराज, अमने मोक्ष सुख आपो... सेवक०॥१॥

सुह कोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो रे,
एवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे... सेवक०॥२॥

सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो रे,
करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो... सेवक०॥३॥

लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे रे,
धुमाडे धीजुं नहि साहिब, पेट पड्या पतीजे... सेवक०॥४॥

श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो रे,
कहे 'जिनहर्ष' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो...सेवक०॥५॥

थोय

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवांछितपूरण सुरतरु, जय वामासुत ! अलवेसरुं...॥१॥

२४. श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

सिद्धारथ सूत वंदीए, त्रिशलानो जायो;
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुरनरपति गायो... ॥१॥

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय;
बोहोंतेर वर्षनुं आउखुं, श्रीवीरजिनेश्वरराय... ॥२॥

खीमाविजय जिनराजना ए, उत्तम गुण अवदात;
सात बोलथी वर्णव्या, 'पद्मविजय' विख्यात... ॥३॥

(राग : चंदन सा बदन.../एक पंखी आवीने...)

गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे;
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मल थाये काया रे... गिरुआ० ॥१॥

तुम गुणगण गंगाजले, हुं झीलीने निर्मल थाउं रे;
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे... गिरुआ० ॥२॥

झील्या जे गंगा जले, ते छील्लर जल नवि पेसे रे ?
जे मालती फूले मोहिया, ते बावल जई नवि बेसे रे... गिरुआ० ॥३॥

एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे;
ते केम परसुर आदरे, जे परनारी वश राच्या रे... गिरुआ० ॥४॥

तुं गति तुं मति आसरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे;
'वाचक यश' कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारे रे... गिरुआ० ॥५॥

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव;
करुणारस कंदो, वंदो आणंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुणमणि केरो खाणी... ॥१॥

श्री सीमंधर स्वामी भगवान का चैत्यवंदन

श्री सीमंधर ! जगधणी ! आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो... ॥१॥

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ... ॥२॥

सयल संग छंडी करी, चारित्र लईशुं;
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं... ॥३॥

ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव... ॥४॥

कर जोडीने विनवुं, सामो रही ईशान;
भाव जिनेश्वर 'भाणने', देजो समकित दान... ॥५॥

स्तवन

(राग : दिकरी चाली रे एना सासरे...)

तमे महाविदेह जईने कहेजो चांदलीया (२), सीमंधर तेडा मोकले,
तमे भरतक्षेत्रना दुःख कहेजो चांदलीया (२), सीमंधर तेडा मोकले...
॥१॥

अज्ञानता अहीं छवाई गई छे, तत्त्वनी वातो भूलाई गई छे;
एवा आत्माना दुःख मारा कहेजो चांदलीया... सीमंधर० ॥२॥

पुद्गलना मोहमां फसाई गयो छुं, कर्मोनी जालमां जकडाई गयो छुं;
एवा कर्मोना दुःख मारा कहेजो चांदलीया... सीमंधर० ॥३॥

मारुं न हतुं तेने मारुं करी मान्युं, मारुं हतुं तेने नांहि पीछाण्युं;
एवा मूर्खताना दुःख मारा कहेजो चांदलीया... सीमंधर० ॥४॥

सीमंधर सीमंधर हृदये धरतो, प्रत्यक्ष दर्शननी आशा हुं करतो;
एवा वियोगना दुःख मारा कहेजो चांदलीया... सीमंधर० ॥५॥

संसारनुं सुख मने कारमुं ज लागे, तुम विण वात कहुं कोनी रे आगे;
एवा 'वीरविजयना' दुःख मारा कहेजो चांदलीया... सीमंधर० ॥६॥

थोय

श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिबदेव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करुं सेव;
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥१॥

अमावस के दिन कल्याणकारी कल्याणकभूमि की स्पर्शना

देवांगना ने देवताओ, जेनी सेवना झंखता,
मली तीर्थकल्पो वली, जेना गुणलां गावता,
जिनो अनंता जे भूमिए, परमपदने पामता,
ए गिरनारने वंदता, मुज जन्म आज सफल थयो.

शास्त्रकार फरमाते हैं कि....

गिरनार महातीर्थ में आज तक अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षा - केवल और मोक्ष कल्याणक हुए हैं तथा अन्य अनंत तीर्थंकर परमात्मा के मात्र मोक्षकल्याणक हुए हैं।

इस महातीर्थ पर हुए अनंत तीर्थंकर कल्याणक दिनों की तिथि तथा निश्चित स्थान से भी आज हम अज्ञात हैं। तो हमारे जन्मो-जनम के अज्ञान तिमिर को दूर करने के लिए...

चलो ! श्री नेमिनाथ प्रभु के केवलज्ञान कल्याणक की मासिक तिथि के दिन इस कल्याणक भूमि की स्पर्शना-भक्ति के साथ-साथ भूतकाल में हुए अनंत तीर्थंकर परमात्मा के दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक और मोक्षकल्याणक

की पावनभूमि की भी स्पर्शना-भक्ति की आराधना के द्वारा हमारे अनंतजन्मों के विषय-कषाय के कर्ममल को दूर करके आत्मकल्याण की आराधना करें।

श्री नेमिप्रभु के केवलज्ञान कल्याणक के अवसर पर अमावस के दिन करोड़ों देवताओं के द्वारा समवसरण की रचना हुई थी। तब श्री नेमिप्रभु के शासन के तथा श्री गिरनारजी महातीर्थ की अधिष्ठायिका देवी के रुप में अंबिकादेवी की स्थापना भी अमावस के दिन ही हुई थी।

प्रति मास की अमावस के दिन गिरनारजी महातीर्थ की यात्रा करने अवश्य पधारो...

बालब्रह्मचारी श्री नेमिप्रभु के कल्याणक दिन

- **च्यवनकल्याणक** :- आसोज वद १२, शौरीपुरी
- **जन्मकल्याणक** :- श्रावण सुद ५, शौरीपुरी
- **दीक्षाकल्याणक** :- श्रावण सुद ६, सहसावन (गिरनार)
- **केवलज्ञानकल्याणक** :- भाद्रवा वद अमावस, सहसावन (गिरनार)
- **मोक्षकल्याणक** :- आषाढ सुद ८, पाँचवीं टूंक (गिरनार)

NOTES

सहसावन जिनालय

दीक्षा कल्याणक देरी

केवलज्ञान कल्याणक देरी

गिरनार की महिमा न्यारी...

दीक्षाकेवलं निवृति कल्याणत्रिकमनंततीर्थकृतां।
युगपदथैकमभवन्, स जयति गिरनारगिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-४)

जहाँ अनंते तीर्थंकर भगवंतों की दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इस प्रकार तीन कल्याणक एक साथ हुए है और अनंते तीर्थंकर का मोक्षकल्याणक हुआ है उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

स्वर्भूभूवस्थ चैत्ये वस्याकारं सुरासुरनरेशाः।
सं पूजयन्ति सततं, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-५)

स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यों में सुर, असुर और राजाओं जिसके आकार को हंमेशा पूजते हैं उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

अन्यस्था अपि भविनो, यद्ध्यानाद् घातिकर्ममलमुक्तः।
सेत्स्यंति भवचतुष्के, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥ (श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-१९)

दूसरे स्थानों में स्थित (अर्थात् गिरनार से दूर घर-दुकान-देश-विदेश कोई भी स्थान में बसे हुए) जो भव्यजीव गिरनार का ध्यान धरते हैं वे जीव घातीकर्म का मल दूर करके चार भव में मोक्ष प्राप्त करते हैं, उस गिरनार गिरिराज की जय हो।

अन्यत्रापि स्थितः प्राणी, ध्यायन्नेनं गिरीश्वरम्।
आगामिनि भवे भावी, चतुर्थे किल केवली ॥ (वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८५)

अन्य स्थान में (गिरनार के अलावा) रहे हुए जीव इस गिरनार गिरीश्वर का ध्यान धरे तो वह आगामी चार भव में केवलज्ञान पाकर मोक्षपद को प्राप्त करते हैं।

महातीर्थमिदं तेन, सर्वपापहरंस्मृतम्। शत्रुंजयगिरेरस्य, वन्दने सदृश फलम् ॥
विधिनास्य सुतीर्थस्य, सिद्धान्तोक्तेन भावतः। एकशोऽपिकृता यात्रा, दत्ते मुक्तिं भवान्तरात् ॥
(वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८०/८१)

गिरनार की महिमा अनेरी होने से इस गिरिवर को सर्व पाप को हरण करनेवाला कहा गया है और शत्रुंजय एवं गिरनार को वंदन करने में दोनों का समान फल कहा गया है।

इस गिरनार महातीर्थ की शास्त्रानुसार भावपूर्वक एक भी यात्रा की जाए तो वह भवांतर में मुक्तिपद को देनेवाली बनती है।

गिरनार तीर्थ की साल में कम से कम एक यात्रा करने का संकल्प अवश्य करें।

Created by : Kirit B. Vadecha © 23737600 / 98200 73336